



भारत का राजपत्र The Gazette of India

असाधारण

EXTRAORDINARY

भाग I—खण्ड 1

PART I—Section 1

प्राधिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 227]

नई दिल्ली, बुधवार, जून 24, 2009/आषाढ़ 3, 1931

No. 227]

NEW DELHI, WEDNESDAY, JUNE 24, 2009/ASADHA 3, 1931

वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय

(वाणिज्य विभाग)

(पाटनरोधी एवं संबद्ध शुल्क महानिदेशालय)

अधिसूचना

नई दिल्ली, 24 जून, 2009

अंतिम जांच परिणाम

विषय : चीन जन. गण. से ग्रेफाइट इलेक्ट्रोड्स के आयातों से संबंधित मामले की निर्णायक पाटनरोधी समीक्षा जाँच ।

सं. 15/7/2007-डीजीएडी.—1995 में यथासंशोधित सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 (जिसे एतदपश्चात् अधिनियम कहा गया है) और सीमाशुल्क टैरिफ (पाटित वस्तुओं की पहचान, उन पर पाटनरोधी शुल्क अथवा अतिरिक्त शुल्क का आंकलन एवं संग्रहण तथा क्षति निर्धारण) नियम, 1995 (जिसे एतदपश्चात् नियमावली कहा गया है) को ध्यान में रखते हुए :

पृष्ठभूमि

2. यतः निर्दिष्ट प्राधिकारी (जिन्हें एतदपश्चात् प्राधिकारी भी कहा गया है) ने 1995 में यथासंशोधित सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 (जिसे एतदपश्चात् अधिनियम कहा गया है) और सीमाशुल्क टैरिफ (पाटित वस्तुओं की पहचान, उन पर पाटनरोधी शुल्क अथवा अतिरिक्त शुल्क का आंकलन एवं संग्रहण तथा क्षति निर्धारण) नियम, 1995 (जिसे एतदपश्चात् नियमावली कहा गया है) को ध्यान में रखते हुए चीन जन.गण. से नॉर्मल पावर ग्रेड ग्रेफाइट इलेक्ट्रोड्स (इसकी हाई पावर ग्रेड किस्म सहित) तथा यूएसए, जर्मनी, फ्रांस, इटली, आस्ट्रिया, स्पेन तथा बेल्जियम से हाई पावर ग्रेड ग्रेफाइट इलेक्ट्रोड्स के आयातों की जांच की थी और उन पर दिनांक 27 मार्च, 1998 को अंतिम पाटनरोधी शुल्क लगाने की सिफारिश की थी । प्रथम निर्णायक समीक्षा में यूएसए, जर्मनी, फ्रांस, इटली, आस्ट्रिया, स्पेन तथा बेल्जियम से आयातों पर किसी शुल्क की सिफारिश नहीं की गई थी जबकि चीन जन.गण. से नॉर्मल पावर ग्रेड ग्रेफाइट इलेक्ट्रोड्स (इसकी हाई पावर ग्रेड किस्म सहित) के आयातों पर अप्रैल, 2003 में अंतिम पाटनरोधी शुल्क संस्तुत किया/लगाया गया था और अंतिम शुल्क हेतु सीमाशुल्क अधिसूचना दिनांक 7 जुलाई, 2003 को जारी की गई थी ।

3. वर्तमान आवेदन मै. ग्रेफाइट इंडिया लि. तथा मै. एचईजी लि. ने सीमाशुल्क टैरिफ (पाटित वस्तुओं की पहचान, उन पर पाटनरोधी शुल्क अथवा अतिरिक्त शुल्क का आंकलन एवं संग्रहण तथा क्षति निर्धारण) नियम, 1995 के नियम 23 के साथ पठित वर्ष 1995 में यथासंशोधित सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 की धारा 9 (5) के अंतर्गत प्रस्तुत किया है जिसमें चीन जन.गण. से नॉर्मल पावर ग्रेड ग्रेफाइट इलेक्ट्रोड्स (इसकी हाई पावर ग्रेड किस्म सहित) के आयातों पर पहले लगाए गए पाटनरोधी शुल्क की दूसरी निर्णायक समीक्षा करने का अनुरोध किया गया है। अपने आवेदन में आवेदक ने चीन जन.गण. के मूल के अथवा वहां से निर्यातित संबद्ध वस्तुओं पर पाटनरोधी शुल्क की समीक्षा की आवश्यकता का अनुरोध किया है। याचिकाकर्ताओं ने प्रथम दृष्टया साक्ष्य के साथ दावा किया है कि इन देशों से संबद्ध वस्तुओं पर लगाए गए पाटनरोधी शुल्क को समाप्त करने से पाटन और क्षति के जारी रहने अथवा उसकी पुनरावृत्ति होने की संभावना है और उन्होंने संबद्ध देश से संबद्ध वस्तुओं पर पाटनरोधी शुल्क को 5 वर्ष की अवधि के लिए जारी रखने और उसे बढ़ाने का अनुरोध किया है।

4. प्राधिकारी ने लागू पाटनरोधी शुल्क को जारी रखने की आवश्यकता की समीक्षा करने और यह ज्ञात करने कि क्या शुल्क समाप्त करने की परिणति पाटन एवं क्षति के जारी रहने अथवा उसकी पुनरावृत्ति में होगी, पाटनरोधी नियम के नियम 23 के साथ पठित अधिनियम, की धारा 9 (5) के अनुसरण में दिनांक 25 मार्च, 2008 की अधिसूचना द्वारा दूसरी निर्णायक समीक्षा शुरू की थी।

5. और यतः दिनांक 7 जुलाई, 2003 की अधिसूचना संख्या 101/2003-सी.शु. द्वारा अधिसूचित पाटनरोधी शुल्क को अधिनियम की धारा 9(क)(5) के अनुसार दिनांक 27 जून, 2008 की अधिसूचना सं. 81/2008 द्वारा दिनांक 6 जुलाई, 2009 तक बढ़ा दिया गया था।

प्रक्रिया

6. इस जांच के संबंध में निम्नलिखित प्रक्रिया का अनुपालन किया गया है :-

- i. समीक्षा जांच की शुरुआत के पश्चात प्राधिकारी ने नियम 6(4) के अनुसरण में घरेलू उद्योग, संबद्ध देश के सभी ज्ञात निर्यातकों/उत्पादकों तथा ज्ञात आयातकों को सूचित किया और उनसे प्रश्नावली के उत्तर तथा आवश्यक सूचना भेजने का अनुरोध किया।
- ii. जांच की शुरुआत के संबंध में नियम 6(2) के अनुसरण में संबद्ध देश के नई दिल्ली स्थित दूतावास को सूचित किया गया और उन्हें अपने देश के निर्यातकों/उत्पादकों को निर्धारित अवधि के भीतर प्रश्नावली के उत्तर भिजवाने की सलाह देने का अनुरोध किया गया।
- iii. प्राधिकारी ने संबंधित सूचना प्राप्त करने के लिए चीन जन.गण. के ज्ञात निर्यातकों को प्रश्नावलियां भिजवाईं।
- iv. उपर्युक्त अधिसूचना के उत्तर में चीन के केवल एक निर्यातक-मै. लियाओनिंग जियाजी मेटल्स एंड मिनरल्स कंपनी लि. ने प्रश्नावली का उत्तर प्रस्तुत किया।
- v. वर्तमान समीक्षा के प्रयोजनार्थ जांच की अवधि 1 अक्टूबर, 2006 से 30 सितंबर, 2007 (12 माह) है। तथापि, क्षति विश्लेषण में वर्ष 2004-05, 2005-06, 2006-07 तथा जांच अवधि को शामिल किया गया है।

- vi. वाणिज्यिक आसूचना एवं सांख्यिकी महानिदेशालय (डीजीसीआईएंडएस) से पिछले तीन वर्षों और जांच की अवधि के दौरान संबद्ध वस्तुओं के आयातों का ब्यौरा भिजवाने का अनुरोध किया गया ।
- vii. मै. ग्रेफाइट इंडिया लि. एवं मै. एचईजी लि. (संबद्ध वस्तुओं के घरेलू उत्पादक) ने क्षति की जांच हेतु अपनी लागत तथा क्षति से संबंधित सूचना प्रस्तुत की है ।
- viii. जांच शुरुआत अधिसूचना के उत्तर में किसी अन्य हितबद्ध पक्षकार ने कोई उत्तर प्रस्तुत नहीं किया है ।
- ix. प्राधिकारी ने विभिन्न हितबद्ध पक्षकारों द्वारा व्यक्त विचारों और किए गए निवेदनों पर वर्तमान जांच में जिस सीमा तक वे सुसंगत हैं, विचार किया है ।
- x. प्राधिकारी ने हितबद्ध पक्षकारों द्वारा प्रस्तुत साक्ष्य के अगोपनीय पाठ को एक सार्वजनिक फाइल के रूप में हितबद्ध पक्षकारों के निरीक्षणार्थ उपलब्ध कराया ।
- xi. प्राधिकारी ने घरेलू उद्योग द्वारा हुई क्षति के बारे में प्रस्तुत सूचना का सत्यापन किया है और सामान्यतया स्वीकृत लेखांकन सिद्धांतों (जीएएपी) के आधार पर उत्पादन की इष्टतम लागत एवं भारत में संबद्ध वस्तुओं के निर्माण एवं बिक्री की लागत ज्ञात करने एवं आवेदकों द्वारा प्रस्तुत सूचना का सत्यापन किया है ताकि यह अभिनिश्चित किया जा सके कि क्या पाटन मार्जिन से कमतर पाटनरोधी शुल्क घरेलू उद्योग को हुई क्षति को दूर करने के लिए पर्याप्त होगा ।
- xii. प्राधिकारी प्रतिवादी निर्यातक के संबंध में यह नोट करते हैं कि उसने केवल भारत को की गई अपनी निर्यात बिक्री की सूचना प्रस्तुत की है और उत्पादक से संबंधित सूचना प्रस्तुत नहीं की है । अतः इस निर्यातक के लिए सामान्य मूल्य एवं पाटन मार्जिन का निर्धारण नियमावली के अनुसार किया जाना है ।
- xiii. प्राधिकारी ने हितबद्ध पक्षकारों को मौखिक रूप से सुनने के लिए दिनांक 10 दिसंबर, 2008 को एक सार्वजनिक सुनवाई का आयोजन किया था, जिसमें घरेलू उद्योग तथा चीन के उपर्युक्त निर्यातक के प्रतिनिधियों ने भाग लिया था । सार्वजनिक सुनवाई में भाग लेने वाले पक्षकारों से मौखिक रूप से व्यक्त विचारों को लिखित रूप में प्रस्तुत करने का अनुरोध किया गया था । हितबद्ध पक्षकारों से प्राप्त लिखित निवेदनों पर जिस सीमा तक वे जांच से सुसंगत हैं और प्रमाण द्वारा समर्थित हैं, विचार किया गया है और उन्हें इस जांच में शामिल किया गया है ।
- xiv. विवरण में *** हितबद्ध पक्षकारों द्वारा गोपनीय आधार पर प्रस्तुत सूचना प्रदर्शित करता है जिसे प्राधिकारी ने नियमावली के अंतर्गत गोपनीय माना है ।

विचाराधीन उत्पाद एवं समान वस्तु घरेलू उद्योग के विचार

7. इस निर्णायक समीक्षा में शामिल उत्पाद नॉर्मल पावर ग्रेड (एनपीजी) ग्रेफाइट इलेक्ट्रोड्स और इसकी हाई पावर ग्रेड (एचपीजी) इलेक्ट्रोड्स किस्म, जिसका व्यास 8" से लेकर 24" सहित है (जिन्हें एतदपश्चात संबद्ध वस्तुएं कहा गया है) । चूंकि वर्तमान जांच एक समीक्षा जांच है अतः विचाराधीन उत्पाद वही है जिसे मूल जांच में परिभाषित किया गया है एवं तत्पश्चात पहले एसएसआर में इसे नॉर्मल पावर ग्रेड (एनपीजी) ग्रेफाइट

इलेक्ट्रोडस और इसकी हाई पावर ग्रेड (एचपीजी) इलेक्ट्रोडस किस्म, जिसका व्यास 8" से लेकर 24" सहित तक सीमित रखा गया है। संबद्ध वस्तुएं सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 के अध्याय-85 के सीमाशुल्क उप-शीर्ष सं. 85.45 तथा आईटीसी (एचएस) कोड 85451901 तथा 85451101 के अंतर्गत वर्गीकृत हैं। तथापि, यह वर्गीकरण केवल संकेतात्मक है और वर्तमान जांच के दायरे पर किसी भी प्रकार से बाध्यकारी नहीं है।

हितबद्ध पक्षकारों के विचार

8. विचाराधीन उत्पाद के संबंध में घरेलू उद्योग को छोड़कर किसी भी हितबद्ध पक्षकार ने कोई निवेदन प्रस्तुत नहीं किया है।

प्राधिकारी द्वारा जांच

9. प्राधिकारी ने घरेलू उद्योग द्वारा प्रस्तुत ब्यौरे की विस्तृत जांच की है। यह नोट किया जाता है कि वर्तमान जांच एक निर्णायक समीक्षा जांच है अतः समीक्षा जांच में विचाराधीन उत्पाद के दायरे में कोई परिवर्तन नहीं किया जाना चाहिए। अतः प्राधिकारी का अभिमत है कि वर्तमान विचाराधीन उत्पाद का दायरा वही है जो निर्णायक समीक्षा जांच के अंतर्गत विचाराधीन उत्पाद का था जिसे अप्रैल, 2003 में जारी अधिसूचना एवं तत्पश्चात दिनांक 7 जुलाई, 2003 को जारी सीमाशुल्क अधिसूचना सं. 101/2003-सी.शु. द्वारा अधिसूचित किया गया था।

घरेलू उद्योग की स्थिति

10. निर्णायक समीक्षा की शुरुआत मै. ग्रेफाइट इंडिया लि. तथा मै. एचईजी लि. द्वारा प्रस्तुत अनुरोध के आधार पर की गई है, जिनका देश में संबद्ध वस्तुओं के कुल विनिर्माण में 100% का योगदान है और वे भारत में संबद्ध वस्तुओं के एकमात्र उत्पादक हैं।

11. आवेदकों की स्थिति अथवा दर्जे के मुद्दे पर किसी भी हितबद्ध पक्षकार से कोई टिप्पणी प्राप्त नहीं हुई है। अतः प्राधिकारी का अभिमत है कि भारत में संबद्ध वस्तुओं के आवेदक उत्पादक वर्तमान जांच के प्रयोजनार्थ घरेलू उद्योग हैं।

पाटन का निर्धारण

पाटन का जारी रहना: सामान्य मूल्य, निर्यात कीमत तथा पाटन मार्जिन का निर्धारण

12. चीन जन.गण. के निर्यातक मै. लियाओनिंग जियाजी मेटल्स एंड मिनरल्स कंपनी लि. के अलावा, केवल एक अन्य हितबद्ध पक्षकार ने जांच शुरुआत अधिसूचना का उत्तर प्रस्तुत किया, जो रेल व्हील फैक्ट्री, बंगलौर है, जिन्होंने आयातक प्रश्नावली के रूप में उत्तर प्रस्तुत किया है। तथापि, इस उत्तर के अनुसार जांच अवधि के दौरान संबद्ध देश से किसी आयात की सूचना नहीं दी गई है। अतः जहां तक वर्तमान जांच का संबंध है, यह उत्तर प्रासंगिक नहीं है।

मै.लियाओनिंग जियाजी मेटल्स एंड मिनरल्स कंपनी लि.के विचार

13. केवल एक निर्यातक/विनिर्माता मै. लियाओनिंग जियाजी मेटल्स एंड मिनरल्स कंपनी लि. ने प्रश्नावली का उत्तर प्रस्तुत किया है। उन्होंने नकारात्मक पाटन का दावा किया है और जांच को समाप्त करने का अनुरोध

किया है। प्रश्नावली के उत्तर प्रस्तुत करते हुए प्रतिवादी निर्यातक ने आगे यह कहा है कि उन्होंने मै. चेगडू रोंगगुआंग कार्बन कंपनी लि. द्वारा अथवा स्वयं उक्त निर्यातक/उत्पादक द्वारा विनिर्मित विचाराधीन उत्पाद का निर्यात भारत को किया है।

घरेलू उद्योग के विचार

14. घरेलू उद्योग ने निम्नलिखित आधारों पर चीन जन.गण. के प्रतिवादी निर्यातक को असहयोगी घोषित करने का अनुरोध किया है।

- i. निर्यातक सूचना एवं प्राधिकार प्रमाण-पत्र प्रस्तुत करने में असफल रहा है।
- ii. निर्यातक, निर्यातक प्रश्नावली के उत्तरों में प्रतिबंधों का अनुपालन करने में असफल रहा है क्योंकि उसने सभी उत्पादकों के नाम प्रस्तुत नहीं किए हैं।
- iii. निर्यातक ने कंपनी की संरचना में हुए किसी परिवर्तन का ब्यौरा नहीं दिया है और संबद्ध वस्तुओं के उत्पादन और बिक्री में संलग्न किसी अन्य कंपनी के साथ शेयर होल्डरों के संबंध के बारे में जानकारी प्रस्तुत नहीं की है। यहां तक कि प्रधान संपर्क सूत्र के नाम एवं पते सहित उसके दूरभाष सं. तथा फैक्स नं. की सूचना भी प्रस्तुत नहीं की गई है।
- iv. निर्यातक ने जांच अवधि के दौरान निर्यातित उत्पाद का पूरा ब्यौरा प्रस्तुत नहीं किया है जो पाटन मार्जिन के निर्धारण में तुलना की दृष्टि से अत्यंत आवश्यक है।
- v. कैटलॉग तथा ब्रोशरों से संबंधित प्रश्नों का उत्तर नहीं दिया गया है और कार्यनीतिक कारणों से वितरण चैनलों से संबंधित सूचना प्रस्तुत नहीं की गई है। ऑर्डर देने से संबंधित सूचना तथा जरूरी बिक्री विचार-विमर्श प्रक्रिया की जानकारी भी नहीं दी गई है।
- vi. सामान्य मूल्य का दावा न करने का बहाना लेकर निर्यातक ने कोई वास्तविक सूचना जो कंपनी के कार्यचालन से प्रत्यक्ष रूप से संबंधित है, प्रस्तुत नहीं की है।
- vii. निर्यात बिक्री हेतु लाभ के निर्धारण के संबंध में कोई सूचना प्रस्तुत नहीं की गई है।
- viii. अन्य देशों को की गई निर्यात बिक्री का ब्यौरा प्रस्तुत नहीं किया गया है।
- ix. वर्तमान निर्यातक द्वारा निर्यातित वस्तुओं के उत्पादक ने प्रश्नावली का उत्तर प्रस्तुत नहीं किया है और संपूर्ण उत्तर के अभाव में इस निर्यातक को सहयोगी निर्यातक नहीं माना जा सकता। इसके अलावा, उन्होंने जांच शुरुआत अधिसूचना का उत्तर नहीं दिया है, अतः उनकी ओर से किए गए निवेदनों को रिकॉर्ड में नहीं लिया जा सकता।
- x. उत्तर का कोई समुचित अगोपनीय पाठ प्रस्तुत नहीं किया गया है अतः घरेलू उद्योग इस पर टिप्पणी करने की स्थिति में नहीं है और उनके द्वारा प्रस्तुत विवरण की अपर्याप्तता और गलतियों को उजागर करने की स्थिति में नहीं है।

15. घरेलू उद्योग के अनुसार नियम 7 में यह अधिदेशित है कि किसी पक्षकार द्वारा गोपनीय आधार पर प्रस्तुत सभी प्रकार की सूचना को गोपनीय नहीं माना जा सकता जब तक कि उसके साथ कारणों का उल्लेख न किया गया हो और प्राधिकारी द्वारा इसे एक अलग आदेश के माध्यम से गोपनीयता प्रदान करते हुए गोपनीय न माना गया हो। अन्य शब्दों में नियम 7 किसी भी प्रकार से यह अनुमति नहीं देता कि निर्यातक केवल न्यूनतम सूचना प्रस्तुत करके बच जाए; बल्कि यह निर्यातक पर पर्याप्त ब्यौरा देते हुए सूचना का सारांश प्रस्तुत करने का दायित्व सौंपता है ताकि गोपनीय आधार पर प्रस्तुत सूचना की विषय वस्तु उचित रूप से समझ में आ सके ताकि हितबद्ध पक्षकार प्राधिकारी को सही निर्धारण करने के उद्देश्य से उन्हें सहायता करने के लिए उनके समक्ष अपनी टिप्पणियां प्रस्तुत कर सके। कानून में आगे यह भी कहा गया है कि यदि प्राधिकारियों के अनुसार गोपनीयता का अनुरोध करना आवश्यक नहीं है और यदि सूचना प्रदान करने वाला उसे सार्वजनिक करने अथवा सामान्य

अथवा सारांश रूप में प्रकट करने हेतु उसे प्राधिकृत करने का इच्छुक नहीं है तो प्राधिकारी ऐसी सूचना पर ध्यान नहीं देंगे। यह भी निवेदन किया गया है कि नियम 7 के अनुसरण में निर्दिष्ट प्राधिकारी द्वारा गोपनीयता के दावे को स्वीकार करने के कारणों को दर्ज किया जाना अपेक्षित है।

16. उनके अनुसार सीस्टेट ने टाइलों के मामले में यह अभिमत स्पष्ट रूप से व्यक्त किया है कि निर्दिष्ट प्राधिकारी को गोपनीय आधार पर प्रस्तुत सूचना को केवल इसलिए गोपनीय माना जाना अपेक्षित नहीं है कि इसे निर्दिष्ट प्राधिकारी को गोपनीय आधार पर प्रस्तुत किया गया है और गोपनीयता के दावे की जांच के लिए इस संबंध में विस्तृत दिशा-निर्देश निर्धारित किए गए हैं। इसके अलावा यह अभिमत भी स्पष्ट रूप से व्यक्त किया गया है कि गोपनीयता मात्र पारदर्शिता से बचने अथवा प्रतिवादी पक्षकारों के समक्ष बाधा उत्पन्न करने का साधन नहीं है। यह निर्धारण किया गया है कि पारदर्शिता के प्रयोजनार्थ प्राधिकारी का भी यह दायित्व है कि वह पक्षकारों से अगोपनीय सारांश प्रस्तुत करने का अनुरोध करें, जिसमें पर्याप्त ब्यौरा प्रस्तुत किया गया हो ताकि गोपनीय आधार पर प्रस्तुत सूचना की विषय वस्तु उचित रूप से समझ में आ सके।

प्राधिकारी द्वारा जांच

17. प्राधिकारी ने घरेलू उद्योग द्वारा किए गए निवेदनों की विस्तृत जांच की है और वह नोट करते हैं कि उपर्युक्त निवेदन अधिकांशतः कानूनी स्वरूप के हैं। प्राधिकारी यह भी नोट करते हैं कि प्रतिवादी निर्यातक ने इस मामले से संबंधित सार्थक सूचना प्रस्तुत की है। निर्यातक ने स्वीकार किया है कि वह गैर-बाजार अर्थव्यवस्था की स्थितियों के अंतर्गत प्रचालित है अतः उसने एमईटी प्रश्नावली का उत्तर प्रस्तुत नहीं किया है। यदि उसने एमईटी प्रश्नावली का उत्तर प्रस्तुत किया भी होता तो उसके गैर-बाजार अर्थव्यवस्था स्थितियों के अंतर्गत प्रचालित होने की स्वीकृति के कारण इस संबंध में उसका निवेदन अप्रासंगिक होता, क्योंकि सामान्य मूल्य का निर्धारण सी एंड वी विधि से किया जाएगा जिसका ब्यौरा एतदपश्चात् प्रस्तुत किया गया है। निर्यात कीमत के निर्धारण हेतु जांच अवधि के दौरान भारत को किए गए निर्यातों का ब्यौरा भी आगे दिया गया है। जहां तक तीसरे देशों को किए गए निर्यातों का ब्यौरा प्रस्तुत न करने का संबंध है, प्राधिकारी नोट करते हैं कि यह उस स्थिति में अपेक्षित है जब मौजूदा पाटनरोधी शुल्क को वापस लेने अथवा उसे समाप्त करने की स्थिति में पाटन के जारी रहने अथवा उसकी पुनरावृत्ति की संभावना की जांच की जानी होती है। तथापि, प्रस्तुत मामले में प्राधिकारी नोट करते हैं कि पहली निर्णायक समीक्षा में संबद्ध प्रतिवादी निर्यातक पर कोई पाटनरोधी शुल्क नहीं लगाया गया था, अतः शुल्क वापस लेने अथवा समाप्त करने की अवधारणा का प्रश्न नहीं उठता। इसके अलावा, प्राधिकारी यह भी नोट करते हैं कि वर्तमान जांच के संबंध में संबद्ध निर्यातक ने प्रश्नावली का उत्तर प्रस्तुत किया है जो अलग-अलग पाटन माजिन के निर्धारण के प्रयोजनार्थ जांच अवधि के दौरान भारत को किए गए निर्यातों की मात्रा एवं मूल्य की सही तस्वीर प्रस्तुत करता है। उस सीमा तक प्राधिकारी यह मानते हैं कि इस मामले में उक्त निर्यातक द्वारा तीसरे देशों को किए गए निर्यातों की जांच की जानी अपेक्षित नहीं है और उनका यह अभिमत है कि वर्तमान जांच के प्रयोजनार्थ चीन जन.गण. का प्रतिवादी निर्यातक पूर्णतः सहयोग कर रहा है। जहां तक गोपनीयता के दावे का संबंध है, प्रतिवादी निर्यातक ने दिनांक 30 जून, 2008 के अपने पत्र के माध्यम से अनेक मुद्दे उठाए थे जिनसे घरेलू उद्योग को दिनांक 2 जुलाई, 2008 के पत्र के माध्यम से अवगत करा दिया गया था और उनसे टिप्पणियां प्रस्तुत करने का अनुरोध किया गया था। तथापि, घरेलू उद्योग ने इनका उत्तर नहीं दिया है अतः इन परिस्थितियों के अंतर्गत घरेलू उद्योग को इस संबंध में प्राधिकारी के निर्णय पर प्रश्न उठाने का कोई अधिकार नहीं है।

गुणवत्ता हेतु समायोजन

मै. लियाओनिंग जियाजी मेटल्स एंड मिनरल्स कंपनी लि. के विचार

18. प्रतिवादी निर्यातक ने दावा किया है कि प्राधिकारी ने मूल जांच में और प्रथम निर्णायक समीक्षा जांच में कीमत समायोजन करने की अनुमति प्रदान की थी। याचिकाकर्ता ने यह स्वीकार किया है कि विचाराधीन उत्पाद

अथवा समान वस्तु के बीच कोई अंतर नहीं है । यह भी तर्क प्रस्तुत किया गया है कि मूल जांच में याचिकाकर्ताओं ने स्वीकार किया था कि चीन के इलेक्ट्रोडों की खपत अपेक्षाकृत अधिक है और वर्तमान आवेदन अथवा प्रथम निर्णायक समीक्षा में कहीं भी यह दावा नहीं किया गया है कि इस स्थिति में कोई परिवर्तन हुआ है ।

19. यह निवेदन किया गया है कि उनके द्वारा आपूर्तित इलेक्ट्रोडों की गुणवत्ता की तुलना घरेलू तौर पर उत्पादित इलेक्ट्रोडों से नहीं की जा सकती क्योंकि घरेलू तौर पर उत्पादित इलेक्ट्रोड अत्यंत उच्च गुणवत्ता के हैं । उनके द्वारा निर्यातित कमतर गुणवत्ता वाली वस्तुओं के कारण घरेलू तौर पर उत्पादित इलेक्ट्रोडों की तुलना में खपत बढ़ गई है और इसके कारण भारतीय उत्पादक की संबद्ध गुणवत्ता लागत चीन के उत्पादकों की उत्पादन लागत की तुलना में अधिक हो गई है । उन्होंने यह भी तर्क प्रस्तुत किया है कि प्राधिकारी ने मूल जांच में समुचित साक्ष्य प्रस्तुत किए जाने के बाद इसे स्वीकार कर लिया है । इस तर्क के समर्थन में उन्होंने चीन के मूल के ग्रेफाइट इलेक्ट्रोडों के कम से कम तीन विभिन्न प्रयोक्ताओं की रिपोर्ट गोपनीय आधार पर रिकार्ड में प्रस्तुत की है । इस गोपनीय रिपोर्ट के अनुसार ये प्रयोक्ता घरेलू तौर पर उत्पादित इलेक्ट्रोडों और चीन के मूल के इलेक्ट्रोडों का प्रयोग कर रहे हैं और उन्होंने आगे यह कहा है कि घरेलू तौर पर खरीद किए गए इलेक्ट्रोडों की तुलना में गुणवत्ता, भौतिक एवं रासायनिक विशेषताओं की दृष्टि से चीन के इलेक्ट्रोड घटिया होते हैं और उनकी मशीनिंग भी संतोषजनक नहीं होती । उन्होंने यह भी पुष्टि की है कि उनके अनुभव के अनुसार लियाओनिंग जियाजी मेटल्स एंड मिनरल्स कंपनी द्वारा आपूर्तित चीन के इलेक्ट्रोडों की खपत घरेलू तौर पर उत्पादित इलेक्ट्रोडों की तुलना में लगभग 20% अधिक है ।

घरेलू उद्योग के विचार

20. घरेलू उद्योग ने विचाराधीन उत्पाद और भारतीय वस्तुओं की गुणवत्ता में अंतर के कारण समायोजन के दावे के बारे में आपत्ति की है । उन्होंने निवेदन किया है कि ऐसा समायोजन कानूनी अथवा तथ्यपरक संदर्भ में तभी स्वीकार किया जा सकता है जब उत्पादक/निर्यातक ऐसे दावे के प्रमाणस्वरूप परीक्षण रिपोर्ट आदि प्रस्तुत करे और ऐसे प्रमाण के बिना 20% समायोजन को स्वीकार करने का कोई औचित्य नहीं है । उन्होंने दावा किया है कि सार्वजनिक फाइल में ऐसा कोई उल्लेख नहीं है, जो यह दर्शाता हो कि निर्यातक ने निर्णायक समीक्षा कार्यवाही में गुणवत्ता के लिए समायोजन हेतु कोई सप्रमाण दावा प्रस्तुत किया हो, अतः कथित गुणवत्ता अथवा खपत में अंतर के कारण किसी भी प्रकार के समायोजन की अनुमति प्रदान नहीं की जा सकती । उनके निवेदन के अनुसार समायोजन के दावे का समस्त प्रमाण उस पक्षकार द्वारा प्रस्तुत किया जाना चाहिए, जो यह दावा करता है । उन्होंने आगे यह भी निवेदन किया है कि पैराग्राफ 6 के अंतर्गत तुलना के प्रयोजनार्थ किसी प्रकार के समायोजन की अनुमति गैर-बाजार अर्थव्यवस्था वाले देश पर लागू नहीं की जा सकती और ऐसे समायोजन की अनुमति मूल अंतिम जांच परिणाम के समय अनुमत्य थी क्योंकि गैर-बाजार अर्थव्यवस्था वाले देशों से संबंधित प्रावधान बाद में, अर्थात् वर्ष 1999 में शामिल किया गया था । उन्होंने आगे यह सुझाव दिया है कि रेल मंत्रालय के अंतर्गत सार्वजनिक क्षेत्र के एक उपक्रम अर्थात् रेल व्हील फैक्ट्री ने वर्ष 2006-07 और 2007-08 के दौरान चीन के इलेक्ट्रोडों और भारतीय ग्रेफाइट इलेक्ट्रोडों, दोनों का उपयोग किया है, अतः प्राधिकारी इलेक्ट्रोडों के खपत पैटर्न के बारे में उक्त यूनिट से सूचना प्राप्त कर सकते हैं । आगे यह भी निवेदन किया गया है कि प्रस्तुत मामले में सामान्य मूल्य का निर्धारण पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध के पैराग्राफ-7 के प्रावधान के अनुसार किया जाना है, क्योंकि एकमात्र प्रतिभागी निर्यातक ने भी यह दावा नहीं किया है कि अनुबंध-1 के पैराग्राफ 8.3 के अनुसार पैराग्राफ 1 से 6 में उल्लिखित सिद्धांत इस मामले में लागू होते हैं । उन्होंने यह भी तर्क प्रस्तुत किया है कि अनुबंध 1 के पैराग्राफ 1 से 6 के प्रावधान लागू नहीं होते हैं अतः इन पैराग्राफों के अंतर्गत किसी प्रकार के समायोजन का प्रश्न नहीं उठता ।

प्राधिकारी द्वारा जांच

21. प्राधिकारी ने मूल जांच तथा पहली निर्णायक समीक्षा जांच में अनुमत्य समायोजन के पक्ष एवं विपक्ष में प्रस्तुत तर्कों पर विचार किया है और नोट करते हैं कि निर्यातक ने यह दावा किया है कि पूर्ववर्ती तथा वर्तमान मामले के बीच स्थिति में कोई परिवर्तन नहीं हुआ है और उत्पाद की विशेषताएं यथावत हैं ।

22. अतः नियम 8 के अनुबंध 1 के पैरा 6(1) के अनुसार पाटन मार्जिन का निर्धारण करते समय निर्दिष्ट प्राधिकारी निर्यात कीमत एवं सामान्य मूल्य की उचित तुलना करेंगे । यह तुलना व्यापार के समान स्तर, सामान्यतः कारखाना-द्वार स्तर पर और यथासंभव इसी समय की गई बिक्री के संबंध में की जाएगी । प्रत्येक मामले में उसके गुण-दोषों के अनुसार कीमत अनुकूलता को प्रभावित करने वाले अंतरों पर विधिवत ध्यान दिया जाएगा, जिसमें बिक्री, कराधान, व्यापार के स्तर, मात्रा, भौतिक विशेषताओं की स्थितियों में अंतर और कोई अन्य अंतर भी शामिल है जो कीमत अनुकूलता को प्रभावित करने के लिए दर्शाया गया हो ।

23. प्राधिकारी नोट करते हैं कि खपत का मुद्दा उत्पाद की विशेषताओं से संबंधित है और तकनीकी मानदंडों में परिवर्तन न होने के कारण खपत के पैटर्न में कोई परिवर्तन नहीं होता । इसके अलावा, इस तर्क के विरोध में कोई तर्क प्रस्तुत नहीं किया गया है और निर्दिष्ट प्राधिकारी के ध्यान में ऐसा कोई प्रमाण नहीं लाया गया है कि खपत पैटर्न में किसी प्रकार का परिवर्तन हुआ है । प्राधिकारी इस तथ्य के मद्देनजर कि उत्पाद का दायरा और उसका विवरण एक समान है, यह मानते हैं कि वही समायोजन अनिवार्य है जिन पर मूल जांच में और पहली निर्णायक समीक्षा जांच में विचार किया गया था और नियम 2(घ) के अनुसार समान वस्तु की पुष्टि करते हैं ।

24. प्राधिकारी ने धरेलू उद्योग के सुझाव के अनुसार रेल व्हील फैक्ट्री से भी सूचना भेजने का अनुरोध किया था । तथापि, प्राधिकारी को इस संबंध में कोई उत्तर प्राप्त नहीं हुआ । जैसा कि पहले उल्लेख किया गया है, यह देखा गया है कि रेल व्हील फैक्ट्री ने वर्ष 2006-07 अथवा जांच अवधि के दौरान चीन जन.गण. से संबद्ध वस्तुओं का कोई आयात नहीं किया था, हालांकि उन्होंने वर्ष 2004-05 और 2005-06 के दौरान चीन जन.गण. से हुए कुछेक आयात की सूचना दी थी । तथापि, प्राधिकारी के लिए निर्णायक समीक्षा जांच करते समय पाटनरोधी शुल्क को जारी रखने अथवा समाप्त करने के पहलू की जांच करना अधिदेशित है और उन्हें तकनीकी ब्यौरे में संशोधन करने की आवश्यकता नहीं है, जिन पर मूल जांच में पहले ही विचार किया जा चुका है । इसके अलावा, धरेलू उद्योग के एक घटक द्वारा उपलब्ध कराई गई विस्तार संबंधी परियोजना रिपोर्ट में दिए गए ब्यौरे के अनुसार यह स्वीकार किया गया है कि चीन के विनिर्माताओं की विनिर्माण लागत सबसे कम है और वे घटिया गुणवत्ता वाले विचाराधीन उत्पाद का विनिर्माण करते हैं और उनके विनिर्माण संयंत्र कम लागत वाले स्थानों पर स्थित हैं । अतः उपर्युक्त के मद्देनजर और प्रतिवादी निर्यातक द्वारा गोपनीय आधार पर रिकॉर्ड में उपलब्ध कराए गए अन्य ब्यौरे/दस्तावेजों, जिसकी गोपनीयता की पुष्टि प्राधिकारी द्वारा की गई है, के अनुसार प्राधिकारी मूल जांच तथा पहली निर्णायक समीक्षा में दी गई अनुमति के अनुसार सभी संबद्ध मानदंडों के संबंध में 20% की सीमा तक समायोजन की अनुमति प्रदान करते हैं, जिससे पाटन मार्जिन एवं क्षति मार्जिन के निर्धारण की यथासंभव उचित तुलना की जा सके ।

सामान्य मूल्य

25. प्राधिकारी नोट करते हैं कि विगत तीन वर्षों में चीन जन.गण. को अन्य डब्ल्यूटीओ सदस्यों द्वारा पाटनरोधी जांचों में गैर-बाजार अर्थव्यवस्था वाला देश माना गया है । अतः पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध-1 के पैरा 8(2) के अनुसार उपर्युक्त नियमावली के अनुसरण में निर्यातक देश अथवा अलग-अलग निर्यातकों द्वारा उक्त अवधारणा के खंडन के अध्वधीन चीन जन.गण. को गैर-बाजार अर्थव्यवस्था वाला देश माना गया है ।

26. यथासंशोधित पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध 1 के पैराग्राफ 8 के अनुसार गैर-बाजार अर्थव्यवस्था के अनुमान का उस स्थिति में खंडन किया जा सकता है यदि चीन के निर्यातक (निर्यातकों) द्वारा पैराग्राफ 8 के उप पैरा(3) में विनिर्दिष्ट मानदंडों के आधार पर सूचना और पर्याप्त साक्ष्य उपलब्ध कराया जाता है और उसके विपरीत सिद्ध किया जाता है। चीन जन.गण. के संबद्ध वस्तु के निर्यातकों/उत्पादकों के लिए बाजार अर्थव्यवस्था संबंधी व्यवहार विषयक प्रश्नावली के उत्तर में पैरा 8 के उप पैरा (3) में उल्लिखित आवश्यक सूचना/पर्याप्त साक्ष्य प्रस्तुत करना अपेक्षित है ताकि निर्दिष्ट प्राधिकारी निम्नलिखित मापदंडों पर विचार कर सकें कि क्या :-

- (क) कच्ची सामग्रियों सहित कीमत; लागत और निविष्टि तथा श्रम लागत, उत्पादन, बिक्रियां और निवेश के बारे में चीन जन.गण. में संबंधित फर्मों का निर्णय ऐसे बाजारी संकेतों के अनुसार किया जाता है जिसमें आपूर्ति और मांग परिलक्षित होती है और इस बारे में राज्य का अधिक हस्तक्षेप नहीं होता है और क्या प्रमुख निविष्टियों की लागत में बाजार मूल्य पर्याप्त रूप से प्रदर्शित होते हैं;
- (ख) इस प्रकार की फर्मों की उत्पादन लागत और वित्तीय स्थिति विशेषकर परिसंपत्तियों के मूल्यहास, अन्य बड़े खातों, वस्तु विनिमय-व्यापार और ऋणों की प्रतिपूर्ति के माध्यम से भुगतान के संदर्भ में पूर्ववर्ती गैर-बाजार अर्थव्यवस्था वाली प्रणाली से हुई महत्वपूर्ण विकृतियों के अध्यधीन हैं;
- (ग) इस प्रकार की फर्मों दिवालियापन और संपत्ति कानूनों के अध्यधीन हैं जो फर्मों के प्रचालन की कानूनी निश्चितता और स्थिरता की गारंटी देते हैं; और
- (घ) विनिमय दर का परिवर्तन ब्याज की दर पर किया जाता है ।

27. चीन जन.गण. के एकमात्र प्रतिवादी निर्यातक ने बाजार अर्थव्यवस्था दर्जे का दावा नहीं किया है । दरअसल उन्होंने इस मुद्दे पर प्राधिकारी को कोई उत्तर नहीं दिया है और गैर-बाजार अर्थव्यवस्था स्थितियों के अंतर्गत प्रचालित होना स्वीकार किया है । अतः प्राधिकारी ने पाटन मार्जिन के निर्धारण के प्रयोजनार्थ संरचित सामान्य मूल्य को अपनाया है ।

28. सामान्य मूल्य घरेलू उद्योग के घरेलू उत्पादकों में से सर्वाधिक कार्यक्षम यूनिट के मानदंडों के अनुसार संरचित किया गया है । कच्ची सामग्री अर्थात् इलेक्ट्रोड के विनिर्माण में प्रयुक्त कैल्सिड पेट्रोलियम कोक की कीमतें घरेलू उद्योग की घरेलू खरीद के अनुसार ली गई हैं और निष्पल के विनिर्माण हेतु अपेक्षित कैल्सिड पेट्रोलियम कोक तथा पिच की कीमत डीजीसीआईएंडएस के आंकड़ों के अनुसार ली गई है । अन्य वस्तुओं की लागत सर्वाधिक कार्यक्षम घरेलू यूनिट के अनुसार ली गई है । उपर्युक्त विधि के अनुसार सामान्य मूल्य *** रूपए प्रति मी.ट. बनता है ।

निर्यात कीमत

घरेलू उद्योग के विचार

29. उन्होंने निवेदन किया है कि प्रतिवादी निर्यातक को सहयोगी निर्यातक नहीं माना जा सकता क्योंकि धारा 9 (5) के अंतर्गत संभावना का परीक्षण करने के लिए उक्त निर्यातक ने तीसरे देशों को किए गए निर्यातों से संबंधित सूचना निर्दिष्ट प्राधिकारी को प्रस्तुत नहीं की है । यह दावा किया गया है कि ऐसा करना हेल्डोर टॉप्सी बनाम निर्दिष्ट प्राधिकारी {2000(120)ईएलटी 11(एससी)} से संबंधित मामले में माननीय उच्चतम न्यायालय के निर्णय के सर्वथा विरुद्ध है । उन्होंने आगे यह भी निवेदन किया है कि उत्पादक ने जांच में सहयोग नहीं किया

है, अतः तथाकथित सहयोगी निर्यातक की सूचना को उसकी पूर्णता, वास्तविकता तथा विश्वसनीयता के सत्यापन के बिना स्वीकार नहीं किया जा सकता। यह भी निवेदन किया गया है कि सहभागी निर्यातक द्वारा पाटन की पुष्टि की गई है अतः यह निष्कर्ष नहीं निकाला जा सकता कि पूर्ववर्ती जांच के निष्कर्ष के आधार पर वह संबद्ध वस्तुओं का पाटन नहीं करेगा। उन्होंने पाटन की संभावना के विश्लेषण की मांग की है और यह कहा है कि यदि संबद्ध देश से आयात न भी किए गए हों तो प्राधिकारी पाटन की संभावना के विश्लेषण की अनिवार्यता से बच नहीं सकते।

प्राधिकारी द्वारा जांच

30: प्राधिकारी ने प्रतिवादी निर्यातक द्वारा प्रस्तुत उत्तर पर विचार किया है। प्रतिवादी निर्यातक द्वारा दिए गए उत्तर के अनुसार जांच अवधि के दौरान विचाराधीन उत्पाद का कुल निर्यात *** मी.टन का हुआ था, जो आईबीआईएस आंकड़ा स्रोत, जिस पर घरेलू उद्योग ने विश्वास किया है, में उपलब्ध आयातों की मात्रा अथवा प्राधिकारी द्वारा प्राप्त डीजीसीआईएंडएस के आंकड़ों की तुलना में काफी अधिक है। इसके अलावा, उक्त प्रतिवादी निर्यातक द्वारा किए गए निर्यात या तो उक्त उत्पादक/निर्यातक द्वारा विनिर्मित हैं अथवा मै. चेंगडू रोंगगुआंग कार्बन कंपनी लि. द्वारा विनिर्मित है। चेंगडू रोंगगुआंग कार्बन कंपनी लि. द्वारा विनिर्मित निर्यातों की मात्रा *** अम.डॉ. प्रति मी.ट. की औसत सीआईएफ कीमत पर *** मी.टन (निष्पल सहित) है। इसी प्रकार मै. लियाओनिंग जियायी मैटल्स एंड मिनरल्स द्वारा उत्पादित एवं उनके द्वारा निर्यातित निर्यातों की मात्रा *** मी.टन है, जिसमें *** अम.डॉ. प्रति मी.टन की औसत सीआईएफ कीमत पर निष्पल रहित विचाराधीन उत्पाद की *** मी.टन मात्रा तथा *** अम.डॉ. प्रति मी.टन की औसत सीआईएफ कीमत पर निष्पल सहित विचाराधीन उत्पाद की *** मी.टन मात्रा शामिल है। सौदे-वार निर्यात बिक्री (मौके पर किए गए सत्यापन के अभाव में) की तुलना नमूना आधार पर डीजीसीआईएंडएस के आंकड़ों में दर्शायी गई सौदेवार बिक्री से की गई है। प्रतिवादी निर्यातक के रिकॉर्ड का सत्यापन आवश्यक नहीं समझा गया क्योंकि प्राधिकारी द्वारा मांगे गए अलग-अलग बीजकों एवं बिक्री से संबंधित अन्य दस्तावेज प्रतिवादी निर्यातक द्वारा उपलब्ध कराए गए। इन रिकॉर्डों से उस विनिर्माता का ब्योरा भी ज्ञात हुआ, जिसमें संबद्ध वस्तुओं का विनिर्माण एवं तत्पश्चात् भारत को उनका निर्यात किया था। नमूना आधार पर इसकी तुलना डीजीसीआईएंडएस आंकड़ा स्रोत से की गई। इसके अलावा, निवल निर्यात कीमत की गणना हेतु याचिकाकर्ताओं द्वारा दावा किए गए समायोजन केवल *** अम.डॉ. प्रति मी.ट. हैं जबकि प्रतिवादी निर्यातक ने इससे अधिक समायोजन का दावा किया था जो *** अम.डॉ. से *** अम.डॉ. प्रति मी.टन था। इसके अलावा, न तो घरेलू उद्योग ने अपनी याचिका में, और न ही प्रतिवादी निर्यातक ने वेट की वापसी के लिए किसी कटौती का दावा किया था, तथापि इसे प्राधिकारी ने 4% का समायोजन माना है। कुल मिलाकर, याचिकाकर्ता द्वारा दावा किए गए *** अम.डॉ. प्रति मी.ट. के समायोजन की तुलना में प्राधिकारी द्वारा किया गया समायोजन *** अम.डॉ. प्रति मी.ट. अधिक है। अंतरदेशीय माल-भाड़ें, पत्तन प्रभारों, समुद्री मालभाड़े, समुद्री बीमे, ऋण लागत, बैंक प्रभारों तथा 4% के वेट (किया गया अतिरिक्त समायोजन, क्योंकि इसका दावा प्रतिवादी निर्यातक द्वारा नहीं किया गया था) के संबंध में दावा किए गए समायोजनों पर विचार करने के बाद संबद्ध निर्यातक हेतु कारखाना द्वार स्तर पर निवल औसत निर्यात कीमत इस प्रकार बनती है : (जांच अवधि के दौरान विनिमय दर-1 अम.डॉ. = 43.33 रुपए)

- क. मै. चेंगडू रोंगगुआंग कार्बन कंपनी लि. द्वारा विनिर्मित एवं मै. लियाओनिंग जियायी मैटल्स एंड मिनरल्स द्वारा निर्यातित (निष्पल सहित) *** अम.डॉ. (***) रुपए) प्रति मी.ट.
- ख. मै. लियाओनिंग जियायी मैटल्स एंड मिनरल्स द्वारा निर्यातित द्वारा विनिर्मित (निष्पल सहित) *** अम.डॉ. (***) रुपए) प्रति मी.ट. (भारित औसत कीमत ज्ञात करते समय 4% की निष्पल की लागत, जो घरेलू उद्योग के दावे के अनुसार इलेक्ट्रोड की कुल लागत की 4% होती है, को निर्यातित निष्पल रहित इलेक्ट्रोडों के एनईपी में जोड़ दिया गया है)

चीन जन.गण. के अन्य सभी निर्यातक

31. जहां तक चीन जन.गण. के अन्य सभी निर्यातकों का संबंध है, सबसे कम कीमत के निर्यात सौदे वाले सहयोगी निर्यातक के सौदे पर विचार किया गया है और सहयोगी निर्यातकों के संबंध में विचार किए गए समायोजन करते हुए निवल निर्यात कीमत *** अम.डॉ. (***) रूपए) प्रति मी.ट. बनती है ।

पाटन मार्जिन

उत्पादन	निर्यातक	सामान्य मूल्य (आईएनआर)	सामान्य मूल्य (समायोजित) (आईएनआर)	निर्यात कीमत (आईएनआर)	पाटन मार्जिन (आईएनआर)	पाटन मार्जिन %
मै. चेंगडू रोंगगुआंग कार्बन कंपनी लि., नं. 145, यीडुडाडाओ लोंगकुआन, जिला चेंगडू, चीन	मै. लियाओयांग कार्बन कंपनी लि., झोनजिन गांव, लियरपू टाउन, लियाओयांग केंद्री, लियाओनी, चीन	***	***	***	(***)	नकारात्मक
मै. लियाओयांग कार्बन कंपनी लि., झोनजिन गांव, लियरपू टाउन, लियाओयांग केंद्री, लियाओनी, चीन	मै. लियाओयांग कार्बन कंपनी लि., झोनजिन गांव, लियरपू टाउन, लियाओयांग केंद्री, लियाओनी, चीन	***	***	***	***	5-10%
कोई	चीन जन.गण. के अन्य सभी निर्यातक	***	***	***	***	25-30%

32. संबद्ध देशों से वर्तमान पाटन मार्जिन न्यूनतम से अधिक पाई गई हैं ।

पाटनरोधी शुल्क को वापस लिए जाने अथवा कम किए जाने की स्थिति में पाटन के जारी रहने अथवा उसकी पुनरावृत्ति की संभावना**घरेलू उद्योग के विचार**

33. निर्दिष्ट प्राधिकारी से यह जांच करने की अपेक्षा की जाती है कि क्या लागू पाटनरोधी शुल्क समाप्त किए जाने/वापस ले लिए जाने से पाटन एवं क्षति के जारी रहने अथवा उसकी पुनरावृत्ति की संभावना है ।

34. सीस्टेट ने विनाती आर्गेनिक्स लि. बनाम निर्दिष्ट प्राधिकारी के मामले में निम्नलिखित अभिमत व्यक्त किया है :-

"निर्दिष्ट प्राधिकारी तथा केन्द्रीय सरकार को यह राय कायम करनी चाहिए कि पाटनरोधी शुल्क समाप्त किए जाने से घरेलू उद्योग को भविष्य में कोई क्षति होने की संभावना निर्मित नहीं होगी ।"

35. इस प्रकार, धारा 9 (5) में पाटन एवं क्षति की पुनरावृत्ति अथवा उनके जारी रहने की संभाव्यता/संभावना के संबंध में अभिमत की अपेक्षा की गई है, न कि उनकी पुनरावृत्ति अथवा उनके जारी रहने के संबंध में किसी सकारात्मक निष्कर्ष की। पाटन एवं क्षति के जारी रहने अथवा पुनरावृत्ति की संभावना के बारे में अभिमत निर्मित करते समय संबद्ध देशों के विरुद्ध पहले से लागू पाटनरोधी शुल्कों के प्रभाव तथा असर तथा यदि शुल्कों को समाप्त कर दिया जाए तो निर्यातकों के संभावित व्यवहार का भी ध्यान रखा जाना आवश्यक है। निर्दिष्ट प्राधिकारी से यह भी जांच करने की अपेक्षा की जाती है कि क्या लागू पाटनरोधी शुल्क के बावजूद पाटन की प्रवृत्ति/व्यवहारगत तरीका जारी है। यहां यह उल्लेखनीय है कि यह समीक्षा करते समय कि संबद्ध देशों के निर्यातक/उत्पादक आसन निर्णायक समीक्षा का समय निकट होने के बारे में पूर्णतः अवगत हैं, अतः उनके कीमत निर्धारण की प्रवृत्ति पूर्वानुमानित/पूर्व निर्धारित होने की संभावना है, अतः वे संदिग्ध तथा अविश्वसनीय हैं। अन्य शब्दों में जांच की अवधि के दौरान उनका व्यवहार निर्णायक नहीं होता, क्योंकि समीक्षा, जो निर्णायक समीक्षा से संबंधित व्यापारिक सूचना के अनुसार की जाती है, के संबंध में पहले से ज्ञात होने के कारण पूर्वाग्रह से ग्रस्त हो सकती है।

36. इस पृष्ठभूमि में इस बात को मानना जरूरी है कि चीन जन.गण. के निर्यातकों ने पाटन जारी रखा था। आगे यह भी निवेदन किया गया है कि वर्तमान पाटन एवं क्षति इस बात का स्पष्ट एवं पर्याप्त सूचक है कि शुल्क समाप्त कर दिए जाने पर घरेलू उद्योग को क्षति जारी रहेगी, अतः प्राधिकारी के पास धारा 9 (5) के अनुसार यह राय निर्मित करने के लिए पर्याप्त सूचक उपलब्ध हैं कि पाटनरोधी शुल्क को समाप्त किए जाने/वापस ले लिए जाने की स्थिति में घरेलू उद्योग को पाटन एवं क्षति की पुनरावृत्ति होने अथवा उनके जारी रहने की संभावना है। इसके अलावा, यह भी तर्क प्रस्तुत किया गया है कि वर्तमान मामले के तथ्यों एवं परिस्थितियों को देखते हुए घरेलू उद्योग ने जांच अवधि के दौरान वर्तमान पाटन एवं क्षति से संबंधित सामग्री रिकॉर्ड में पहले ही उपलब्ध करा दी है, अतः यदि शुल्कों को बढ़ाया नहीं जाता तो पाटन एवं क्षति की संभावना आसन्न है।

37. जहां तक पाटन का संबंध है, यह निवेदन किया गया है कि जांच अवधि के दौरान चीन जन.गण. द्वारा संबद्ध वस्तुओं का पाटन किया जाना पाया गया है और पाटन मार्जिन अत्यधिक है। यह तर्क प्रस्तुत किया गया है कि चीन जन.गण. की पाटन मार्जिन न केवल अत्यधिक है बल्कि पाटनरोधी शुल्क लागू होने के बावजूद पाटन समाप्त नहीं हुआ है। यह आरोप लगाया गया है कि चीन जन.गण. के निर्यातक जांच अवधि से पूर्ववर्ती वर्षों के दौरान भी पाटन में लिप्त रहे हैं।

38. घरेलू उद्योग ने निवेदन किया है कि चीन जन.गण. संबद्ध वस्तुओं का पाटन न केवल भारत में, अपितु अन्य देशों में भी कर रहा है। घरेलू उद्योग ने यह भी दावा किया है कि संबद्ध देशों के उद्योगों के पास अतिरिक्त क्षमता उपलब्ध है और जहां तक संबद्ध वस्तुओं का संबंध है वे अनिवार्यतः निर्यातानुमुखी हैं। इस संबंध में उन्होंने यूएसए द्वारा मामला सं. ए-570-929 से संबंधित प्रारंभिक निर्धारण के उद्धरण प्रस्तुत किए हैं जिनके अनुसार "चीन से छोटे व्यास वाले ग्रेफाइट इलेक्ट्रोड्स के पाटित आयातों के कारण घरेलू उद्योग को वास्तविक क्षति का खतरा है।"

39. घरेलू उद्योग ने निवेदन किया है कि सरप्लस क्षमताओं के कारण एवं यूएसए में पाटनरोधी शुल्क की वर्तमान स्थिति के कारण यूएसए में उनका निर्यात बाजार घट गया है, अतः वह अपनी पहले से मौजूद सरप्लस क्षमताओं का उपयोग करने में असमर्थ हैं और इस वजह से संबद्ध वस्तुएं पाटित कीमतों पर भारत भेजे जाने की प्रबल संभावना है, यदि इस चरण में पाटनरोधी शुल्क वापस ले लिए जाते हैं।

प्रतिवादी निर्यातक मै. लियाओनिंग जियायी मेटल्स एंड मिनरल्स कंपनी लि.

40. यह निवेदन किया गया है कि पाटन मार्जिन अधिक दिखाने के प्रयास में याचिकाकर्ताओं ने सामान्य मूल्य को बढ़ाकर तथा निर्यात कीमतों को घटाकर बताया है। उनके अनुसार सामान्य मूल्य बढ़ाकर बताया गया है, जो केवल अनुभव पर आधारित है। इस तथ्य के मद्देनजर कि याचिका के अगोपनीय पाठ में उन्हें कोई वास्तविक सूचना उपलब्ध नहीं है, कि सामान्य मूल्य का निर्धारण किस प्रकार किया गया है। अतः उन्होंने अनुरोध किया है कि प्राधिकारी द्वारा इसकी जांच की जाए। जहां तक निर्यात कीमत का संबंध है, इसे घटाकर बताए जाने का दावा किया गया है और इनमें उन उत्पादों को भी शामिल किया गया है जो विचाराधीन उत्पाद नहीं हैं और याचिकाकर्ताओं ने आयात आंकड़ों में अनेक ऐसे सौदे सुनवाई के दौरान प्राधिकारी को दिखाए और यह बताया गया कि ये सौदे विचाराधीन उत्पाद से किसी भी प्रकार से संबद्ध नहीं हैं।

41. उन्होंने यह भी निवेदन किया है कि याचिका में निर्धारित अत्यधिक पाटन मार्जिन का एक अन्य कारण यह है कि उन्होंने अनेक मामलों में निष्पल तथा मशीनिंग रहित इलेक्ट्रोडों की आपूर्ति की है जबकि घरेलू उद्योग ने सदैव निष्पल तथा मशीन युक्त इलेक्ट्रोडों की आपूर्ति की है।

प्राधिकारी द्वारा जांच

42. जहां तक प्रतिवादी निर्यातक का संबंध है, पूर्ववर्ती निर्णायक समीक्षा जांच में उक्त प्रतिवादी निर्यातक द्वारा किए गए एवं मै. चेंगडू रोंगगुआंग कार्बन कंपनी लि. द्वारा उत्पादित अथवा स्वयं उक्त उत्पादक द्वारा उत्पादित वस्तुओं के निर्यात के मामले में कोई शुल्क नहीं लगाया गया था। जहां तक धारा 9 (5) के अनुसार ऐसे शुल्क को समाप्त किए जाने की स्थिति में पुनरावृत्ति की संभावना का संबंध है, चूंकि इस निर्यातक हेतु कोई शुल्क लागू नहीं है अतः समाप्त किए जाने की अवधारणा प्रासंगिक नहीं है। तथापि, प्रतिवादी निर्यातक द्वारा मै. चायना टीयानजिन जिगहाई कार्बन प्लांट (यह वर्तमान जांच में सहभागी नहीं है और उक्त उत्पादक द्वारा उत्पादित विचाराधीन उत्पाद का प्रतिवादी निर्यातक ने कोई निर्यात नहीं किया है) द्वारा विनिर्मित अथवा चीन जन.गण. के किसी अन्य विनिर्माता द्वारा विनिर्मित विचाराधीन उत्पाद के निर्यात पर विशिष्ट शुल्क लागू किया गया था। इस सीमा तक पाटन के जारी रहने की संभावना चीन जन.गण. के संबद्ध निर्यातक के संबंध में निर्धारित वास्तविक पाटन मार्जिन के समकक्ष मानी जा सकती है। प्राधिकारी नोट करते हैं कि निर्यातक ने अपने निवेदन में यह स्पष्ट रूप से कहा है कि वह उत्पादक/विनिर्माता के संयोजन के आधार पर विचाराधीन उत्पाद का निर्यात भारत को करता रहा है, जिस पर कोई शुल्क नहीं लगाया गया था। प्राधिकारी का निष्कर्ष है कि वह ऐसे उत्पादकों, जिनसे पाटनरोधी शुल्क का भुगतान अपेक्षित था, द्वारा विनिर्मित विचाराधीन उत्पाद का निर्यात करने की स्थिति में नहीं था। प्राधिकारी का यह भी अभिमत है कि चीन के निर्यातक द्वारा दिए गए उत्तर पर आधारित वर्तमान पाटन मार्जिन विश्वसनीय है जो उक्त प्रतिवादी निर्यातक द्वारा किए गए निर्यातों की मात्रा से स्पष्ट है।

43. जहां तक प्रतिवादी निर्यातक द्वारा तीसरे देशों को किए गए आयातों का संबंध है, जिसका उल्लेख घरेलू उद्योग द्वारा किया गया है, प्राधिकारी नोट करते हैं कि यह उस स्थिति में अपेक्षित है जहां मौजूदा पाटनरोधी शुल्क को वापस लेने अथवा उसे समाप्त किए जाने की स्थिति में पाटन के जारी रहने अथवा उसकी पुनरावृत्ति की संभावना की जांच की जानी हो। तथापि, प्रस्तुत मामले में प्राधिकारी नोट करते हैं कि प्रथम निर्णायक

समीक्षा में संबद्ध निर्यातक पर कोई पाटनरोधी शुल्क अधिरोपित नहीं किया गया था अतः इसे वापस लेने अथवा समाप्त करने की अवधारणा का कोई प्रश्न नहीं उठता । प्राधिकारी यह भी नोट करते हैं कि वर्तमान जांच के संबंध में संबद्ध निर्यातक ने प्रश्नावली का उत्तर प्रस्तुत किया है जिसमें अलग-अलग पाटन मार्जिन के निर्धारण हेतु जांच अवधि के दौरान भारत को किए गए निर्यातों की मात्रा एवं मूल्य की सही स्थिति का पता चलता है । उस सीमा तक प्राधिकारी का विचार है कि वर्तमान जांच में तीसरे देशों को किए गए निर्यातों की जांच की जानी अपेक्षित नहीं है । जहां तक चीन जन.गण. के विरुद्ध यूएसए द्वारा अधिरोपित पाटनरोधी शुल्क के प्रभाव का संबंध है, प्राधिकारी नोट करते हैं कि उक्त जांच में वर्णित उत्पाद "छोटे व्यास वाले ग्रेफाइट इलेक्ट्रोड" हैं और इसमें उक्त जांच में शामिल ग्रेफाइट इलेक्ट्रोडों का आकार अथवा किस्म विनिर्दिष्ट नहीं की गई है । इसके अलावा, प्राधिकारी चीन के विनिर्माताओं की विभिन्न वेबसाइटों से ग्रेफाइट इलेक्ट्रोडों के संबंध में प्राप्त सूचना के आधार पर यह नोट करते हैं कि चीन के इन विनिर्माताओं द्वारा विनिर्मित इलेक्ट्रोडों का आकार 2" से 24" का होता है । विचाराधीन उत्पाद के अलावा आकार में 2", 3", 4" तथा 6" शामिल हैं । प्राधिकारी नोट करते हैं कि 2" से 6" के आकार को छोटे व्यास वाला ग्रेफाइट इलेक्ट्रोड माना जा सकता है, अतः यह विचाराधीन उत्पाद के दायरे के बाहर है, इसलिए इसे वर्तमान जांच में संभावना के विश्लेषण के प्रयोजनार्थ प्रासंगिक नहीं माना जा सकता ।

44. जहां तक चीन जन.गण. के अन्य निर्यातकों, जिनके द्वारा प्रथम निर्णायक समीक्षा जांच के अनुसरण में पाटनरोधी शुल्क का भुगतान किया जाना अपेक्षित है, का संबंध है, प्राधिकारी नोट करते हैं कि डीजीसीआईएंडएस आंकड़ा स्रोत से प्राप्त आंकड़ों के विश्लेषण से ज्ञात होता है कि उसमें अक्टूबर, 2006-सितंबर, 2007 (जांच अवधि) के दौरान प्रदर्शित संबद्ध वस्तुओं के कुल आयात की मात्रा एकमात्र प्रतिवादी निर्यातक द्वारा घोषित निर्यातों की मात्रा से बहुत कम है । डीजीसीआईएंडएस आंकड़ा स्रोत के अनुसार जांच अवधि के दौरान भारत में किए गए आयात *** मी.टन के थे, जबकि एकमात्र प्रतिवादी निर्यातक ने प्राधिकारी को प्रस्तुत उत्तर के अनुसार जांच अवधि के दौरान *** मी.टन का निर्यात किया है । यह इस बात का द्योतक है कि चीन जन.गण. से किए गए निर्यातों के आंकड़े डीजीसीआईएंडएस आंकड़ा स्रोत में पूरी तरह शामिल नहीं हैं । घरेलू उद्योग ने अपनी याचिका में आईवीआईएस आंकड़ा स्रोत पर विश्वास किया है, जिसमें उन्होंने याचिका के अनुसार अपने विश्लेषण में गैर-विचाराधीन उत्पाद मदों को भी शामिल किया है जिसे घरेलू उद्योग के प्रतिनिधि ने सार्वजनिक सुनवाई के दौरान स्वीकार भी किया था । भारत में किए गए आयातों की मात्रा की उचित तुलना के उद्देश्य से प्राधिकारी ने वर्ल्ड ट्रेड एटलस आंकड़ा स्रोत से चीन से संबद्ध वस्तुओं के निर्यातों का ब्यौरा प्राप्त करने का प्रयास किया था । तथापि, प्राधिकारी नोट करते हैं कि डब्ल्यू टी ए के उक्त आंकड़ों में विचाराधीन उत्पाद का अलग-अलग ब्यौरा नहीं दिया गया है । उसमें उपलब्ध आंकड़े ग्रेफाइट इलेक्ट्रोड से संबंधित टैरिफ शीर्ष के अंतर्गत वर्गीकृत कार्बन इलेक्ट्रोडों से संबंधित हैं । इसके अलावा, ग्रेफाइट इलेक्ट्रोडों में से भी विचाराधीन उत्पाद में केवल एनपीजी तथा हाई पावर ग्रेड शामिल हैं, और इसे यूएचपी ग्रेड सहित अन्य किस्मों से अलग नहीं किया जा सकता, जो वर्तमान जांच के दायरे से बाहर है ।

45. इस प्रकार प्राधिकारी ने प्रतिवादी निर्यातकों द्वारा प्रदत्त आंकड़ों और डीजीसीआईएंडएस के आंकड़ा स्रोत पर विश्वास किया है और यह विचार किया है कि केवल प्रतिवादी निर्यातक द्वारा प्रदत्त आंकड़ों पर आधारित वास्तविक पाटन मार्जिन ही शुल्क समाप्त किए जाने अथवा वापस ले लिए जाने की स्थिति में चीन के निर्यातकों द्वारा विचाराधीन उत्पाद जिस कीमत पर भारत को किए जाने की संभावना है, उसका सूचक है ।

क्षति का आकलन**घरेलू उद्योग के विचार**

46. घरेलू उद्योग ने यह कहा है कि उसे क्षति होना जारी है क्योंकि चीन के निर्यातकों से आयात तथा पाटन समाप्त नहीं हुआ है । घरेलू उद्योग ने यह भी उल्लेख किया है कि घरेलू उद्योग के हित में संबद्ध देश के विरुद्ध पाटनरोधी शुल्क अगले 5 वर्ष की अवधि तक जारी रखा जाए ।

अन्य हितबद्ध पक्षों के विचार

47. चीन एक एकमात्र निर्यातक ने कहा है कि एनपीजी तथा यूएचपी इलेक्ट्रोड्स को क्षति निर्धारण के प्रयोजनार्थ अलग-अलग नहीं माना जा सकता । यह भी कहा है कि या तो क्षति जारी रही है अथवा क्षति की पुनरावृत्ति की संभावना है ।

48. यह निवेदन किया गया है कि या तो क्षति जारी है अथवा क्षति की पुनरावृत्ति की संभावना है; इसीलिए नियमावली में जारी रहने अथवा पुनरावृत्ति होने का प्रावधान है, न कि जारी रहने और पुनरावृत्ति होने का ।

49. विचाराधीन उत्पाद के आयातों पर पाटनरोधी शुल्क पिछले 10 वर्ष से अधिक अवधि से लागू है और इसके बाद भी घरेलू उद्योग ने क्षति जारी रहने का दावा किया है । एचईजी का दावा है कि वह विश्व में एक ही स्थान पर ग्रेफाइट इलेक्ट्रोड का सबसे बड़ा उत्पादक होने के मार्ग पर है । एचईजी द्वारा घोषित वित्तीय परिणाम दर्शाते हैं कि बिक्री के प्रतिशत के रूप में उनका लाभ 25-30% है जिसके कारण नियोजित पूंजी से आय 50% से अधिक है । यह निवेदन किया गया है कि उन्हें यह ज्ञात है कि ये वित्तीय परिणाम कंपनी द्वारा उत्पादित विभिन्न उत्पादों से संबंधित हैं । तथापि, कंपनी अधिकांशतः ग्रेफाइट इलेक्ट्रोड्स का उत्पादन कर रही है । अतः कंपनी द्वारा किया गया कोई भी दावा जो विचाराधीन उत्पाद में क्षति दर्शाता है, शेष उत्पादों (यूएचपी इलेक्ट्रोड्स) में असाधारण लाभप्रदता का संकेत करता है । यदि ऐसा है तो यह एनपीजी तथा यूएचपी इलेक्ट्रोड्स को शामिल करते हुए घरेलू उद्योग को हुई क्षति की जांच का एक अतिरिक्त कारण है । ऐसी स्थिति में जब अन्य देशों से कड़ी प्रतिस्पर्धा के बावजूद यूएचपी इलेक्ट्रोड्स का कार्य निष्पादन इतना उत्साहजनक है, यह इस बात का स्पष्ट द्योतक है कि इस्पात उत्पादन प्रौद्योगिकी के विकास के परिणामस्वरूप खपत के तरीके में आया परिवर्तन ही विचाराधीन उत्पाद का कथित अनुकूलतम से कम कीमत का वास्तविक कारण है ।

50. वर्तमान जांच के किसी भी पहलू के बारे में अन्य किसी हितबद्ध पक्षकार ने कोई निवेदन नहीं किया है ।

प्राधिकारी द्वारा जांच

51. निम्नलिखित पैराग्राफों में प्राधिकारी ने घरेलू उद्योग को हुई क्षति और पाटन व क्षति के जारी रहने/उनकी पुनरावृत्ति की संभावना की जांच की है ।

क्षति से संबंधित मानदंडों की जांच

52. प्राधिकारी ने घरेलू उद्योग द्वारा अपने निवेदनों में उठाए गए विभिन्न मुद्दों को नोट किया है और घरेलू उद्योग को क्षति के जारी रहने के मुद्दे की जांच प्राधिकारी के समक्ष प्रस्तुत मुद्दों के संदर्भ में की है। प्राधिकारी नोट करते हैं कि चीन जन.गण. से वर्तमान पाटन मार्जिन न्यूनतम से अधिक है। अतः प्राधिकारी संबद्ध देश से किए गए आयातों के कारण पाटन एवं क्षति की संभावना के मुद्दे की जांच शुरू करने से पूर्व घरेलू उद्योग को वर्तमान क्षति, यदि कोई हो, की जांच शुरू करते हैं।

53. पाटनरोधी करार के अनुच्छेद 3.1 तथा पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध-II में (क) पाटित आयातों की मात्रा और घरेलू बाजार में समान उत्पादों की कीमतों पर पाटित आयातों के प्रभाव तथा (ख) ऐसे उत्पादों के घरेलू उत्पादकों पर इन आयातों के परिणामी प्रभाव दोनों की वस्तुनिष्ठ जांच करने का प्रावधान है। जहां तक पाटित आयातों के मात्रात्मक प्रभाव का संबंध है, प्राधिकारी से यह जांच करने की अपेक्षा की जाती है कि क्या आयातों में निरपेक्ष रूप में अथवा आयातक सदस्य देश के उत्पादन अथवा खपत के सापेक्ष अत्यधिक वृद्धि हुई है। पाटित आयातों के कीमत प्रभाव के संबंध में प्राधिकारी से यह जांच करने की अपेक्षा की जाती है कि क्या आयातक सदस्य देश में समान उत्पाद कीमत की तुलना में पाटित आयातों के कारण अत्यधिक कीमत कटौती हुई है अथवा क्या ऐसे आयातों के प्रभाव का उद्देश्य कीमतों में उल्लेखनीय स्तर तक मंदी लाना है अथवा कीमत वृद्धि को रोकना है जो अन्यथा उल्लेखनीय स्तर तक हुई होती।

54. वर्तमान क्षति विश्लेषण के प्रयोजनार्थ प्राधिकारी ने घरेलू उद्योग पर संबद्ध देश से संबद्ध वस्तुओं के पाटित आयातों की मात्रा एवं कीमत प्रभाव की जांच की है और पाटन व क्षति के बीच कारणात्मक संबंध के अस्तित्व, यदि कोई हो, की जांच हेतु कीमतों तथा लाभप्रदता पर इसके प्रभाव की जांच की है जो निम्नानुसार है :-

पाटित आयातों का मात्रात्मक प्रभाव और घरेलू उद्योग पर प्रभाव

55. संबद्ध देश से पाटित आयातों की मात्रा के प्रभाव की जांच की गई है। घरेलू उद्योग ने मात्रात्मक विश्लेषण हेतु आईबीआईएस आंकड़ों पर विश्वास किया था। तथापि प्राधिकारी ने डीजीसीआईएंडएस से आंकड़े प्राप्त किए। प्राधिकारी नोट करते हैं कि विशेष रूप से जांच अवधि के दौरान, डीजीसीआईएंडएस के आंकड़ों द्वारा प्रदर्शित आयातों की मात्रा आईबीआईएस आंकड़ों में विचाराधीन उत्पाद के आयातों की मात्रा से काफी अधिक है। इसके अलावा प्राधिकारी नोट करते हैं कि आईबीआईएस अथवा डीजीसीआईएंडएस आंकड़ों में उल्लिखित मात्रा की तुलना में केवल प्रतिवादी निर्यातक ने जांच अवधि के दौरान भारत को काफी अधिक बिक्री किए जाने की सूचना दी है। अतः प्राधिकारी ने मात्रात्मक विश्लेषण हेतु डीजीसीआईएंडएस के आंकड़ों और प्रतिवादी निर्यातक के आंकड़ों पर विश्वास किया है।

संबद्ध देश से आयातों का हिस्सा (कुल आयातों का %, कुल मांग का % और घरेलू उत्पादन)

56. डीजीसीआईएंडएस के आयात आंकड़ों के अनुसार यह नोट किया गया है कि अन्य देशों से किए गए आयातों की तुलना में चीन जन.गण. से किए गए आयातों की कीमतों में व्यापक अंतर है। वास्तव में घरेलू उद्योग के घटकों में से एक के सत्यापन के दौरान यह देखा गया कि स्रोत दस्तावेजों में इलेक्ट्रोड की किस्मों

अर्थात् एनपीजी/एचपीजी/यूएचपी को प्रदर्शित नहीं किया गया था और उन्होंने तर्क दिया कि विभिन्न किस्मों को उन्हें दिए गए विशिष्ट कोड के आधार पर अभिज्ञात किया जा सकता है, जिसका ब्यौरा उनके डाटा बेस में उपलब्ध है और साथ ही यूनिट कीमत के आधार पर भी; जो विचाराधीन उत्पाद एनपीजी तथा एचपीजी के विपरीत गैर पीयूसी यूएचपी के मामले में काफी अधिक है। निम्नलिखित तालिका में इस इकाई कीमत कारक पर विचार करने पर ज्ञात होता है कि भारत में विचाराधीन उत्पाद का आयात केवल चीन जन.गण. से किया जा रहा है और अन्य देशों से केवल गैर विचाराधीन उत्पाद का आयात किया जा रहा है।

	2004-05		2005-06		2006-07		अक्टू.06-सितं07 (जांच अवधि)	
देश	मी.ट.	रू./मी.ट.	मी.ट.	रू./मी.ट.	मी.ट.	रू./मी.ट.	मी.ट.	रू./मी.ट.
चीन जन.गण.	***	88065	***	114151	***	84521	***	76138
दक्षिण अफ्रीका	289.900	141247	178.495	101234	694.000	155157	694.000	155157
यूएसए	0.909	258966	210.000	116091	2051.303	141861	411.480	148591
मैक्सिको	10.000	419909						
इंडोनेशिया					20.500	2308293		
जापान					590.003	162859	675.000	163694
कोरिया जन.गण.					0.017	112527706		
कोरिया डीपीआर			0.014	162857	0.002	2290000		
ऑस्ट्रेलिया					402.551	145564	289.429	144329
फ्रांस					97.000	153614	97.000	153614
जर्मनी	19.279	108053	0.065	4429462	105.001	36036	5.000	170806
इटली	0.215	525874	0.300	269417	51.368	70772		
स्पेन	108.000	207819	788.310	145629	3530.734	161235	2193.178	165780
अविनिर्दिष्ट					67.802	142086	323.844	123115
कुल	***	135055	***	128660	***	145700	***	141970

57. क्षति अवधि के संबंध में डीजीसीआईएंडएस के आंकड़ों के अनुसार आयातों की मात्रा तथा जांच अवधि के संबंध में प्रतिवादी निर्यातक द्वारा उपलब्ध कराए गए आंकड़ों के अनुसार आयातों की मात्रा का ब्यौरा निम्नलिखित तालिका में दर्शाया गया है :-

विवरण	इकाई	2004-05	2005-06	2006-07	अक्टू., 06 से सितं., 07(जांच अवधि)
चीन से आयात	मी.ट.	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	164	600	1062
कुल आयात	मी.ट.	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	164	600	1062
उत्पादन	मी.ट.	***	***	***	***
कुल उत्पादन के % के रूप में संबद्ध आयात	%	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	148	441	772

कुल घरेलू बिक्री	मी.ट.	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	106	109	107
कुल मांग	मी.ट.	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	107	119	127
निर्यात बिक्री	मी.ट.	***	***	***	***
प्रवृत्ति		100	118	184	190
उत्पादन के % के रूप में निर्यात बिक्री	%	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	106	132	139
कुल मांग के % के रूप में संबद्ध आयात	%	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	154	503	837
कुल आयात के % के रूप में घरेलू उद्योग का हिस्सा	%	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	99	91	84

58. उपर्युक्त तालिका से प्राधिकारी नोट करते हैं कि विचाराधीन उत्पाद का आयात केवल संबद्ध देश से ही किया जा रहा है। आंकड़ों से यह भी ज्ञात होता है कि आधार वर्ष 2004-05 से जांच अवधि के दौरान संबद्ध देश से आयातों में निरपेक्ष रूप से वृद्धि हुई है। साथ ही कुल मांग में संबद्ध देश से आयातों के सूचीबद्ध हिस्से का प्रतिशत आधार वर्ष में 100 से बढ़कर जांच अवधि में 837 हो गया है, जबकि घरेलू उद्योग का हिस्सा 2004-05 में 100 से घटकर जांच अवधि के दौरान 84 रह गया है। तथापि क्षति अवधि से जांच अवधि तक निर्यात कीमत की तुलना करने पर यह देखा गया कि आधार वर्ष 2004-05 में सूचीबद्ध 100 से उनकी निर्यात बिक्री बढ़कर जांच अवधि के दौरान 190 हो गई। उत्पादन के प्रतिशत के रूप में निर्यात बिक्री आधार वर्ष 2004-05 में ***% से बढ़कर जांच अवधि के दौरान ***% हो गई। अतः घरेलू उद्योग के घरेलू बाजार हिस्से में हुए नुकसान का कारण यह है कि उनका मुख्य ध्येय निर्यात आधार को बढ़ाना रहा है, और यह नुकसान संबद्ध देश से आयातों में हुई भारी वृद्धि के कारण नहीं हुआ है।

क्षमता, उत्पादन एवं क्षमता उपयोग

59. सत्यापित सूचना निम्नानुसार है :-

	यूओएम	2004-05	2005-06	2006-07	अक्टू., 06 से सित., 07(जांच अवधि)
आबद्ध क्षमता	मी.ट.	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	143	158	158
उत्पादन	मी.ट.	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	109	133	146
क्षमता उपयोग	%	***	***	***	***

प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	76	85	93
विचाराधीन उत्पाद का उत्पादन	मी.ट.	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	111	136	138
गैर-विचाराधीन उत्पाद का उत्पादन	मी.ट.	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	129	132	150

60. उपर्युक्त आंकड़ों से निम्नलिखित बातें स्पष्ट होती हैं :-

- (क) घरेलू उद्योग ने सर्वप्रथम 2005-06 में 43% का क्षमता वर्धन किया और फिर 2006-07 में 15% का।
- (ख) याचिकाकर्ता अपने संयंत्र का उपयोग संबद्ध वस्तुओं के उत्पादन तथा अन्य वस्तुओं के उत्पादन हेतु करने की स्थिति में है। ये अन्य वस्तुएं विचाराधीन उत्पाद के दायरे से बाहर हैं।
- (ग) संपूर्ण घरेलू उद्योग (विचाराधीन उत्पाद तथा गैर विचाराधीन उत्पाद एक ही संयंत्र में विनिर्मित किए जाते हैं) के उत्पादन में आधार वर्ष 2004-05 की तुलना में जांच अवधि के दौरान लगभग 46% की वृद्धि हुई है। जहां तक विचाराधीन उत्पाद का संबंध है, आधार वर्ष 2004-05 की तुलना में जांच अवधि के दौरान उत्पादन में 38% की वृद्धि हुई। इसके विपरीत इसी अवधि के दौरान गैर विचाराधीन उत्पाद के उत्पादन में 50% की वृद्धि हुई। इसके अलावा उत्पादन से संबंधित आंकड़े यह भी दर्शाते हैं कि जांच अवधि के दौरान इसके पूर्ववर्ती वर्ष 2006-07 की तुलना में विचाराधीन उत्पाद का उत्पादन लगभग वही रहा, जबकि गैर विचाराधीन उत्पाद का उत्पादन इस अवधि में लगभग 12% बढ़ गया। चूंकि विचाराधीन उत्पाद और गैर विचाराधीन उत्पाद का विनिर्माण एक ही संयंत्र में किया जा रहा है, अतः विचाराधीन उत्पाद के उत्पादन में कम वृद्धि का कारण घरेलू उद्योग की गैर विचाराधीन उत्पाद का अधिक उत्पादन करने की आंतरिक नीति को माना जा सकता है और विस्तार भी गैर विचाराधीन उत्पाद के उत्पादन के लिए किया गया है।
- (घ) जहां तक क्षमता उपयोग का संबंध है, यह नोट किया गया कि आधार वर्ष 2004-05 की तुलना में जांच अवधि के दौरान क्षमता उपयोग में 7% की गिरावट आई। क्षमता उपयोग में आई यह गिरावट सही स्थिति प्रस्तुत नहीं करती, क्योंकि आधार वर्ष 2004-05 की तुलना में जांच अवधि के दौरान संस्थापित क्षमता में 58% की वृद्धि की गई थी। प्राधिकारी नोट करते हैं कि पिछले तीन वर्षों के दौरान अर्थात् वर्ष 2005-06 से क्षमता वर्धनों के बावजूद घरेलू उद्योग के क्षमता उपयोग में निरंतर सुधार हुआ है। दरअसल जब विचाराधीन उत्पाद के उत्पादन को वर्ष 2004-05 में उपलब्ध मूल क्षमता के संदर्भ में देखा जाता है (क्षमता वर्धन केवल गैर विचाराधीन उत्पाद हेतु किया गया था), तो यह 2004-05 में 25% से बढ़कर जांच अवधि के दौरान 35% हो गया है।

61. उपर्युक्त के मद्देनजर प्राधिकारी का यह अभिमत है कि यद्यपि क्षति की जांच अवधि के दौरान आयातों में वृद्धि हुई है, तथापि, घरेलू उद्योग संबद्ध देश से आयातों की तुलना में घरेलू बाजार के समुचित हिस्से को अपने कब्जे में रखने और क्षति की जांच अवधि से जांच अवधि के दौरान अपनी पैठ बनाए रखने में समर्थ रहा है, और इसके साथ ही आयातित विचाराधीन उत्पाद के साथ प्रतिस्पर्धा करने में सक्षम रहा है तथा मांग में वृद्धि के अनुरूप उत्पादन बढ़ाता रहा है और विचाराधीन उत्पाद के निर्यात अथवा गैर विचाराधीन उत्पाद की क्षमता एवं उत्पादन में वृद्धि पर भी ध्यान केन्द्रित करता रहा है।

घरेलू उद्योग की बिक्री, मालसूची आदि

62. सत्यापित सूचना निम्नानुसार है :-

	माप की इकाई	2004-05	2005-06	2006-07	अक्टू., 06 से सित., 07(जांच अवधि)
प्रारंभिक स्टॉक	मी.ट.	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	16	17	54
उत्पादन	मी.ट.	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	111	136	138
कुल बिक्री	मी.ट.	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	109	132	132
घरेलू बिक्री	मी.ट.	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	106	109	107
निर्यात बिक्री	मी.ट.	***	***	***	***
प्रवृत्ति		100	118	183	190
उत्पादन के % के रूप में निर्यात बिक्री	%	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	106	134	138
कुल मांग	मी.ट.	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	107	119	127
अंतिम स्टॉक	मी.ट.	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	103	348	315

63. उपर्युक्त आंकड़े दर्शाते हैं कि घरेलू उद्योग की घरेलू बिक्री में निरंतर वृद्धि हुई है और आधार वर्ष 2004-05 की तुलना में जांच अवधि के दौरान यह वृद्धि लगभग 7% थी। तथापि जांच अवधि के दौरान इसके पूर्ववर्ती वर्ष 2006-07 की तुलना में 2% की मामूली गिरावट आई, और इसके साथ ही घरेलू उद्योग द्वारा किए गए निर्यातों में जांच अवधि के दौरान इसके पूर्ववर्ती वर्ष 2006-07 की तुलना में 7% की वृद्धि हुई। क्षति की जांच अवधि के दौरान जहां मांग में 27% की वृद्धि हुई, वहीं घरेलू बाजार में घरेलू उद्योग की बिक्री में केवल 7% की वृद्धि हुई। तथापि यह नोट किया जाता है कि आधार वर्ष 2004-05 की तुलना में जांच अवधि के दौरान घरेलू उद्योग की निर्यात बिक्री में 90% की बढ़ोत्तरी हुई। इसके अलावा, निर्यात बिक्री, जो आधार वर्ष 2004-05 में उनके उत्पादन की केवल ***% थी, बढ़कर जांच अवधि के दौरान कुल उत्पादन की ***% हो गई। अतः प्राधिकारी का अभिमत है कि घरेलू बाजार में विचाराधीन उत्पाद की बिक्री के बजाए घरेलू उद्योग का प्रमुख जोर निर्यात बाजार में पैठ बनाना था। प्राधिकारी नोट करते हैं कि प्रारंभिक स्टॉक की तुलना में जांच अवधि के दौरान अंतिम मालसूची का स्तर कमतर था, जिसका तात्पर्य है कि घरेलू उद्योग ने इस अवधि के दौरान अपने उत्पादन से अधिक बिक्री की है।

घरेलू उद्योग पर पाटित आयातों का कीमत प्रभाव

64. पाटित आयातों के कारण घरेलू उद्योग की कीमतों पर प्रभाव की जांच कीमत कटौती, कम कीमत पर बिक्री, कीमत ह्रास तथा कीमत अवमूल्यन, यदि कोई हो, के संदर्भ में की गई है। इस विश्लेषण के प्रयोजनार्थ

भारित औसत उत्पादन लागत, समायोजित भारित औसत निवल बिक्री प्राप्ति (एनएसआर) एवं घरेलू उद्योग की समायोजित क्षति रहित कीमत (एनआईपी) की तुलना संबद्ध देश से किए गए आयातों की पहुंच लागत से की गई।

कीमत कटौती और कम कीमत पर बिक्री का प्रभाव

65. कीमत कटौती और कम कीमत पर की गई बिक्री का ब्यौरा निम्नलिखित तालिका में दिया गया है :-

	इकाई	जांच अवधि (अक्टू. 06-सितं. 07)
पहुंच कीमत	रुपए प्रति मी.ट.	***
समायोजित पहुंच कीमत	रुपए प्रति मी.ट.	***
क्षति रहित कीमत	रुपए प्रति मी.ट.	***
कम कीमत पर बिक्री	रुपए प्रति मी.ट.	***
कम कीमत पर बिक्री का %		नकारात्मक (गोपनीयता के संदर्भ में मात्रात्मक ब्यौरा नहीं दिया जा सकता)

66. प्राधिकारी नोट करते हैं कि कम कीमत पर बिक्री नगण्य है, जब इसकी तुलना पहुंच मूल्य में 20% जोड़कर (घटिया गुणवत्ता के कारण, जैसा कि मूल तथा पूर्ववर्ती निर्णायक समीक्षा जांच में किया गया था) व्यापार के समान स्तर पर की जाती है। इसके अलावा, चीन जन.गण. से किया गया आयात घटिया गुणवत्ता की संबद्ध वस्तुओं का हुआ है, अतः कम कीमत पर बिक्री का निर्धारण नहीं किया जा सकता (जिसका विस्तृत ब्यौरा पूर्ववर्ती निर्णायक समीक्षा जांच में भी दिया गया है)।

पाटित आयातों का कीमत हास तथा कीमत अवमूल्यन प्रभाव

67. इस बात का निर्धारण करने के लिए कि क्या संबद्ध वस्तुओं के आयातों ने बाजार में घरेलू उद्योग की कीमतों, कीमत हास/कीमत अवमूल्यन किया, प्राधिकारी ने उत्पादन लागत, बिक्री कीमत और संबद्ध देश तथा अन्य देशों से किए गए आयातों की पहुंच कीमत पर विचार किया और इनकी जांच की। तत्संबंधी सूचना निम्नलिखित तालिका में दर्शाई गई है :-

विवरण	इकाई	2004-05	2005-06	2006-07	अक्टू., 06 - सितं., 07(जांच अवधि)
बिक्री की लागत	रु./मी.टन	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	98	119	117
बिक्री कीमत	रु./मी.टन	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	99	108	111
पहुंच कीमत	रु./मी.टन	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	130	96	87

68. उपर्युक्त आंकड़े दर्शाते हैं कि बिक्री कीमतें, बिक्री लागत की अपेक्षा सदैव अधिक रही हैं, जिसका तात्पर्य है कि घरेलू उद्योग समुचित लाभ अर्जित करने के अलावा अपनी लागत वसूल करने में भी समर्थ रहा है। क्षति अवधि के दौरान बिक्री कीमतों में हुई घट-बढ़ यह दर्शाती है कि जांच अवधि के दौरान आधार वर्ष की तुलना में

बिक्री कीमत 11% अधिक थी, जबकि इस अवधि में बिक्री की लागत में 17% की वृद्धि हुई। जांच अवधि के दौरान जहां वर्ष 2006-07 की तुलना में बिक्री की लागत में 2% की कमी आई, वहीं बिक्री कीमतों में 3% की बढ़ोत्तरी हुई। तथापि, आधार वर्ष 2004-05 की तुलना में जांच अवधि के दौरान संबद्ध देश से आयातों की पहुंच कीमत में 13% की गिरावट देखी गई है, जो अंशतः विगत वर्षों में सीमाशुल्क में की गई कमी के कारण मानी जा सकती है। पहुंच कीमत में इस गिरावट के बावजूद संबद्ध निर्यातक अपनी स्थिति मजबूत बनाए रखने और आयात कीमत से अधिक कीमत हासिल करने में सफल रहा अतः प्राधिकारी का अभिमत है कि संबद्ध देश से विचाराधीन उत्पाद के आयातों से घरेलू उद्योग को प्रतिस्पर्धा का सामना नहीं करना पड़ा है।

घरेलू उद्योग से संबंधित अन्य आर्थिक मानदंड

69. नियमावली के अनुबंध-II में अपेक्षा की गई है कि क्षति के निर्धारण में संबद्ध वस्तुओं के घरेलू उत्पादकों पर इन आयातों के परिणामी प्रभाव की वस्तुनिष्ठ जांच शामिल की जाएगी। इसके अलावा नियमावली के अनुबंध-II (iv) में निम्नलिखित प्रावधान है:-

"संबंधित घरेलू उद्योग पर पाटित आयातों के प्रभाव की जांच में बिक्री, लाभ, उत्पादन, बाजार हिस्सा, उत्पादकता, निवेश पर आय अथवा क्षमता उपयोग में स्वाभाविक और संभावित गिरावट सहित घरेलू उद्योग की स्थिति पर प्रभाव डालने वाले समस्त संगत आर्थिक कारकों और संकेतकों; घरेलू कीमत, पाटन मार्जिन की मात्रा को प्रभावित करने वाले कारकों; नकद प्रभाव, मालसूची, रोजगार, मजदूरी, वृद्धि, पूंजी निवेश जुटाने की क्षमता पर वास्तविक और संभावित ऋणात्मक प्रभावों का मूल्यांकन शामिल होगा।"

क्षति से संबंधित अन्य मानदंडों की जांच

70. अन्य आर्थिक मानदंडों, जो घरेलू उद्योग को हुई क्षति के अस्तित्व का संकेत कर सकते हैं, का विश्लेषण निम्नानुसार किया गया है :-

क. उत्पादकता : आधार वर्ष 2004-05 की तुलना में जांच अवधि के दौरान उत्पादकता में वृद्धि हुई है।

	इकाई	2004-05	2005-06	2006-07	अक्टू 06 से सितं07
उत्पादन	मी.ट.	***	***	***	***
प्रति दिवस उत्पादकता	मी.ट.	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	111	136	138
कर्मचारी	सं.	***	***	***	***
कर्मचारी/उत्पादन	मी.ट.	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	105	157	174

ख. रोजगार तथा मजदूरी : क्षति की जांच अवधि के दौरान कर्मचारियों की संख्या तथा उन्हें संदत्त मजदूरी में गिरावट आई है। परंतु कर्मचारियों की संख्या में कमी के मुकाबले मजदूरी में आई गिरावट बहुत कम है।

	इकाई	2004-05	2005-06	2006-07	अक्टू. 06 से सितं 07
कर्मचारी	सं.	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	106	87	79
कुल मजदूरी	लाख रुपए	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	107	106	97

ग. लाभप्रदता, निवेश से आय एवं नकद प्रवाह : क्षति की जांच अवधि के दौरान लाभप्रदता, निवेश से आय एवं नकद लाभ में गिरावट आई है, हालांकि जांच अवधि के दौरान इससे पूर्ववर्ती वर्ष 2006-07 की तुलना में इसी अवधि के दौरान चीन जन.गण. से आयातों में हुई भारी वृद्धि और पूर्ववर्ती वर्ष की तुलना में जांच अवधि के दौरान पहुंच कीमत कम रहने के बावजूद इन मानदंडों में उल्लेखनीय हुई थी ।

लाभ, नकद प्रवाह और लगाई गई पूंजी से आय

71. सत्यापित सूचना निम्नानुसार है :-

विवरण	इकाई	2004-05	2005-06	2006-07	अक्टू 06 से सितं 07 (जांच अवधि)
बिक्री की लागत	रु./मी.ट.	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	98	119	117
बिक्री कीमत	रु./मी.ट.	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	99	108	111
लाभ/हानि	रु./मी.ट.	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	105	56	83
घरेलू बिक्री पर कुल लाभ/हानि	लाख रुपए	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	111	61	89
नकद लाभ/हानि	लाख रुपए	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	116	75	93
पीबाआईटी	लाख रुपए	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	123	93	109
नियोजित पूंजी (पीयूसी)(घरेलू)	लाख रुपए	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	161	146	128
नियोजित पूंजी से आय	%	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	77	63	85

72. उपर्युक्त आंकड़े दर्शाते हैं कि मुख्य रूप से अधिक मूल्यहास, ब्याज लागत एवं मजदूरी के कारण घरेलू उद्योग के प्रति इकाई लाभ में क्षति की जांच अवधि के दौरान गिरावट आई, जबकि इसमें जांच अवधि के दौरान इसके पूर्ववर्ती वर्ष 2006-07 की तुलना में उल्लेखनीय वृद्धि हुई थी । यह भी नोट किया जाता है कि इसी अवधि के दौरान बिक्री कीमतों में भी उल्लेखनीय बढ़ोत्तरी हुई । यह भी नोट किया जाता है कि वर्ष 2004-05

की तुलना में वर्ष 2005-06 के दौरान प्रति इकाई बिक्री कीमत में मामूली गिरावट आई, हालांकि यह गिरावट बिक्री की लागत में आई कमी के समानुपाती नहीं है। तत्पश्चात वर्ष 2006-07 और जांच अवधि के दौरान प्रति इकाई बिक्री कीमत में उल्लेखनीय वृद्धि हुई। दरअसल, जांच अवधि के दौरान 2006-07 की तुलना में बिक्री लागत में कमी आने के बावजूद प्रति इकाई बिक्री कीमत प्राप्ति में बढ़ोत्तरी हुई। वर्ष 2004-05 की तुलना में जांच अवधि के दौरान घरेलू बिक्री पर कुल लाभ में गिरावट आई। तथापि, इसके पूर्ववर्ती वर्ष 2006-07 के संदर्भ में देखने पर इसमें उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। आधार वर्ष 2004-05 से 2006-07 तक नकद लाभ में कमी आई परंतु इसमें जांच अवधि के दौरान काफी वृद्धि हुई। यह भी नोट किया जाता है कि आधार क्षति अवधि 2004-05 की तुलना में जांच अवधि के दौरान पीबीआईटी में 9% की वृद्धि हुई। इसी प्रकार आधार क्षति अवधि 2004-05 की तुलना में जांच अवधि के दौरान नियोजित पूंजी में 28% की बढ़ोत्तरी हुई। तथापि, जांच अवधि के दौरान इससे पूर्ववर्ती वर्ष 2006-07 की तुलना में नियोजित पूंजी से आय में भारी वृद्धि हुई, हालांकि अपेक्षाकृत अधिक मूल्यह्रास, ब्याज लागत एवं मजदूरी के कारण आधार वर्ष 2004-05 की तुलना में इसमें कमी देखी गई। इस प्रकार यह देखा गया है कि क्षति के अस्तित्व से संबंधित साक्ष्य असंदिग्ध नहीं हैं क्योंकि घरेलू उद्योग के कार्य निष्पादन से संबंधित भौतिक एवं वित्तीय सूचक इस ओर संकेत नहीं करते। उत्पादन की मात्रा एवं घरेलू उद्योग की बिक्री जैसे भौतिक मानदंडों में उल्लेखनीय वृद्धि देखी गई है। विशिष्ट रूप से, वर्ष 2004-05 से जांच अवधि के दौरान चिराधीन उत्पाद के उत्पादन में 38% की वृद्धि हुई और घरेलू बिक्री में भी 7% की बढ़ोत्तरी हुई। निर्यात बाजार में हुई उल्लेखनीय बिक्री निःसंदेह निर्यात बाजार बढ़ने और संभवतः घरेलू उद्योग द्वारा घरेलू बिक्री के बजाए निर्यात बिक्री पर ध्यान देने के कारण हुई। इसके विपरीत वित्तीय दृष्टि से वर्ष 2004-05 की तुलना में 2006-07 के दौरान घरेलू उद्योग में गिरावट दर्ज की गई, जब संबद्ध देश से विचाराधीन उत्पाद केवल *** मी.टन सूचित किया गया था। तथापि जांच अवधि के दौरान जब 2006-07 की तुलना में आयात लगभग 77% बढ़कर *** मी.टन हो गए थे, घरेलू उद्योग की लाभप्रदता में उल्लेखनीय वृद्धि हुई, जो इस बात का द्योतक है कि आयातों और लाभप्रदता के बीच कोई संबंध नहीं है।

73. उपर्युक्त को ध्यान में रखते हुए प्राधिकारी इस निष्कर्ष पर पहुंचे हैं कि जांच अवधि के दौरान लाभ में आई गिरावट संबद्ध देशों से पाटित आयातों की उपस्थिति के कारण नहीं आई है।

पाटन एवं क्षति के जारी रहने की संभावना

74. घरेलू उद्योग ने अपने निवेदन में यह कहा है कि निर्णायक समीक्षा में पाटन को निष्प्रभावी करने के उद्देश्य से शुल्क को जारी रखने अथवा उसमें परिवर्तन करने अथवा उसे हटाने का निर्णय लेने के लिए प्राधिकारी से पाटन एवं क्षति के जारी रहने अथवा उनकी पुनरावृत्ति होने की संभावना की जांच करने की अपेक्षा की जाती है।

75. घरेलू उद्योग ने अन्य बातों के साथ यह निवेदन किया है कि :-

- i. कि संबद्ध देश के निर्यातक भारतीय बाजार में इस सामग्री का पाटन कर रहे हैं।
- ii. कि घरेलू उद्योग को क्षति अभी भी हो रही है और यदि शुल्क समाप्त कर दिया जाता है, तो घरेलू उद्योग को हुई क्षति की पुनरावृत्ति होगी अथवा इसमें वृद्धि होगी।
- iii. कि संबद्ध देश से आयातों की पहुंच कीमत उस कीमत से बहत कम है जो घरेलू उद्योग को मिलनी चाहिए।
- iv. कि पाटनरोधी शुल्क लागू होने के बावजूद चीन से आयातों की मात्रा में वृद्धि हुई है।
- v. कि उत्पादों के पास अत्यधिक अतिरिक्त क्षमताएं विद्यमान हैं।

प्राधिकारी द्वारा जांच

76. प्राधिकारी घरेलू उद्योग के उपर्युक्त निवेदनों को ध्यान में रखते हुए नोट करते हैं कि यद्यपि संबद्ध देश से पाटन होना सिद्ध हो गया है परंतु यह सिद्ध नहीं हुआ है कि घरेलू उद्योग को हुई क्षति चीन जन.गण. से किए गए इन आयातों के कारण हुई है। प्राधिकारी नोट करते हैं कि घरेलू उद्योग को घरेलू बिक्री पर जितनी प्राप्त होनी चाहिए, उससे उच्चतर कीमत प्राप्त हो रही है और उसने जांच अवधि के दौरान उत्पादित समस्त मात्रा की बिक्री की है। इसके अलावा, पूर्ववर्ती वर्ष 2006-07 की तुलना में उनकी लाभ मार्जिन में भी वृद्धि हुई है, जो इस तथ्य का द्योतक है कि उन्होंने घरेलू बिक्री की तुलना में निर्यात बिक्री पर अधिक ध्यान दिया है। इसके अलावा, समायोजित पहुंच मूल्य व्यापार के समान स्तर पर क्षति रहित कीमत (एनआईपी) के लगभग समान है। उस सीमा तक जब कम कीमत पर हो रही बिक्री नगण्य है, घरेलू उद्योग को हुई क्षति प्रमाणित नहीं है।

77. जहां तक यूएसए द्वारा चीन के आयातों पर प्रतिबंध लगाने संबंधी मुद्दे का प्रश्न है, जैसा कि घरेलू उद्योग ने आरोप लगाया है, प्राधिकारी नोट करते हैं कि घरेलू उद्योग ने अमेरीका के वाणिज्य विभाग के समक्ष दायर याचिका और अमेरीकी प्राधिकारियों के जांच परिणामों को आधार बनाया है। परंतु जिस बात को घरेलू उद्योग ने नजरअंदाज कर दिया है वह है - इन जांचों में विचाराधीन उत्पाद का दायरा। अमेरीका द्वारा चीन जन.गण. के विरुद्ध की गई जांचों में छोटे आकार के ग्रेफाइट इलेक्ट्रोड्स का संदर्भ दिया गया है और जांच के अंतर्गत इन इलेक्ट्रोड्स के विशिष्ट आकार अथवा किस्मों का उल्लेख नहीं किया गया है और यह नहीं बताया गया है कि क्या ये वर्तमान जांच के विचाराधीन उत्पाद से तुलनीय हैं। जहां तक संबद्ध देशों में सरप्लस क्षमताओं की उपलब्धता का संबंध है, घरेलू उद्योग ने इसका मात्रात्मक ब्यौरा प्रस्तुत नहीं किया है। अतः प्राधिकारी इस तथ्य को यथारूप स्वीकार कर लेने की स्थिति में नहीं हैं। प्राधिकारी को ऐसा कोई आंकड़ा स्रोत प्राप्त नहीं हुआ है जो घरेलू उद्योग के इस दावे की विश्वसनीयता को सिद्ध करता है। तथापि, प्राधिकारी ने घरेलू उद्योग के निवेदनों को नोट किया है और इस निष्कर्ष पर पहुंचे हैं कि संबद्ध देश में अतिरिक्त क्षमताएं उपलब्ध भी हों, तो इसका यह आशय नहीं निकाला जा सकता कि वे पाटित कीमतों पर इसका निर्यात भारत को करेंगे; जब चीन के मूल के विचाराधीन उत्पाद कुछ मात्रा में पाटित कीमतों पर घरेलू उद्योग को क्षति पहुंचाए बिना भारत में प्रवेश कर रही हैं।

क्षति का समग्र आकलन

कारणात्मक संबंध

घरेलू उद्योग द्वारा किए गए निवेदन

78. घरेलू उद्योग ने निवेदन किया है कि यह कानून द्वारा निर्णित स्थिति है कि निर्णायक समीक्षाओं में कारणात्मक संबंध का विश्लेषण किया जाना अपेक्षित नहीं है। इस संबंध में उन्होंने मैक्सिको के ऑयल कंपनी ट्युब्यूलर गुड्स मामले (डब्ल्यूटी/डीएस 282/एबी/आर दिनांक 2 नवंबर, 2005) में अपीलीय निकाय के निर्णय के निम्नलिखित उद्धरणों पर विश्वास किया है :-

"118. अतः हम मैक्सिको के साथ इस बात पर सहमत हैं कि इस मूलभूत सिद्धांत का उल्लेख गेट 1994 के अनुच्छेद VI तथा पाटनरोधी करार के विभिन्न उपबंधों में किया गया है। संयुक्त राज्य ने भी इस सिद्धांत पर प्रश्न नहीं उठाया है। तथापि, इसका तात्पर्य यह नहीं है कि पाटनरोधी करार के अनुच्छेद 11.3 के अंतर्गत की गई किसी "समीक्षा" में पाटन एवं क्षति के बीच कारण संबंध की पुष्टि नए सिरे से किए जाने की जरूरत है। इसका कारण यह है कि अनुच्छेद 11.3 में उल्लिखित "समीक्षा" मूल जांच से "भिन्न" प्रायोजन वाली एक "अलग" प्रक्रिया होती है।"

"119. अपीलीय निकाय ने यह रेखांकित किया है कि "किसी निर्णायक समीक्षा में किए जाने वाले निर्धारण का स्वरूप मूल जांच में किए जाने वाले निर्धारण से कुछ अनिवार्य पहलुओं में भिन्न होता है", और "अतः मूल जांच में लागू सिद्धांत समीक्षा प्रक्रिया में स्वतः लागू हो जाते हैं।"

"एक्स. जांच परिणाम एवं निष्कर्ष

219. इस रिपोर्ट में उल्लिखित कारणों से अपीलीय निकाय:

(क) कारणात्मक संबंध के बारे में:

(i) यह पाता है कि पाटनरोधी करार के अनुच्छेद 11.3 के अंतर्गत किसी निर्णायक समीक्षा निर्धारण में विधिक अनिवार्यता के रूप में संभावित पाटन और संभावित क्षति के बीच कारणात्मक संबंध की मौजूदगी की पुष्टि करने की कोई जरूरत नहीं है और इसलिए यूएसआईटीसी के लिए इस विवादाग्रस्त मुद्दे में निर्णायक समीक्षा में क्षति की संभावना का निर्धारण करने में किसी संबंध को प्रदर्शित करना अपेक्षित नहीं था "

79. घरेलू उद्योग ने यह भी निवेदन किया है कि निर्णायक समीक्षा जांच में कारणात्मक संबंध की अपेक्षा को लागू न किए जाने के और भी तकनीकी तथा तार्किक कारण हैं। यदि समीक्षा जांच अवधि के दौरान कोई आयात न भी किया गया हो तो पाटनरोधी शुल्क लागू किया जाना परिकल्पित है। इसके अलावा धारा 9 (5) के अंतर्गत शुल्कों की अवधि बढ़ाने का परीक्षण केवल इस बात की जांच करना है कि क्या शुल्क समाप्त कर दिए जाने की परिणति पाटन व क्षति जारी रहने अथवा उसकी पुनरावृत्ति में होगी।

प्राधिकारी द्वारा जांच

80. प्राधिकारी ने निर्णायक समीक्षा जांच में कारणात्मक संबंध के महत्व के संदर्भ में घरेलू उद्योग द्वारा किए गए निवेदनों की जांच की है। यहां यह उल्लेखनीय है कि प्राधिकारी के लिए शुल्क को जारी रखने की आवश्यकता की जांच करना अपेक्षित है : चाहे समीक्षा जांच अवधि के दौरान कोई आयात नहीं किया गया हो। धारा 9 (5) में ही इस अपेक्षा को अत्यंत स्पष्ट कर दिया गया है। अतः यद्यपि प्राधिकारी के लिए निर्णायक जांच में कारणात्मक संबंध में मानदंड का लागू करना अनिवार्य नहीं है, तथापि प्राधिकारी के लिए इस पहलू की जांच करना प्रतिबंधित नहीं है विशेष रूप से जब (क) पाटनरोधी शुल्क 10 वर्ष से अधिक अवधि से लागू हो, (ख) विचाराधीन उत्पाद की उल्लेखनीय मात्रा में भारतीय बाजार में प्रवेश कर रहे हों, (ग) इस अवधि में आयातों में वृद्धि हुई हो, और इस दौरान घरेलू उद्योग के कार्य निष्पादन में सुधार हुआ हो, (घ) वास्तविक रूप से विश्वसनीय पाटन मार्जिन का निर्धारण किया जा सकता हो, जैसा कि प्रस्तुत मामले में किया गया है। यह भी नोट किया जाता है कि डब्ल्यूटीओ ने अपनी अपीलीय निकाय रिपोर्ट में यह नहीं कहा है कि निर्णायक समीक्षा मामले में कारणात्मक संबंध की जांच नहीं की जानी चाहिए। इसके विपरीत इसमें कहा गया है कि निर्णायक समीक्षा मामले में कारणात्मक संबंध की जांच करना अत्यंत महत्वपूर्ण है। प्राधिकारी यह जांच करना उपर्युक्त समझते हैं कि आयातों ने घरेलू उद्योग के कार्य निष्पादन को किस प्रकार प्रभावित किया है। अतः प्राधिकारी कारणात्मक संबंध के पहलू की जांच की शुरुआत करते हैं, जिसका विवेचन निम्नलिखित पैराग्राफों में किया गया है।

अन्य देशों से मात्रा एवं कीमतें

81. प्राधिकारी का अभिमत है कि उपबंध आंकड़ों के अनुसार और उपर्युक्त पैराग्राफों में किए गए उल्लेख के अनुसार जांच अवधि के दौरान संबद्ध देश को छोड़कर अन्य देशों से विचाराधीन उत्पाद का कोई आयात नहीं किया गया।

मांग में संकुचन एवं/अथवा खपत के तरीके में परिवर्तन

82. प्राधिकारी का अभिमत है कि क्षति की जांच अवधि के दौरान मांग में कोई संकुचन नहीं हुआ है। आधार वर्ष की तुलना में क्षति की जांच अवधि के दौरान संबद्ध वस्तुओं की मांग में 27% की वृद्धि हुई है।

व्यापार प्रतिबंधात्मक पद्धतियां तथा विदेशी और घरेलू उत्पादकों के बीच प्रतिस्पर्धा

83. प्राधिकारी नोट करते हैं कि संबद्ध वस्तुओं के आयात पर किसी प्रकार का कोई प्रतिबंध नहीं है और वे देश में मुक्त रूप से आयात योग्य हैं। घरेलू उद्योग एक दूसरे से प्रतिस्पर्धा करता है और साथ ही संबद्ध वस्तुओं के समायोजित पहुंच मूल्यों से भी प्रतिस्पर्धा करता है। तथापि रिकॉर्ड में ऐसी कोई बात उपलब्ध नहीं है जो यह प्रमाणित करती हो कि घरेलू उद्योग की कीमत संबद्ध वस्तुओं की पहुंच कीमत द्वारा निर्धारित की जाती है, जो इस तथ्य से प्रमाणित होता है कि आधार वर्ष 2004-05 से जांच अवधि तक (वर्ष 2005-06 को छोड़कर) वास्तविक पहुंच कीमत में गिरावट की प्रवृत्ति देखी गई जबकि इसके विपरीत घरेलू उद्योग की वास्तविक निवल बिक्री प्राप्ति में आधार वर्ष से जांच अवधि तक निरंतर वृद्धि हुई।

प्रौद्योगिकी विकास एवं निर्यात निष्पादन

84. प्रौद्योगिकी घरेलू उद्योग को हुई क्षति का कारण होने के बारे में किसी भी हितबद्ध पक्षकार ने कोई मुद्दा नहीं उठाया है। जहां तक घरेलू उद्योग द्वारा किए गए निर्यातों का संबंध है, इस विश्लेषण के प्रयोजनार्थ प्राधिकारी ने निर्यात बिक्री से संबंधित आंकड़ों को अलग कर दिया है और प्राधिकारी नोट करते हैं कि घरेलू उद्योग अपने उत्पादन की उल्लेखनीय मात्रा का निर्यात करता रहा है और यह निर्यात बिक्री आधार वर्ष के दौरान उत्पादन की ***% थी, जो बढ़कर जांच अवधि के दौरान ***% हो गई। प्राधिकारी यह भी नोट करते हैं कि उनकी निर्यात बिक्री आधार वर्ष 2004-05 की तुलना में जांच अवधि के दौरान अत्यधिक बढ़कर 90% हो गई, जिसका अन्य बातों के साथ यह तात्पर्य है कि उनके प्रयास घरेलू बिक्री पर उतने केन्द्रित नहीं हैं जितने निर्यात बिक्री पर।

प्रकटीकरण विवरण पर की गई टिप्पणियां

85. प्रकटीकरण विवरण पर घरेलू उद्योग तथा प्रतिवादी निर्यातक की ओर से टिप्पणियां प्राप्त हुई हैं।

86. जहां तक घरेलू उद्योग का संबंध है, उनके द्वारा किए गए निवेदनों को सारांश रूप में निम्नानुसार प्रस्तुत किया जा सकता है।

- क. प्राधिकारी ने नए निवेशों को समायोजित किया है। विचाराधीन उत्पाद तथा गैर-विचाराधीन उत्पाद का उत्पादन और उत्पादन में वृद्धि अनुपातिक होनी चाहिए। जांच की अवधि के दौरान विचाराधीन उत्पाद के उत्पादन में 38% की वृद्धि हुई है। विचाराधीन उत्पाद तथा गैर-विचाराधीन उत्पाद की सामान्य लागत अनुपातिक होनी चाहिए और जांच अवधि में संशोधन किया जाना चाहिए।
- ख. क्षतिरहित कीमत का निर्धारण करते समय उप-उत्पादों की बिक्री हेतु ऋण समायोजन पर ध्यान नहीं दिया गया है। उत्पादों की बिक्री के संबंध में परिकलन में की गई त्रुटियों को अब सुधार दिया गया है और प्राधिकारी द्वारा क्षतिरहित कीमत के निर्धारण में संशोधित आंकड़ों का प्रयोग किया जाना चाहिए।
- ग. संशोधित प्रकटीकरण विवरण में पाटन मार्जिन की गणना हेतु चीन के सभी निर्यातकों के सामान्य मूल्य पर 20% का समायोजन करने का प्रस्ताव किया गया है। किसी भी निर्यातक ने अलग से सामान्य मूल्य का दावा नहीं किया है। इसके अलावा, गणना में प्रयुक्त मात्रात्मक निर्धारण की विधि प्रकट नहीं की गई है। इस संबंध में पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध-1 के पैरा 7 का संदर्भ दिया गया है।
- घ. चीन की वस्तुओं के 3 प्रयोक्ताओं द्वारा प्रस्तुत अगोपनीय पाठ उपलब्ध नहीं कराया गया है।
- ङ. निर्यातक को असहयोगी घोषित किया जाना चाहिए क्योंकि उसने तीसरे देशों को किए गए निर्यातों से संबंधित सूचना उपलब्ध नहीं कराई है। इस संबंध में हेल्लोर टोप्सो मामले के संबंध में उच्चतम न्यायालय के निर्णय का उल्लेख किया गया है।
- च. यूएसए के जांच परिणाम में परिभाषित उत्पाद का आकार 16" (400 मि.मी.) तक है। घरेलू बाजार में अधिकांश बिक्री (लगभग 71%) 8-16" की होती है। यदि पाटनरोधी शुल्क वापस ले लिया जाता है तो चीन से यूएसए को किए जाने वाले पाटित आयात भारत को किए जाएंगे।
- छ. चीन के उत्पादकों के पास सरप्लस क्षमता मौजूद है और चूंकि अमेरिका ने आयात पर प्रतिबंध लगाया है, अतः पाटनरोधी शुल्क वापस ले लिए जाने की स्थिति में भारत में पाटन बढ़ जाएगा।
- ज. संभावना विश्लेषण का निर्धारण त्रुटिपूर्ण है। संभावना विश्लेषण अपूर्ण तथा भ्रामक है।
- झ. घरेलू उद्योग की कुल बिक्री की 56% घरेलू बाजार में की गई है। यह सही नहीं है कि निर्यात बाजार पर ध्यान केन्द्रित किया गया है।
- ञ. निष्कर्ष भ्रामक और काल्पनिक है - क्षमता विस्तार केवल गैर-विचाराधीन उत्पादों के संबंध में किया गया है।
- ट. घरेलू उद्योग की मालसूचियों में 300% से अधिक की वृद्धि हुई है।
- ठ. कम कीमत पर बिक्री और कीमत कटौती क्षतिरहित कीमत तथा निवल बिक्री प्राप्ति में 20% के समायोजन के बाद दर्शायी गई है।

- ड. घरेलू उद्योग की कीमत का अवमूल्यन किया गया है ।
- ढ. चीन के पाटित आयातों के दबाव के कारण कोई वांछित प्राप्ति नहीं ।
- ण. उप उत्पादों की बिक्री के संबंध में ऋण समायोजन पर विचार नहीं किया गया है ।
- त. जांच अवधि के दौरान निवेश से आय, लाभप्रदता, नकद प्रवाह, बाजार हिस्से आदि में गिरावट आई ।
- थ. प्राधिकारी के दिनांक 2 जुलाई, 2008 के पत्र का उत्तर दिनांक 14 जुलाई, 2008 के पत्र के माध्यम से दिया जा चुका है । जहां तक गोपनीयता का संबंध है, केवल लागत एवं कीमत निर्धारण से संबंधित सूचना को गोपनीय रखा गया है । निर्यातक ने मात्रा से संबंधित सूचना का सारांश प्रस्तुत नहीं किया है ।

प्राधिकारी द्वारा जांच

- क. घरेलू उद्योग के एक संघटक ने सत्यापन दल के दौरे के समय उन्होंने स्वीकार किया था कि गैर-पीयूसी यूएचपी अधिक कार्यक्षम हैं और इनकी मांग भी अपेक्षाकृत अधिक है । यह भी स्वीकार किया गया था कि इस्पात संयंत्रों में स्थापित सभी नई भट्टियों में बेहतर उत्पादकता के लिए यूएचपी किस्म को प्रयुक्त किया जाता है और विचाराधीन उत्पाद अर्थात् एनपीजी तथा एचपीजी का प्रयोग अनिवार्यतः पुराने संयंत्रों में किया जाता है, जिनमें अधिक कार्यक्षम यूएचपी, जो गैर-पीयूसी किस्म है का प्रयोग नहीं किया जाता । इस सीमा तक विस्तार अनिवार्यतः गैर-पीयूसी यूएचपी किस्म हेतु किया गया है और यह विचाराधीन उत्पाद से किसी भी तरह संबंधित नहीं है । इसके अलावा, क्षमता और इसकी तुलना में उत्पादन से संबंधित वास्तविक आंकड़ों द्वारा भी यह सिद्ध हो गया है । जब संयंत्र की क्षमता *** मी.टन थी तब विचाराधीन उत्पाद का उत्पादन *** मी.टन था, जबकि क्षमता बढ़ाकर *** मी.टन कर दिए जाने पर विचाराधीन उत्पाद का उत्पादन (*** मी.टन) मूलतः उपलब्ध वास्तविक क्षमता से बहुत कम रहा । इस सीमा तक विचाराधीन उत्पाद के प्रयोजनार्थ विस्तार अपेक्षित नहीं था । इसके विपरीत गैर-पीयूसी उत्पादन *** मी.टन की मूलतः संस्थापित क्षमता की तुलना में जांच अवधि के दौरान *** मी.टन का था, अतः प्राधिकारी का निष्कर्ष है कि अतिरिक्त संस्थापित क्षमता गैर-पीयूसी के उत्पादन के लिए जरूरी हो गई थी । घरेलू उद्योग के अलग-अलग घटक द्वारा प्रस्तुत ब्यौरे के अनुसार, मै. एचपीजी लि. की परियोजना रिपोर्ट के अध्ययन से विचाराधीन उत्पाद तथा गैर-पीयूसी की क्षमता एवं उत्पादन के अनुसार यह स्पष्ट हो गया है कि क्षमता विस्तार हेतु किया गया पूंजी परिसंपत्ति व्यय अल्ट्रा हाई पावर ग्रेड (यूएचपी) अर्थात् गैर-पीयूसी से संबंधित था । इसके अलावा, मै. जीआईएल-दुर्गापुर के मामले में विचाराधीन उत्पाद का उत्पादन वर्ष 2004-05 में 34% से घटकर जांच अवधि के दौरान 12% रह गया, जबकि इसी अवधि में गैर-पीयूसी का उत्पादन 66% से बढ़कर 88% हो गया । अतः क्षति रहित कीमत को अंतिम रूप देते समय पूंजीगत व्यय तथा तत्पश्चात हुए मूल्यह्रास पर विचार नहीं किया गया है ।

ख. सत्यापन के दौरान यह बात उभरकर सामने आई कि विचाराधीन उत्पाद के विनिर्माण के दौरान स्कैप/अपशिष्ट/उप-उत्पाद सृजित होते हैं और क्षति रहित कीमत (एनआईपी) की गणना हेतु वी.मेहता एंड कंपनी, सनदी लेखाकार द्वारा दिनांक 16.1.2009 को विधिवत प्रमाणित प्रपत्र सी-I तथा सी-II के आधार पर स्कैप/अपशिष्ट/उप-उत्पाद की बिक्री पर भी विचार किया गया है ।

ग-घ इन निवेदनों में पहले किए गए निवेदनों को दोहराया गया है और इनका विवेचन प्रकटीकरण विवरण में यथास्थान किया जा चुका है । घरेलू उद्योग ने प्रकटीकरण विवरण संबंधी अपनी टिप्पणियों में इस तथ्य को आसानी से नजरअंदाज करने का प्रयास किया है और इस बात का विशिष्ट उल्लेख किया गया है कि समीक्षा में प्राधिकारी से पुनरावृत्ति एवं जारी रहने संबंधी पहलू की जांच की जानी अपेक्षित है और तकनीकी पहलुओं की नए सिरे से जांच करने के संबंध में कोई सांविधिक प्रावधान नहीं है, जब इसका विवेचन पहले ही किया जा चुका है और मूल समीक्षा तथा प्रथम निर्णायक समीक्षा में घरेलू उद्योग ने इसे स्वीकार कर लिया है । उसने प्रकटीकरण विवरण में घरेलू उद्योग के घटकों में से एक घटक द्वारा विस्तार परियोजना रिपोर्ट में इस बात की स्वीकृति को भी नजरअंदाज कर दिया है कि चीन के इलेक्ट्रोडों की गुणवत्ता घटिया है । जहां तक उनके इस आरोप का संबंध है कि उनके निवेदन पर विचार नहीं किया गया है और प्रकटीकरण विवरण को संशोधित नहीं किया गया है, यह एक आधारहीन बयान है, क्योंकि उन्होंने यह उल्लेख नहीं किया है कि उनके किस विशिष्ट निवेदन का समाधान प्रकटीकरण विवरण में नहीं किया गया है । घरेलू उद्योग ने इस बात का खंडन नहीं किया है कि वर्तमान जांच में विचाराधीन उत्पाद वही है जिसे मूल जांच में परिभाषित किया गया था । दरअसल घरेलू उद्योग ने स्वयं यह तर्क प्रस्तुत किया था कि वर्तमान जांच में विचाराधीन उत्पाद वही है जिसे मूल जांच में परिभाषित किया गया है । इसके अलावा, घरेलू उद्योग ने इस बात का खंडन नहीं किया है कि मूल जांच और वर्तमान जांच के उत्पाद से संबंधित विशेषताओं अथवा किसी अन्य मानदंड में किसी प्रकार का परिवर्तन हुआ है । घरेलू उद्योग की एकमात्र आपत्ति प्रस्तावित 20% के कीमत समायोजन के संबंध में है । यहां यह उल्लेखनीय है कि मूल जांच में गुणवत्ता में भिन्नता के कारण कीमत समायोजन किया गया था जिसका घरेलू उद्योग ने विरोध नहीं किया था । मूल जांच में किया गया दावा चीन के उत्पादकों के इस तर्क पर आधारित था कि यद्यपि घरेलू उत्पाद एवं आयातित उत्पाद समान उत्पाद हैं, परंतु घरेलू इलेक्ट्रोडों की तुलना में आयातित इलेक्ट्रोडों की खपत अधिक है । प्राधिकारी यह भी नोट करते हैं कि मूल जांच के दौरान मूल जांच के इस विशिष्ट महत्वपूर्ण तथ्य को घरेलू उद्योग ने चुनौती नहीं दी थी । प्राधिकारी ने प्रथम निर्णायक समीक्षा में भी यही दृष्टिकोण अपनाया था । घरेलू उद्योग ने सीस्टेट के समक्ष इस संबंध में निर्दिष्ट प्राधिकारी के निर्णय को चुनौती दी थी । तथापि, सीस्टेट ने निर्दिष्ट प्राधिकारी के निर्णय को बरकरार रखते हुए अपील को खारिज कर दिया था । इस प्रकार यह स्पष्ट है कि वर्तमान जांच तथा पूर्ववर्ती निर्णायक समीक्षा में, किए गए समायोजन से संबंधित विवाद को छोड़कर घरेलू उद्योग ने यह सिद्ध करने के लिए कोई साक्ष्य प्रस्तुत नहीं किया था कि स्वीकृत कीमत समायोजन अब आवश्यक नहीं है । इसके विपरीत स्वयं घरेलू उद्योग का यह विचार है कि चीन में निर्मित इलेक्ट्रोडों की गुणवत्ता घटिया है (और इस प्रकार इसकी परिणति अधिक खपत में हुई है) । इसी समय चीन के प्रतिवादी उत्पादक ने पूर्ववर्ती निर्णायक समीक्षा तथा वर्तमान निर्णायक समीक्षा में अपने दावे के समर्थन में दस्तावेजी साक्ष्य उपलब्ध कराया है । इस प्रकार ऐसी स्थिति में जब घरेलू उद्योग यह सिद्ध करने में असफल रहा है कि आयातित तथा घरेलू उत्पाद के बीच कथित भिन्नता अब नहीं है और चीन के उत्पादकों ने यह सिद्ध करने के लिए थर्ड पार्टी साक्ष्य उपलब्ध कराया है कि कीमत समायोजन वैध बना हुआ है, अतः प्राधिकारी पहले से स्वीकृत कीमत समायोजन को जारी रखना उचित समझते हैं । जहां

तक गुणवत्ता के पहलू एवं तत्पश्चात् 20% के समायोजन के संबंध में प्राधिकारी के समक्ष प्रस्तुत साक्ष्य को गोपनीयता प्रदान करने के मुद्दे का संबंध है, प्राधिकारी का अभिमत है कि यह दस्तावेज गोपनीय है जिसका अगोपनीय पाठ संभव नहीं है और इसे हितबद्ध पक्षकारों के समक्ष प्रस्तुत करना अपेक्षित नहीं है।

ड. प्राधिकारी का अभिमत है कि चूंकि जांच अवधि के दौरान किए गए आयातों की समायोजित पहुंच कीमत घरेलू उद्योग की उसी गुणवत्ता के क्षति रहित कीमत के लगभग समान स्तर पर थी और चूंकि पाटनरोधी शुल्क वापस ले लिए जाने की स्थिति में घरेलू उद्योग को क्षति की कोई संभावना सिद्ध नहीं होती, अतः तीसरे देशों को किए गए निर्यातों से संबंधित सूचना की अनुपलब्धता प्रासंगिक नहीं है। इसके अलावा, जहां तक संभावना विश्लेषण हेतु तीसरे देशों को किए गए निर्यातों का संबंध है, इसका पर्याप्त विवेचन प्रकटीकरण विवरण में कर दिया गया है और प्राधिकारी ने भारत में आयातों के भावी व्यवहार का विश्लेषण करने की दृष्टि से मात्रात्मक रूप से ये आंकड़े विश्वसनीय होने की पर्याप्तता की पुष्टि कर दी है, अतः इस मुद्दे का पुनः विवेचन जरूरी नहीं है।

च-ज. तर्क स्वयं यह सिद्ध करता है कि दोनों जांचों में विचाराधीन उत्पाद एक समान नहीं है। घरेलू उद्योग ने यूएसए पर अधिरोपित पाटनरोधी शुल्क के आधार पर संभावना से संबंधित तर्क को दोहराया है। जब वर्तमान जांच परिणाम और यू एस के जांच परिणाम में उत्पाद का दायरा एक समान नहीं है और यह भी कि चीन से आयातों की समायोजित पहुंच कीमत गुणवत्ता के समान स्तर के लिए घरेलू उद्योग की क्षति रहित कीमत के स्तर के लगभग समान है, घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत क्षति रहित कीमत से अधिक है और कम कीमत पर बिक्री नगण्य है, यूएसए द्वारा शुल्क के अधिरोपण के कारण क्षति की संभावना का न होना सिद्ध हो जाता है।

झ. प्राधिकारी का अभिमत है कि घरेलू उद्योग की निर्यात बिक्री में घरेलू बिक्री की तुलना में काफी अधिक वृद्धि हुई है, जिससे यह स्पष्ट रूप से सिद्ध होता है कि घरेलू उद्योग निर्यात बाजार पर ध्यान केन्द्रित कर रहा है। यह मानते हुए कि वर्तमान मामले और यूएस के मामले में शामिल उत्पाद एक समान है, चीन के आयातों पर पाटनरोधी शुल्क के अधिरोपण से घरेलू उद्योग को निर्यात बाजार का अतिरिक्त अवसर प्राप्त हो सकता है।

ञ. उपर्युक्त "क" के अनुसार।

ट. यह मानते हुए कि मालसूची में वृद्धि हुई है, क्योंकि घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत क्षतिरहित कीमत से अधिक है, यह स्पष्ट है कि घरेलू उद्योग के पास कीमत में क्षति रहित कीमत के स्तर तक कमी करके अपने स्टॉक के स्तर को कम करने का विकल्प उपलब्ध है। तथापि, यह प्रतीत होता है कि मालसूची में वृद्धि निर्यात मात्रा के कारण अधिक हुई है।

ठ. कम कीमत पर बिक्री एवं परिणामी क्षति मार्जिन के प्रयोजनार्थ किया गया 20% का कीमत समायोजन नियमावली तथा पूर्ववर्ती दोनों निर्धारणों के अनुरूप है और स्वयं घरेलू उद्योग का यह विचार है कि चीन के उत्पाद की गुणवत्ता घटिया है, जिसकी परिणति चीन के उत्पाद की खपत में वृद्धि में हुई है। अतः क्षति मार्जिन का निर्धारण करते समय इस कारक का ध्यान रखना होगा और क्षति रहित कीमत से तुलना हेतु आयातों की पहुंच कीमत में इस 20% को जोड़ना होगा, जैसा कि पूर्ववर्ती निर्णायक समीक्षा

जांच में किया गया है । इसके अलावा, कीमत कटौती के प्रभाव का निर्धारण नहीं किया जा सकता क्योंकि चीन जन.गण. से घटिया गुणवत्ता की संबद्ध वस्तुओं का आयात किया गया है । और यह पूर्ववर्ती निर्णायक समीक्षा जांच के अंतिम जांच परिणाम में अपनाई गई तथा दर्ज की गई प्रक्रिया के अनुरूप है ।

ड कीमत अवमूल्यन ऐसी स्थिति में अस्तित्व में होता है जब घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत में वृद्धि उत्पादन लागत में हुई वृद्धि से कम हो । जबकि तथ्य यह है कि घरेलू उद्योग क्षति रहित कीमत से अधिक कीमत प्राप्त कर रहा है जिससे यह स्पष्ट रूप से सिद्ध होता है कि घरेलू उद्योग की कीमतों का अवमूल्यन नहीं हुआ है ।

ढ-थ यह तर्क तथ्यात्मक रूप से गलत है । यह पाया गया है कि घरेलू उद्योग ने क्षति रहित कीमत से अधिक कीमत पहले ही प्राप्त की है । जहां तक उप-उत्पाद की बिक्री पर ऋण समायोजन का संबंध है, यूएचपी जो एक गैर-पीयूसी उत्पाद है, का उत्पादन आयातित कैल्सिड कोक से किया जाता है जिसकी लागत विचाराधीन उत्पाद के विनिर्माण हेतु प्रयुक्त, घरेलू तौर पर अधिप्राप्त कोक से दोगुनी से भी अधिक होती है और यूएचपी के रिजेक्शन को एचपीजी अर्थात् विचाराधीन उत्पाद के रूप में बेचा जाता है । अतः उप-उत्पादों का सृजन अनिवार्यतः विचाराधीन उत्पाद से होता है न कि गैर-पीयूसी से । इसके अलावा, वी.मेहता एंड कंपनी, सनदी लेखाकार द्वारा दिनांक 16.1.2009 को विधिवत प्रमाणित प्रपत्र सी-I तथा सी-II के आधार पर स्ट्रेप/अपशिष्ट/उप-उत्पाद की बिक्री पर भी विचार किया गया है । इसके अलावा, यद्यपि यह सही है कि मूल क्षति अवधि की तुलना में वर्तमान अवधि के दौरान निवेश से आय, नकद प्रवाह, लाभ तथा बाजार हिस्से में गिरावट आई है, इस तथ्य से कि गुणवत्ता के समान स्तर पर क्षति रहित कीमत घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत से अधिक है, यह स्पष्ट रूप से सिद्ध होता है कि ऐसी गिरावट वास्तविक नहीं है । जहां तक बाजार हिस्से का संबंध है, इस बात को देखते हुए कि आयातों की पहुंच कीमत घरेलू उद्योग की क्षति रहित कीमत के लगभग समान थी और बिक्री कीमत क्षति रहित कीमत से काफी अधिक थी, ऐसी स्थिति में घरेलू उद्योग के पास कमतर कीमत पर बिक्री करने और अपने बाजार हिस्से को बनाए रखने का विकल्प उपलब्ध था ।

अंतिम जांच परिणाम:

87. उठाए गए मुद्दों, हितबद्ध पक्षकारों द्वारा प्रकटीकरण विवरण पर की गई टिप्पणियों के रूप में प्रदत्त सूचना सहित उपलब्ध कराई गई सूचना और किए गए अनुरोधों और प्राधिकारी के समक्ष हितबद्ध पक्षकारों द्वारा प्रस्तुत अनुरोधों के जरिए अथवा अन्यथा रूप से उपर्युक्त परिणामों में रिकॉर्ड किए गए तथ्यों अथवा वे तथ्य जिन्हें उपर्युक्त जांच परिणाम में रिकॉर्ड नहीं किया गया है परंतु जिनका पर्याप्त विवेचन किया गया है, को ध्यान में रखते हुए और मौजूदा तथा संभावित पाटन एवं क्षति की स्थिति और पाटन तथा क्षति के जारी रहने अथवा उनकी पुनरावृत्ति की संभावना के उपर्युक्त विश्लेषण के आधार पर प्राधिकारी इस निष्कर्ष पर पहुंचे हैं कि:

i) संबद्ध वस्तुएं पाटित कीमतों पर भारतीय बाजार में प्रवेश कर रही हैं और चीन जन.गण.से आयातित संबद्ध वस्तुओं की पाटन मार्जिन उल्लेखनीय तथा न्यूनतम से अधिक है ।

ii) संबद्ध वस्तुएं भारतीय बाजार में यद्यपि पाटित कीमतों पर प्रवेश कर रही हैं, उनसे घरेलू उद्योग को कोई क्षति नहीं पहुंच रही है ।

iii) पाटनरोधी शुल्क वापस ले लिए जाने की स्थिति में संबद्ध वस्तुओं के भारतीय बाजार में प्रचलित पाटित कीमतों पर प्रवेश करने की संभावना है परंतु इनसे घरेलू उद्योग को क्षति होने की संभावना नहीं है ।

88. उपर्युक्त को देखते हुए निर्दिष्ट प्राधिकारी सामान्य पावर ग्रेड (एनपीजी) ग्रेफाइट इलेक्ट्रोड्स, जिसमें 8" से लेकर 24" तक शामिल व्यास के हाई पावर ग्रेड (एचपीजी) इलेक्ट्रोड किस्म शामिल है और जो सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 के अध्याय-85 के सीमाशुल्क उप-शीर्ष सं. 85.45 एवं आईटीसी (एचएस) कोड 85451901 तथा 85451101 के अंतर्गत वर्गीकृत है, पर पहले से लागू पाटनरोधी शुल्क, जिसे दिनांक 7 जुलाई, 2003 की अधिसूचना सं. 101/2003-सी.शु. द्वारा अधिसूचित किया गया था और तत्पश्चात दिनांक 27 जून, 2008 की अधिसूचना सं. 81/2008 द्वारा दिनांक 6 जुलाई, 2009 तक बढ़ाया गया था, को उक्त अधिनियम की धारा 9 (क) (5) के अनुसार समाप्त करने की सिफारिश करना उचित समझते हैं ।

89. केन्द्रीय सरकार के आदेशों के विरुद्ध कोई अपील, जो इस सिफारिश से उत्पन्न होती हो, उक्त अधिनियम के संबंधित प्रावधानों के अनुसरण में सीमाशुल्क, उत्पाद शुल्क एवं सेवाकर अपीलीय अधिकरण के समक्ष प्रस्तुत की जाएगी ।

आर. गोपालन, निर्दिष्ट प्राधिकारी

MINISTRY OF COMMERCE AND INDUSTRY

(Department of Commerce)

(DIRECTORATE GENERAL OF ANTI-DUMPING AND ALLIED DUTIES)

NOTIFICATION

New Delhi, the 24th June, 2009

Final Findings

Subject : Sunset Anti-dumping review investigations in the matter relating to imports of Graphite Electrodes from China PR.

No. 15/7/2007-DGAD.—Having regard to the Customs Tariff Act, 1975 as amended in 1995 (hereinafter referred to as Act) and the Customs Tariff (Identification, Assessment and Collection of Duty or Additional Duty on Dumped Articles and for Determination of Injury) Rules, 1995 (hereinafter referred to as Rules);

Background

2. Whereas the Designated Authority (herein after also referred to as the Authority), having regard to the Customs Tariff Act, 1975 as amended in 1995 (hereinafter referred to as Act) and the Customs Tariff (Identification, Assessment and Collection of Duty or Additional Duty on Dumped Articles and for Determination of Injury) Rules, 1995 (hereinafter referred to as Rules) investigated and recommended imposition of final anti-dumping duty on imports of Normal Power Grade Graphite Electrodes (Including its High Power grade variant) from China PR, and High Power Grade Graphite Electrodes from USA, Germany, France, Italy, Austria, Spain and Belgium on 27th March 1998. In the first Sun Set Review, no duties were recommended on imports from USA, Germany, France, Italy, Austria, Spain and Belgium where as final anti-dumping duty was recommended / extended on imports from China PR in respect of Normal Power Grade Graphite Electrodes (Including its High Power grade variant) in April 2003 and the custom notification for final duties was issued on 7th July 2003.

3. The present application has been filed by M/s Graphite India Ltd. and M/s HEG Ltd under Section 9A (5) of the Customs Tariff Act, 1975, as amended in 1995 read with Rule 23 of the

Customs Tariff (Identification, Assessment and Collection of Anti Dumping Duty on Dumped Articles and for Determination of Injury) Rules, 1995 requesting for a 2nd sunset review of anti dumping duties earlier imposed on imports of Normal Power Grade Graphite Electrodes (Including its High Power Grade variant) from China PR. In its application, the applicant pleaded for the need for a review of the anti dumping duty imposed on the subject goods originating in or exported from China PR. The petitioners claimed with prima facie evidence that cessation of anti dumping duty imposed on subject goods from these countries is likely to lead to continuation or recurrence of dumping and injury and have requested for continuation and enhancement of the anti dumping duty imposed on subject goods from subject country for a further period of five years.

4. Authority initiated 2nd sunset review vide notification dated 25th march 2008 in accordance with Section 9A(5) of the Act, read with Rule 23 of Antidumping Rules, to review the need for continued imposition of duties in force and whether the expiry of the duty is likely to lead to continuation or recurrence of dumping and injury.

5. And whereas, antidumping duty as notified vide Notification No. 101/2003- Customs dated 7th July, 2003 was extended up to 6th July 2009 vide notification No.81/2008 dated 27th June 2008 in terms of Section 9 (A) (5) of the Act.

Procedure

6. The procedure described below has been followed with regard to this investigation:

- i. After initiation of the review investigation, the Authority notified the domestic industry, all known exporters/producers in the subject country and known importers, calling for questionnaire responses and necessary information in accordance with Rule 6(4)
- ii. The Embassy of the subject country in New Delhi was informed about the initiation of the investigation, in accordance with Rule 6(2), with a request to advise the exporters/producers in their country to respond to the questionnaire within the prescribed time.
- iii. The Authority sent questionnaires, to elicit relevant information, to the known exporters from China PR.
- iv. Only one of the exporters from China, M/s Liaoning Jiayi Metals & Minerals Co. Ltd. responded to the questionnaire in response to the above notification.
- v. The period of investigation for the purpose of the present review is 1st October 2006 to 30th September 2007 (12 months). However, injury analysis covered the years 2004-05, 2005-06, 2006-07 and POI.
- vi. Request was made to the Directorate General of Commercial Intelligence and Statistics (DGCI&S) to arrange details of imports of subject goods for the past three years and the period of investigation;
- vii. M/s Graphite India Ltd. and M/s HEG Ltd. (domestic producers) of the subject goods have provided their cost and injury information for injury investigation.
- viii. No other interested party has submitted any response to the initiation notification.

- ix. The Authority has considered all views expressed and submissions made by various interested parties to the extent they are relevant for the present investigation.
- x. The Authority made available non-confidential version of the evidence presented by interested parties in the form of a public file kept open for inspection by the interested parties.
- xi. The Authority verified the information furnished by the domestic industry to the extent possible to examine the injury suffered and to work out optimum cost of production and cost to make and sell the subject goods in India on the basis of Generally Accepted Accounting Principles (GAAP) and the information furnished by the applicants so as to ascertain if Anti-Dumping duty lower than the dumping margin would be sufficient to remove injury to Domestic Industry.
- xii. The Authority notes with respect to the responding exporter that it had given the information only for its export sales to India and did not give the information for the producer. Therefore, the normal value and dumping margin for the exporter is to be determined as per the Rules.
- xiii. The Authority held a public hearing on 10th December 2008 to hear the interested parties orally, which was attended by representatives of domestic industry and of the abovementioned exporter from China. The parties attending the public hearing were requested to file written submissions of views expressed orally. The written submissions received from interested parties have been considered and incorporated to the extent they are relevant and substantiated with evidence.
- xiv. ***In the statement represents information furnished by interested parties on confidential basis and so considered by the Authority under the Rules.

Product Under Consideration and Like Article
Views Of the Domestic Industry

7. The product involved in this sunset review is 'Normal Power Grade (NPG) Graphite Electrodes including its variant High Power Grade (HPG) Electrodes of diameters from 8" up to and including 24" (here in after referred to as subject goods). Since, the present investigation is a review investigation; product under consideration remains the same as has been defined in the original investigation and thereafter restricted to 'Normal Power Grade (NPG) Graphite Electrodes, including its variant High Power Grade (HPG) Electrodes of diameters from 8" up to and including 24" in the first SSR. The subject goods are classified under Customs sub-heading no. 85.45 of Chapter 85 of the Customs Tariff Act, 1975 and ITC (HS) Codes 85451901 and. 85451101. The classification is however indicative only and in no way binding on the scope of the present investigation.

Views of Interested Parties

8. No interested party other than the domestic industry has made any submissions with regard to the product under consideration

Examination By The Authority

9. Authority examined the contentions of the domestic industry in detail. It is noted that the present investigation is a sunset review investigation and therefore the scope of the product under consideration should not be altered in review investigation. The Authority therefore holds that the scope of the present product under consideration is the same as was the scope of the product under consideration in the sunset review investigations notified vide Notification issued in April 2003 and consequent Customs Notification No. 101/2003- Customs dated 7th July, 2003.

Standing and Domestic Industry

10. The sunset review had been initiated on the basis of a request submitted by M/s Graphite India Ltd. and M/s HEG Ltd. accounting for manufacture of 100% of the total subject goods in the country as they are the only producers of the subject goods in India.

11. No comments have been received from any interested party on the issue of standing or the status of the applicants. Therefore, the Authority holds that the applicant producers of the subject goods in India constitute the domestic industry for the purpose of the current investigation.

Dumping Determination**Continuance of Dumping: Determination of Normal Values, Export Prices and Dumping Margins:**

12. Apart from M/s Liaoning Jiayi Metals & Minerals Co. Ltd., the exporter from China PR, the only other interested party who filed a response to the initiation was Rail Wheel Factory Bangalore, who filed a response in the form of an importer questionnaire. However as per this response no imports from subject country have been reported during POI. Therefore this response is of no relevance so far as the present investigations are concerned.

Views of M/s Liaoning Jiayi Metals & Minerals Co. Ltd.

13. Only one exporter/manufacturer, M/s Liaoning Jiayi Metals & Minerals Co. Ltd. has filed its questionnaire response. They have claimed negative dumping and sought termination of the investigations. While submitting the questionnaire response the responding exporter has further

stated that they have exported the PUC to India manufactured by M/S Chengdu Rongguang Carbon Co. Ltd. or by the said exporter / producer itself.

Views of the Domestic Industry

14. The domestic industry has sought declaration of the responding exporter from China PR as non-cooperating on the following grounds

- i. The exporter has failed to file certificate of information and authorization
- ii. The exporter has failed to adhere to restrictions in the exporter questionnaire response as they have not provided all names of the producers.
- iii. The exporter has not provided any response about any change in the structure of the company and information the relationship of shareholders with any other company engaged in production and sale of subject goods. Even telephone number and fax numbers including name and address of the principal contact person have not been provided.
- iv. The exporter has not provided full description of the product he has exported in the period of investigation as the same has a bearing on apple to apple comparison for the dumping margin determination.
- v. The information to questions relating to catalogues and brochures has not been answered and information about channel of distribution has been withheld for strategic reasons. Even information relating to placement of order, and essential sales negotiation process has not been provided.
- vi. Under the pretext of not claiming the normal value, the exporter has not provided all material information which would have direct bearing on the account of the company.
- vii. No information has been provided on profit determination for export sales.
- viii. Details of export sales to other countries have not been furnished.
- ix. Producer of goods exported by the present exporter has not filed any questionnaire response and in the absence of full response the present exporter cannot be treated as cooperating exporter. That apart they have also not filed any initiation notification and therefore submissions made on their behalf cannot be taken on record.
- x. A proper non confidential version of the response has not been submitted to ensure that the domestic industry is not in a position to comment upon the same or to expose the inadequacies and incorrectness of the statements made by them.

15. According to the Domestic Industry Rule 7 mandates that all the information submitted by a party on a confidential basis cannot be regarded as confidential unless the same is supported by reasons and is so accepted by the Authority by passing a separate order granting such confidentiality. In other words, Rule 7 does not in any way permits that the exporter can get away with minimal information rather it casts a responsibility on the exporters to furnish summaries in sufficient details so as to permit a reasonable understanding of the substance of the information

submitted on confidential basis to enable the interested parties to give their comments and to assist the Authority in arriving at the correct determinations. The law further states that if the authorities find that a request for confidentiality is not warranted and if the supplier of the information is either unwilling to make the information public or to authorize its disclosure in generalized or summary form, the authorities may disregard such information. It is also submitted that in terms of the Rule 7, the Designated Authority has to record the reasons for accepting the claim of confidentiality.

16. According to them CESTAT in the tiles case has clearly held that information provided to the Designated Authority on confidential basis is not required to be treated as confidential merely because it is provided to the Designated Authority on a confidential basis and has further laid down detailed guidelines to examine claims of confidentiality. Further, it has been clearly held that confidentiality is not a mere tool to deny disclosure to kill transparency, or to create a handicap for opposing parties. It has been laid down that for the purpose of transparency; there is an obligation on the authority to require the parties to furnish non-confidential summaries, which shall be in sufficient detail to permit a reasonable understanding of the substance of the information submitted in confidence.

Examination By the Authority

17. The Authority has examined the submissions of the domestic industry in detail and notes that the submissions as above are mostly legal in nature. The Authority further notes that meaningful information related to this case has been submitted by the responding exporter. The exporter has admitted to be operating under non-market economy conditions and has therefore not submitted response to the MET Questionnaire. Even if they had responded to the MET, they admittedly are operating under non-market economy conditions and therefore their submissions on this score would have been irrelevant as determination of normal value would be through CNV method only as has been followed here in after. Further details regarding exports to India during POI have been provided for determination of export price. On the issue of non furnishing of details of exports to third countries, the Authority notes that the same is required in a situation where the likelihood of continuation or recurrence of dumping is to be examined in the event of withdrawal or discontinuation of the existing antidumping duties. In the instant case, however, the Authority notes that in the first sunset review, no antidumping duty was imposed on the subject responding exporter and therefore the concept of withdrawal or discontinuation does not exist. Further, the Authority also notes that in respect of the present investigation the subject exporter has filed a questionnaire response which gives a clear picture of the volume and value of exports to India during POI for determination of individual dumping margin. To that extent, the Authority holds that the responding exporter from China PR as a fully co-operating for the purposes of the present investigation.

Adjustment on account of Quality**Views of M/s Liaoning Jiayi Metals & Minerals Co. Ltd.**

18. The responding exporter has claimed that the authority has allowed price adjustment in the original investigation as well as the first sunset review investigation. The petitioners have conceded that there has been no difference either in PUC or like article. It has further been pleaded that petitioners at the time of original investigation conceded that the consumption of Chinese electrodes was higher and nowhere in the present application or the first sunset review have they claimed any changed whatsoever in the position.

19. It has been submitted that quality of electrodes supplied by them per se cannot be compared with a domestically produced electrodes as domestically produced electrodes are of much superior quality. Lower quality of goods exported by them results into higher consumption into higher electrodes as compared to the domestically produced electrodes and due to this associated quality cost of production of Indian producer is higher compared to the cost of production of the Chinese producers. They have further pleaded that authority has accepted this after proper evidence in the original investigation. To support this contention they have placed on record report from at least three different users of Chinese origin Graphite Electrodes, on a confidential basis. According to this confidential report, these users have been consuming both domestically produced electrodes as well as Chinese origin electrodes and they have further stated that Chinese electrodes are inferior in terms of quality, physical and chemical properties and the machining is not up to the mark when compared with the domestically procured electrodes. They have further confirmed that consumption of Chinese electrodes supplied by Liaoning Jiayi Metals and Minerals Co. China is about 20% higher than the domestically produced electrodes as per their experience.

Views of the Domestic Industry

20. Domestic industry has raised objection to the claim of adjustment on account of quality difference in the product under consideration and Indian goods. They have submitted that the admissibility of such an adjustment from legal or factual perspective can be accorded only after the producer / exporter participates and substantiates the basis of such claim by filing test report etc. and without such substantiation there is no rational in accepting 20% adjustment. They have claimed that there is nothing in the public file to suggest that exporter made a substantiated claim for an adjustment on account of quality in sunset review proceedings and, therefore, no adjustments on account of alleged quality or consumption difference can be permitted. As per their submissions, the entire proof to claim adjustment is to be furnished by the party who claims it. They have further submitted that under paragraph 6, the only provision for allowing any adjustment for comparison purposes cannot be invoked in a non-market economy country and such an adjustment was permissible at the time of original Final Findings as the provision relating to non-market economy countries was introduced later, only in the year 1999. They have further suggested that one of the

Public Sector Units under the Ministry of Railways; viz. Rail Wheel Factory has been using both Chinese and Indian Graphite Electrodes during the year 2006-07 and 2007-08, and therefore the Authority may seek information from the said unit on the consumption pattern of the electrodes. It has further been submitted that the normal value in the instant case is to be determined in accordance with the provisions of paragraph 7 of Annexure of Antidumping Rules as the only participating exporter has also not claimed that the principals set out in paragraph 1 to 6 should apply in terms of paragraph 8.3 of Annexure 1. They have also pleaded that provision of paragraphs 1 to 6 of Annexure 1 are not even applicable and therefore, the question of any adjustments under any of those paragraphs does not arise.

Examination by the Authority

21. The Authority has considered the arguments put forth in favour and against the adjustment allowed in the original as well as in the first sunset review investigations and notes that it has been claimed by the exporter that no change has happened between the previous and present case with the product characteristics remaining the same.

22. As per Annexure 1 to Rule 8, Para 6(i) thereof, while arriving at margin of dumping, the designated authority shall make a fair comparison between the export price and the normal value. The comparison shall be made at the same level of trade, normally at ex-factory level, and in respect of sales made at as nearly as possible at the same time. Due allowance shall be made in each case, on its merits, for differences which affect price compatibility, including differences in conditions in terms of sale, taxation, levels of trade, quantities, physical characteristics and any other differences which are demonstrated to affect price compatibility.

23. The Authority notes that the issue of consumption concerns the product characteristics and in the absence of change in the technical parameters; the consumption pattern does not undergo change. Further there is no counter argument nor has any evidence been brought to the knowledge of the Designated Authority that the consumption pattern has undergone a change. The Authority in view of the fact that scope of product and the description remaining the same, considers the same adjustment essential as was considered in the original main investigation and first sunset review investigation and confirms the like articles as per Rule 2(d).

24. The Authority also sought information from the Rail Wheel factory as suggested by the Domestic Industry. However, the Authority did not receive any response to the same. As already stated hereinbefore, it is however seen that Rail Wheel factory did not make any imports of subject goods from China PR during either 2006-07 or POI, although they had reported some imports from China PR during 2004-05 and 2005-06. In any case, the Authority has the mandate to look into the aspect of continuation or discontinuation of Anti-dumping duty while conducting a Sun Set Review and need not go beyond that by revising technical details, which have already been considered and addressed in the original investigation. That apart, as per the details available in the project report

for expansion as made available by one of the constituents of the domestic industry, it has been admitted that the Chinese manufacturers have the lowest manufacturing cost and are producing poor quality of PUC with manufacturing plants located in low cost locations. Therefore, in view of the foregoing and other details / documents on record made available by the responding exporter on a confidential basis and their confidentiality having been affirmed by the Authority, the Authority holds to continue with allowing adjustment to the extent of 20% as allowed in the original investigation as well as first Sun Set Review, in all the related parameters that can make a fair comparison for determination of dumping margin and injury margin, possible.

Normal Value:

25. The Authority notes that in the past three years, China PR has been treated as a non-market economy country in the anti-dumping investigations by other WTO Members. Therefore, in terms of Para 8 (2) of the annexure 1 of AD rules, China PR has been treated as a non-market economy country subject to rebuttal of the above presumption by the exporting country or individual exporters in terms of the above Rules.

26. As per Paragraph 8, Annexure I to the Anti Dumping Rules as amended, the presumption of a non-market economy can be rebutted if the exporter(s) from China provide information and sufficient evidence on the basis of the criteria specified in sub paragraph (3) in Paragraph 8 and prove to the contrary. The cooperating exporters/producers of the subject goods from People's Republic of China are required to furnish necessary information/sufficient evidence as mentioned in sub-paragraph (3) of paragraph 8 in response to the Market Economy Treatment questionnaire to enable the Designated Authority to consider the following criteria as to whether:-

- a) The decisions of concerned firms in China PR regarding prices, costs and inputs including raw materials, cost of technology and labour, output, sales and investment are made in response to market signals reflecting supply and demand and without significant State interference in this regard, and whether costs of major inputs substantially reflect market values;
- b) The production costs and financial situation of such firms are subject to significant distortions carried over from the former non-market economy system, in particular in relation to depreciation of assets, other write-offs, barter trade and payment via compensation of debts;
- c) Such firms are subject to bankruptcy and property laws which guarantee legal certainty and stability for the operation of the firms and
- d) The exchange rate conversions are carried out at the market rate.

27. The only responding exporter from China PR has not claimed Market economy Status. They have in fact not responded to the Authority on this issue and have admitted to be operating under non-market economy conditions. The Authority therefore has adopted the Constructed Normal Value for the purposes on determination of Dumping margin Calculations.

28. The Normal Value has been constructed by taking the norms of the most efficient unit of domestic producer from amongst the domestic industry. Prices for the raw materials viz. Calcined Petroleum Coke used for manufacture of electrode have been taken as per domestic procurement price of the domestic industry and Calcined Petroleum Coke, required for manufacture of Nipple and price of Pitch have been taken as per DGCI&S data. The remaining cost elements have been also taken as per most efficient domestic unit. After taking into account the above methodology, the normal value works out to Rs. *** per MT.

Export Price:

Views of the Domestic Industry

29. They have submitted that the responding exporter cannot be considered as a cooperating exporter as the said exporter has withheld information relating to exports to third countries from the Designated Authority for carrying out likelihood test under section 9A (5). This has been claimed to be a total disregard to the ruling of the Hon'ble Supreme Court in the case of Haldor Topsoe vs. Designated Authority {2000(120)ELT11(SC)}. They have further submitted that the producer has not cooperated in the investigation and therefore, that information of the so-called cooperating exporter cannot be accepted without verifying the information for completeness, accuracy or authenticity. It has also been submitted that dumping from participating exporter is confirmed and therefore, it cannot be concluded that the same would not dump the subject goods on the basis of the conclusions of the previous investigations. They have also sought likelihood analysis of dumping and stated that even if there are no imports from the subject country, the Authority cannot absolve itself from the compulsory analysis of likelihood of dumping.

Examination by the Authority

30. The Authority has considered the exporter response filed by the responding exporter. Total exports of PUC by the said responding exporter during POI as per the response filed is *** MT, which is far higher than the volume of imports available in either IBIS data source relied upon by the Domestic Industry or DGCI&S data procured by the Authority. Further the exports made by the said responding exporter are manufactured either by the said producer / exporter or by M/S Chengdu Rongguang Carbon Co. Ltd. The volume of exports manufactured by Chengdu Rongguang Carbon Co. Ltd. accounts for *** MT (all inclusive of nipple) at an average cif price of US\$ *** per MT. Similarly volume of exports produced by M/S Liaoning Jiayi Metals & Minerals and exported by them accounts for *** MT which includes *** MT of PUC without nipple at an

average CIF price of US \$ *** per MT and *** MT with Nipple at an average cif price of US\$ *** per MT. The transaction wise export sales (in the absence of spot verification) have been compared with the transaction wise sales as reflected in the DGCI&S Data source on a sample basis. The verification of records of the responding exporter was not considered necessary as sample individual invoices, and other related sale documents, as demanded by the Authority were provided by the responding exporter. These records also revealed the details of manufacturer who had manufactured the subject goods and subsequently exported to India. Further comparison on a sample basis was carried out with DGCI&S data source. Moreover, the adjustments claimed by the petitioners for calculation of net export price are only US \$ *** per MT whereas the responding exporter had claimed a higher adjustment ranging from US \$ *** to US \$ ***per MT. In addition neither the domestic industry in their petition nor the responding exporter had claimed any deduction on account of VAT refund, which has however been considered by the Authority as an adjustment of 4%. To sum up, as against an adjustment of US\$ *** per MT claimed by the petitioner, the Authority has made an adjustment in excess of US \$ *** per MT. After allowing these claimed adjustments on account of inland freight, port charges, Ocean Freight, Overseas Insurance, Credit Cost, Bank Charges, and also 4% VAT (additional adjustment taken into account, as the same was not claimed by the responding exporter), the net average export price at ex-factory level for the subject exporter works out as under: (Conversion rate during POI @ 1 US\$ = Rs.43.33)

- a. Manufactured by M/s Chengdu Rongguang Carbon Co. Ltd. and exported by M/S Liaoning Jiayi Metals & Minerals (With Nipple) US\$ *** (Rs. ***) per MT.
- b. Manufactured by by M/S Liaoning Jiayi Metals & Minerals Co. Ltd. (With Nipple) US\$ *** (Rs. ***) per MT. (While arriving at the weighted average price, the cost of nipple at 4%, as per claim of the domestic industry that nipple cost comprises of 4% of the total cost of the electrode has been allowed to be added to the NEP of electrodes exported without nipples)

All Other Exporters from China PR

31. In respect of all other exporters from China PR the lowest priced export transaction of the cooperating exporter has been considered and after allowing adjustments at par with the ones allowed in respect of the cooperating exporter, the net export price works out to be US \$*** (Rs. ***) per MT.

Dumping Margin

Producer	Exporter	Normal Value (INR)	Normal Value (adjusted)(IN R)	Export Price (INR)	Dumping Margin (INR)	DM %
M/sChengdu Rongguang Carbon Co. ,Ltd. No.145	M/S Liaoning Jiayi	***	***	***	(***)	Negative

Yidudadao, Longquan District, Chengdu, China	Metals & Minerals Co. Ltd					
M/s. Liaoyang Carbon Co Limited, Zhongxin Village Liuerpu Town, Liaoyang County, Liaoning, China	M/S Liaoning Jiayi Metals & Minerals Co. Ltd	***	***	***	***	5-10%
Any	All Other Exporters From China PR	***	***	***	***	25-30%

32. The current dumping margins from the subject countries have been found to be above de minimis.

Likelihood of continuation or reoccurrence of dumping in the event of withdrawal or reduction of ADD

Views of the Domestic Industry

33. Designated Authority is required to examine whether the cessation / discontinuance of anti-dumping duties in force is *likely* to lead to *continuance or recurrence* of dumping and injury.

34. The CESTAT in the case of *Vinati Organics Ltd. Versus Designated Authority* has held as under:

"the Designated Authority and the Central Govt. has to form an opinion that discontinuance of Anti-dumping duty will not create possibility of any injury being caused to the domestic industry in future."

35. Thus Section 9A (5) requires an opinion as to the probability/possibility of recurrence or continuance of dumping and injury and not a categorical positive finding of recurrence or continuance. While arriving at the opinion of likelihood of continuance or recurrence of dumping and injury, it is necessary to bear in mind the effect and influence of the anti dumping duties already in place against the subject countries and the likely future behaviour of the exporters if the duties are allowed to lapse. The Designated Authority is also required to examine whether the trend / behavioural pattern of dumping continues to persist despite Anti dumping duties in place. It is pertinent to note while carrying out the review that the exporter/producers in subject countries are fully aware of the proximity of impending sunset review, hence their pricing behaviour is likely to be manipulated/determined and hence suspect and untrustworthy. In other words, the behaviour during the period of investigation is not conclusive as the same may be tainted due to prior knowledge about the review which is undertaken in terms of the trade notice on sunset review.

36. It is in this backdrop, it needs to be appreciated that the exporters from the China PR, continued to dump. It has further been submitted that the current dumping an injury is a clear and sufficient indicator that injury to domestic industry would continue once the duties are removed and thus, there are sufficient indicators in terms of Section 9A (5) for the Authority to formal opinion that the Cessation/discontinuance of antidumping duty is likely to lead to recurrence or continuance of dumping and injury to the domestic injury. It has further been pleaded that in the facts and circumstances of the present case, domestic industry has already placed on record material to show that there is current dumping an injury during the period of investigation and hence the likelihood of dumping an injury is imminent if duties are not extended.

37. With respect to dumping it has been submitted that China PR has been found to be dumping the subject goods during the period of investigation and dumping margins have been very significant. It has been pleaded that not only is a dumping margin from China PR still significant, but dumping has not ceased to exist despite the antidumping duties being in force. It has been alleged that exporters from China PR have also indulged in dumping during the years prior to POI.

38. The domestic industry has submitted that China PR is dumping the subject goods not only in India but also in other countries. Domestic industry has further claimed that subject countries having excess capacity as an industry and are essentially export oriented as far as the subject goods are concerned. To this extent, they have quoted the excerpts from the preliminary determination by USA in case No.A-570-929 according to which "the domestic industry is threatened with material injury by reason of dumped imports of small diameters graphite electrodes from China.

39. The domestic industry has submitted that on account of the surplus capacities and currently faced antidumping duties in USA, their export markets have been curtailed in USA and hence they are unable to utilize their already existing surplus capacities and there is a strong likelihood of diversion of subject goods to India at dumped prices, in the event the antidumping duties are withdrawn at this stage.

Submissions made by responding exporter M/s Liaoning Jiayi Metals & Minerals Co. Ltd.

40. It has been submitted that in the exile to project high dumping margin the petitioners have over stated normal value and understated the export prices. According to them normal value is over stated solely based on experience. In view of the fact that there is no material information available to them in the non confidential version of petition on how the normal value has been determined and have sought that authority may kindly investigate the same. On export price front the same has been claimed to have been grossly under stated by including products which are not even product under consideration and a number of transactions included by the petitioners in the import data were shown to the authority at the time of hearing and it was shown that these transactions were not PUC at all.

41. They have further pleaded that another reason for high dumping margin determined in the petition is that they have supplied electrodes without nipples and machining in a number of cases whereas the domestic industry always supplies with nipples and machine.

Examination By the Authority

42. So far as the responding exporter is concerned, no duty was imposed in the earlier Sun Set review investigations in case of exports made by the said responding exporter and produced by M/S Chengdu Rongguang Carbon Co. Ltd. or produced by the said exporter itself. So far as the likelihood of recurrence in the event of cessation of such duty as per Section 9A (5) is concerned, since no duty was in place for this exporter, the concept of cessation is not relevant. However, specific duty was in place in respect of the exports made by the responding exporter in case they exported PUC manufactured by M/S China Tianjin Jinghai Carbon Plant (Not participating in the present investigation and no exports made by responding exporter in respect of the PUC produced by the said producer) or any other manufacturer in China PR. To that extent the likelihood of continuation of dumping can be pegged at the actual dumping margins determined in respect of the subject exporter from China PR. The Authority notes that the exporter in its submissions has clearly stated that they have been exporting PUC to India in a combination of producer / manufacturer whereon no antidumping duty was imposed. The Authority concludes that they have not been in a position to export PUC manufactured by such producers who were liable to pay ADD. Authority further holds that the present dumping margins based upon the response filed by the Chinese exporter are reliable as is evident from the volume of exports made by the said responding exporter.

43. So far as the third country exports of the responding exporter, as raised by the domestic industry is concerned, the Authority notes that the same is required in a situation where the likelihood of continuation or recurrence of dumping is to be examined in the event of withdrawal or discontinuation of the existing antidumping duties. In the instant case, however, the Authority notes that in the first sunset review, no antidumping duty was imposed on the subject exporter and therefore the concept of withdrawal or discontinuation does not exist. Authority further notes that in respect of the present investigation the subject exporter has filed a questionnaire response which gives a clear picture of the volume and value of exports to India during POI for determination of individual dumping margin. To that extent, the Authority considers that the details of exports to third countries, is not required to be examined in the present investigation. So far as the impact of ADD, having been imposed by USA against China PR, the Authority notes that the product described in the said investigation is "Small Diameter Graphite Electrodes" and the same does not specify either the size or variant of the Graphite electrodes covered under the said investigation. Moreover, the Authority, after having accessed marketing information on Graphite Electrodes from various websites of Chinese manufacturers notes that the size of electrodes manufactured by these Chinese manufacturers varies from 2" to 24". The sizes, apart from PUC also include 2", 3", 4" and 6". The Authority notes that size 2" to 6" can be treated as small diameter graphite electrodes, and

are therefore outside the purview of PUC and therefore cannot be treated as relevant for the likelihood analysis of the present investigation.

44. So far as other exporters from China PR, who were liable to pay anti-dumping duty subsequent to the first sun set review investigations, are concerned, the Authority notes the data analysis as per DGCI&S data source reveals that total imports of the subject goods as reflected therein for the period October 2006-September 2007(POI) are far less in volume than the volume of exports declared by the single responding exporter. As per DGCI&S data source, the imports into India during POI are to the tune of *** MT whereas the only responding exporter, as per the response filed with the Authority has exported *** MT of PUC during POI. This indicates that the export data from China PR has not got fully captured in DGCI&S data source. The domestic industry has relied upon IBIS data source in its petition, but the total volume of imports reflected therein is even less than the volume captured in DGCI&S data source, although they have included non-PUC items also in their analysis as per the petition and as admitted during public hearing by the representative of the domestic industry. To make a fair comparison on volume of imports into India, the Authority tried to have the details of exports of subject goods from China from World Trade Atlas data source. However the Authority notes that the said data in WTA does not have the segregated details of PUC. The data available therein refers to carbon electrodes, classifiable under the same Tariff heading, as applicable to graphite electrodes. Further from amongst graphite electrodes itself only NPG and its High Power grade comprises the PUC and cannot be segregated from other variants including UHP grade which is outside the purview of present investigation. Moreover different sizes have also not got reflected in this data source. To That extent WTA data source cannot be considered for likelihood analysis.

45. Thus the Authority has relied upon the data provided by the responding exporter and the DGCI&S data source and considers that the actual dumping margins based upon the exports by the only responding exporter are an indicator as to at what price the PUC is likely to be exported by other Chinese exporters as well to India in the event of discontinuation or withdrawal of duty.

Injury Assessment

Views of Domestic Industry

46. It is stated by the domestic industry that the injury to the domestic industry has continued as the imports as well as dumping has not stopped from Chinese exporters. The domestic industry has also stated that the anti-dumping duties against the subject country may be continued for another term of 5 years in the interest of the domestic industry.

Views of other interested parties

47. The sole exporter from China has stated that the NPG and UHP Electrodes cannot be seen separately for the purpose of determination of injury. They have also stated that there can be either continued injury or likelihood of recurrence of injury.

48. It has been submitted that there can either be continued injury or likelihood of recurrence of injury and that is why the rules provide for continuation or recurrence and not for continuation and recurrence.

49. Antidumping duties have been in force on imports of PUC for the past more than 10 years and even after this the domestic industry has claimed continued injury. HEG claims to be on the way to become world's largest single location producer of graphite electrodes. Financial results declared by HEG shows that their profit as a percentage of sales have been in the region of 25-30%, leading to return of capital employed in the excess of 50%. It has been submitted that they are aware these financial results are in respect of various products produced by the company. However, the company is substantially into production of graphite electrodes. Therefore, any claim of company which shows injury in the PUC implies abnormally high profitability in the remaining products (UHP electrodes). If so, it is additional reason to examine injury to the domestic industry by including NPG and UHP electrodes. In a situation, where the UHP electrodes are performing so well in spite of stiff competition from other countries, it clearly shows that changes in pattern of consumption resulting from development in steel production technology are the real cause of alleged sub-optimal price for product under consideration.

50. No other interested party has made any submissions in respect of any aspect of the present investigation.

Examination by the Authority

51. The Authority has examined the injury suffered by the domestic industry and the likelihood of continuance / recurrence of dumping and injury in the following paragraphs.

Examination of Injury Parameters

52. The Authority has taken note of various arguments raised by the domestic industry in their submissions and issue of continuation of injury to the domestic industry has been examined in the light of these arguments made before the Authority. The Authority notes that the current dumping margins from China PR are above de minimis. The Authority therefore, proceeds to examine the current injury, if any, to the domestic industry before proceeding to examine the likelihood aspects of dumping and injury on account of imports from the subject country.

53. Article 3.1 of the ADA and Annexure II of the AD Rules provide for an objective examination of both, (a) the volume of dumped imports and the effect of the dumped imports on prices in the domestic market for the like products; and (b) the consequent impact of these imports on domestic producers of such products. With regard to the volume effect of the dumped imports, the Authority is required to examine whether there has been a significant increase in imports, either in absolute term or relative to production or consumption in the importing member. With regard to the price effect of the dumped imports, the Authority is required to examine whether there has been significant price undercutting by the dumped imports as compared to the price of the like product in the importing country, or whether the effect of such imports is otherwise to depress prices to a significant degree, or prevent price increase, which would have otherwise occurred to a significant degree.

54. For the purpose of current injury analysis, the Authority has examined the volume and price effects of dumped imports of the subject goods from the subject country on the domestic industry and its effect on the prices and profitability to examine the existence of injury and causal link between the dumping and injury, if any as follows:

Volume Effect of dumped imports and Impact on domestic Industry

55. The effect of the volume of dumped imports from the subject country has been examined. The domestic industry had relied upon IBIS data source for volume analysis. The Authority, however, procured data from DGCI&S. The Authority notes that the volume of imports as reflected in DGCI&S data source, particularly during POI is much higher than the volume of imports of PUC as detailed in IBIS data source. Further Authority notes that the only responding exporter has reported a much higher sale to India during POI compared to the volume available either in IBIS or DGCI&S data source. The Authority therefore has relied upon DGCI&S data and responding exporter's data for volume carrying out analysis.

Share of Imports from subject country (% of total imports, % of total demand and domestic production)

56. According to the DGCI&S import data, it is noted that there is a huge price variation in respect of imports from China PR as compared to imports from other countries. In fact during the verification of one of the constituents of the Domestic Industry it came to the fore that source documents did not reflect the variant of Electrode viz. NPG / HPG / UHP in the source documents and they pleaded that different variants could be identified by the specific code given to them as per the details available in their data base as also by following the unit price which is much higher in case of non-PUC UHP variant as against NPG and HPG variant which are the PUC. Considering this unit price factor in the following table, it is imperative that the PUC is being imported into India only from China PR and the imports from other countries are non-PUC products.

Country	2004-05		2005-06		2006-07		Oct 06-Sep 07(POI)	
	MT	Rs./MT	MT	Rs./ MT	MT	Rs./ MT	MT	Rs./MT
China PR	***	88065	***	114151	***	84521	***	76138
South Africa	289.900	141247	178.495	101234	694.000	155157	694.000	155157
USA	0.909	258966	210.000	116091	2051.303	141861	411.480	148591
Mexico	10.000	419909						
Indonesia					20.500	2308293		
Japan					590.003	162859	675.000	163694
Korea RP					0.017	112527706		
Korea DPR			0.014	162857	0.002	2290000		
Austria					402.551	145564	289.429	144329
France					97.000	153614	97.000	153614
Germany	19.279	108053	0.065	4429462	105.001	36036	5.000	170806
Italy	0.215	525874	0.300	269417	51.368	70772		
Spain	108.000	207819	788.310	145629	3530.734	161235	2193.178	165780
Unspecified					67.802	142086	323.844	123115
Total	***	135055	***	128660	***	145700	***	141970

57. The details of imports volumes as per DGCIS data source for injury period and as per data provided by the responding exporter for POI is tabulated as under:

Particulars	Unit	2004-05	2005-06	2006-07	Oct 06 to Sep 07(POI)
Imports from China	MT	***	***	***	***
Trend	Indexed	100	164	600	1062
Total Imports	MT	***	***	***	***
Trend	Indexed	100	164	600	1062
Production	MT	***	***	***	***
Subject Imports as a % of Total Production	%	***	***	***	***
Trend	Indexed	100	148	441	772
Total Domestic Sales	MT	***	***	***	***
Trend	Indexed	100	106	109	107
Total Demand	MT	***	***	***	***

Trend	Indexed	100	107	119	127
Export sales	MT	***	***	***	***
Trend		100	118	184	190
Export sales as a % of production	%	***	***	***	***
Trend	Index	100	106	132	139
Subject Imports as a % of Total Demand	%	***	***	***	***
Trend	Index	100	154	503	837
Share of domestic industry as a percentage of total demand	%	***	***	***	***
Trend	Index	100	99	91	84

58. The Authority notes from the above that the import of PUC is taking place only from the subject country. The data also reveals that the imports from the subject country have gone up in absolute terms from the base year 2004-05 up to POI. At the same time, the percentage share of imports from subject country in total demand as indexed has also increased from 100 in the base year to 837 during POI whereas the share of the domestic industry has come down from 100 during 2004-05 to 84 during POI. However when compared to the export sales from injury period thru POI it is seen that indexed at 100 during the base period 2004-05, their export sales have gone as high as 190 during POI. Export sales as a percentage of production has increased from ***% in the base year 2004-05 to ***% during POI. Therefore the loss in the domestic market share of the domestic industry is attributed to the fact that their main aim has been to expand their export base and not because of the surge in imports from the subject country.

Capacity, Production, and Capacity Utilisation

59. The verified information shows as follows:

	UOM	2004-05	2005-06	2006-07	Oct 06 to Sep 07(POI)
Installed capacity	MT	***	***	***	***
Trend	Index	100	143	158	158
Production	MT	***	***	***	***
Trend	Index	100	109	133	146
Capacity utilization	%	***	***	***	***
Trend	Index	100	76	85	93
Production of PUC	MT	***	***	***	***
Trend	Index	100	111	136	138
Production of non-PUC	MT	***	***	***	***
Trend	Index	100	129	132	150

60. The above data shows the following-

- (a) The domestic industry expanded the capacity first in the year 2005-06 by 43% and again in the year 2006-07 by another 15%.
- (b) The petitioner is in a position to utilize the plant for production of subject goods as also other goods. These other goods are outside the purview of PUC.
- (c) The production of the domestic industry as a whole (PUC as well as non-PUC products are manufactured from the same plant) has increased by around 46% during POI compared to base year 2004-05. As far as product under consideration, the production during POI has increased by 38% compared to base year 2004-05. On the contrary the production of non-PUC has increased by 50% during the same period. Moreover, the data on production also reveals that although the production of PUC remained at more or less at the same level during POI compared to the preceding year 2006-07, that of non-PUC increased by about 12% during the same period. There being a case of PUC and non-PUC products being manufactured in the same plant, lower increase in production of PUC can be attributed to an internal policy of the domestic industry to produce more of non-PUC products compared to PUC, the expansion being essentially for non-PUC products.
- (d) As regards capacity utilization, it is noted that though the capacity utilization during POI declined by 7% over the base year 2004-05, this fall in capacity utilization does not reflect a true picture as the installed capacity has been increased by 58% during POI compared to the same in the base year 2004-05. The Authority notes that during last three years i.e. since 2005-06, the capacity utilization of the Domestic Industry has continued to improve despite capacity additions. In fact when production of PUC is seen in the context of originally available capacity during 2004-05, (capacity expansion having been made for non-PUC only), the same has increased from 25% in 2004-05 to 35% during POI.

61. In view of the above, Authority holds that although there has been increase in imports over the injury investigation period, the domestic industry has been able to capture a reasonable portion of domestic market, in comparison to imports from subject country, and hold it through injury investigation thru POI, as also they have been able to sustain the competition with imported PUC and increase the production, commensurate to increasing demand and have essentially been concentrating on either export of PUC or increase capacity and production of non-PUC.

Sales, Inventories, etc. of Domestic Industry

62. Verified information shows as follows:

	UOM	2004-05	2005-06	2006-07	Oct 06 to Sep 07 (POI)
Opening Stock	MT	***	***	***	***
Trend	Index	100	16	17	54
Production	MT	***	***	***	***
Trend	Index	100	111	136	138
Total Sales	MT	***	***	***	***
Trends	Index	100	109	132	132

Domestic sales	MT	***	***	***	***
Trend	Index	100	106	109	107
Export sales	MT	***	***	***	***
Trends		100	118	183	190
Export sales as a % of production	%	***	***	***	***
Trend	Index	100	106	134	138
Total Demand	MT	***	***	***	***
Trend	Indexed	100	107	119	127
Closing Stock	MT	***	***	***	***
Trend	Index	100	103	348	315

63. The above data shows that the domestic sales of the domestic industry have increased consistently and the increase was about 7% during POI compared to base year 2004-05. There is, however a marginal decrease of 2% during POI compared to immediate preceding year 2006-07 and at the same time, Exports made by the Domestic Industry grew by 7% during POI compared to the immediate preceding period 2006-07. While demand grew by 27% over the injury investigation period, the sales of the domestic industry in the domestic market grew only by 7%. However it is noted that Export sales of the domestic industry have risen by 90% during POI over the base year 2004-05. Further the export sales, which comprised of only ***% of their production during base year 2004-05, went up to ***% of the total production during POI. The Authority therefore holds that the main thrust of the domestic industry has been to garner export market much more than selling the PUC in the domestic market. The Authority also notes that closing stocks have stayed at lower level during POI compared to opening stock which implies that the domestic industry has been able to sell more than what they produced during the same period.

Price Effect of the Dumped imports on the Domestic Industry

64. The impact on the prices of the domestic industry on account of the dumped imports from the subject country has been examined with reference to the price undercutting, price underselling, price suppression and price depression, if any. For the purpose of this analysis, the weighted average cost of production, adjusted weighted average Net Sales Realization (NSR) and the adjusted Non-injurious Price (NIP) of the domestic industry have been compared with the landed cost of imports from the subject country.

Price undercutting and underselling effects

65. The price undercutting and underselling details are given in the table below.

	Unit	POI (Oct 06-Sep 07)
Landed Price	Rs per MT	***
Adjusted Landed Price	Rs per MT	***
Non-Injurious Price	Rs per MT	***
Price Underselling	Rs per MT	***
Price underselling %		Negligible(Cannot be quantified from confidentiality perspective)

66. The Authority notes that price-underselling is insignificant when the comparison is made at the same level of trade by adding 20% on landed value (on account of inferior quality as allowed in the original as well as previous SSR investigation). Moreover the imports from China PR of the subject goods are of inferior quality and therefore the impact of price undercutting cannot be determined (As has been detailed in the previous SSR review Investigation as well).

Price suppression and depression effects of the dumped imports:

67. In order to determine whether imports of the subject goods were suppressing / depressing the prices of the domestic industry in the market, the Authority considered and examined the trends in cost of production, selling price and landed price of imports from subject country and other countries. The relevant information is given in the following table:

Particulars	Unit	2004-05	2005-06	2006-07	Oct 06-Sep 07(POI)
Cost of Sales	Rs./MT	***	***	***	***
Trend	Index	100	98	119	117
Selling Price	Rs./MT	***	***	***	***
Trend	Index	100	99	108	111
Landed Price	Rs./MT	***	***	***	***
Trend	Index	100	130	96	87

68. The above data shows that selling prices have always been higher than the cost of sales meaning thereby that domestic industry has been able to recover its costs apart from making a reasonable profit. Movements in the selling prices during the injury period shows that during POI, selling prices were higher by 11% over the base year as compared to increase in cost of sales by 17% during this period. During POI, while cost of sales came down by 2% over 2006-07, the selling prices went up by 3%. However there is seen a fall in landed price of imports from subject country by about 13% during POI compared to base year 2004-05, which can partially be attributed to reduction in the customs duty over the years. In spite of this fall in the landed price, the subject exporter has been able to hold its own and realize much higher price than the import price, and therefore holds that imports of PUC from subject Country do not pose a competition to the domestic industry.

Other Economic Parameters Relating to the Domestic Industry

69. Annexure II to the Rules requires that the determination of injury shall involve an object examination of the consequent impact of these imports on domestic producers of the subject goods. Further Annexure II (iv) of the Rules lays down as follows:

"The examination of the impact of the dumped imports on the domestic industry concerned, shall include an evaluation of all relevant economic factors and indices having a bearing on the state of the industry, including natural and potential decline in sales, profits, output market share, productivity, return on investments or utilization of capacity; factors affecting domestic prices, the magnitude of the margin of dumping; actual and potential negative effects on cash flow inventories, employment, wages, growth, ability to raise capital investments."

Examination of other Injury Parameters

70. Other economic parameters, which could indicate existence of injury to the domestic industry, have been analyzed here as follows:

- a. **Productivity:** The productivity during the period of investigation has increased during POI compared to the base year 2004-05.

	Unit	2004-05	2005-06	2006-07	Oct 06 to Sep 07
Production	MT	***	***	***	***
Productivity per day	MT	***	***	***	***
Trend	Index	100	111	136	138
Employees	Nos.	***	***	***	***
Production / Employee	MT	***	***	***	***
Trend	Index	100	105	157	174

- b. **Employment and Wages:** The number of employees as well as wages paid to them has declined over the injury investigation period. However decline in wages is far lower compared to decline in no. of employees.

	Unit	2004-05	2005-06	2006-07	Oct 06 to Sep 07
Employees	Nos.	***	***	***	***
Trend	Index	100	106	87	79
Wages Total	Rs. Lacks	***	***	***	***
Trend	Index	100	107	106	97

- c. **Profitability, Return on Investment and Cash Flow:** The profitability, return on investment as well as cash profit has declined over the injury investigation period, although there has been a substantial increase in these parameters during POI compared to immediate preceding year 2006-07 in spite of huge surge in imports from China PR during the same period and in spite of lower landed price during POI compared to Immediate preceding year.

Profit, Cash Flow and Return on Capital Employed.

71. Verified information shows as follows:

Particulars	Unit	2004-05	2005-06	2006-07	Oct 06 to Sep 07(POI)
Cost of Sales	Rs./MT	***	***	***	***
Trend	Index	100	98	119	117
Selling Price	Rs./MT	***	***	***	***
Trend	Index	100	99	108	111

Profit/Loss	Rs. MT	***	***	***	***
Trend	Index	100	105	56	83
Total Profit/Loss on domestic sales	Rs. Lacks	***	***	***	***
Trend	Index	100	111	61	89
Cash Profit/Loss	Rs. Lacks	***	***	***	***
Trend	Index	100	116	75	93
PBIT	Rs. Lacks	***	***	***	***
Trend	Index	100	123	93	109
Capital Employed	Rs. Lacks	***	***	***	***
(PUC)(Domestic)					
Trend	Index	100	161	146	128
Return on Capital Employed	%	***	***	***	***
Trend	Index	100	77	63	85

72. The above data shows that per unit profit of the domestic industry declined over the injury investigation period, mainly due to higher incidence of depreciation, interest cost and wages, although the same has increased during POI in comparison to immediate preceding year 2006-07 considerably. It is also noted that the selling prices have increased considerably over the same period. It is also noted that per unit selling price has come down marginally during 2005-06 compared to 2004-05 although the decrease is not proportionate to reduction in cost of sales. The unit selling price has increased substantially thereafter during 2006-07 and POI. In fact during POI the unit selling price realisation has gone up compared to 2006-07 in spite of reduction in the cost of sales during the same period. Total profit on domestic sales has come down during POI compared to 2004-05. However when seen in the context of comparison with immediate preceding period 2006-07, the same have gone up considerably. Cash profits have come down from base year 2004-05 to 2006-07 but have recovered considerably during POI. It is also noted that PBIT has increased by 9% during POI compared to base injury period 2004-05. Similarly Capital employed has gone up by 28% during POI compared to base injury period 2004-05. However return on capital employed has made a huge upward-surge during POI compared to immediate preceding year 2006-07, although there is a decrease when compared to base year 2004-05, mainly due to higher incidence of depreciation, interest cost and wages. It is thus seen that evidence about existence of injury is not unequivocal as the physical and financial indicators of performance of the domestic industry do not point in the same direction. The physical parameters such as volume of production and sales of domestic industry show substantial growth. In specific terms, during 2004-05 to POI, production of PUC increased by 38% whereas total sales also increased by 32% and domestic sales itself by 7%. The substantial sale in export market of course is on account of the substantial export market and perhaps the efforts of DI to concentrate on export sales as against domestic sales. On the contrary, financially, the DI registered a fall in profit in 2006-07 compared to 2004-05 when only *** MT of PUC was reported from subject country. However during POI when the imports increased by around 77% to *** MT compared to 2006-07, the profitability of domestic industry increased considerably, thus indicating that there is no linkage between imports and profitability.

73. In view of the same, the Authority concludes that the decline in profits during the period of investigation is not due to the presence of dumped imports from the subject country.

Likelihood of Continuation of Dumping and Injury

74. The domestic industry in their submissions has pleaded that in a sunset review the Authority is required to examine the likelihood of continuation or recurrence of dumping and injury to arrive at a decision to continue or vary or remove the duty so as to offset dumping.

75. The domestic industry has *inter alia* submitted:

- i. That the exporters from subject country are dumping the material in the Indian market.
- ii. That the injury to the domestic industry is still continuing and in case the duties are discontinued the injury to the domestic industry would recur or intensify.
- iii. That the landed price of imports from subject country is much lower than the price domestic industry ought to get.
- iv. That the volume of imports from China has increased in spite of the anti-dumping duty in existence.
- v. That the producers are holding significant surplus capacities.

Examination By the Authority

76. Authority takes note of the above submissions of the domestic industry and notes that although dumping from the subject country is established, the injury to the domestic industry because of these imports from China PR has not been established. Authority notes that domestic industry has been realizing a higher price on domestic sales than they ought to have realized and they have been able to sell almost every bit of the produced PUC during POI. Further their profit margins have increased compared to immediate preceding year 2006-07 in spite of substantial increase in import of dumped PUC. Their export sales have increased substantially during the injury period through POI which is indicative of the fact that they are more concentrated on export sales in comparison to domestic sales. That apart, the adjusted landed value is almost the same as NIP at the same level of trade. To that extent, there being insignificant underselling, injury to the domestic industry is not substantiated.

77. On the issue of Blocking of Chinese imports by USA, as alleged by the domestic industry, the Authority notes that the domestic industry has relied upon the petition filed before US Department of Commerce as also findings from the US Authorities. However one thing that has been ignored by the domestic industry is the scope of PUC in those investigations. US investigations against China PR refer to small size Graphite Electrodes and do not reflect either the specific sizes or the variants of these electrodes under investigation and whether the same are comparable to PUC in the present investigation. On the issue of availability of surplus capacities in the subject countries, the DI has not quantified the same and therefore Authority is not in a position to accept this statement on its mere face value. Authority has also not been able to access any data source which would give credence to this claim of the domestic industry. The Authority, however,

takes note of the submissions of domestic industry and concludes that mere existence of excess, capacities, even if available in the subject country, can not necessarily be construed as their intention to offload the same into India at dumped prices when substantial quantities of Chinese origin PUC are already finding their way into India at un-dumped prices, and some quantities at dumped prices without causing injury to the domestic industry.

Overall assessment of Injury

Causal Link

Submissions made by the Domestic Industry

78. Domestic Industry has submitted that it is a settled position of law that causal link analysis is not required to be done in sunset reviews. In this connection, they have relied upon the following excerpts from the Appellate Body decision in the case of Oil Country Tubular Goods from Mexico (WT/DS282/AB/R dated 2 November 2005):

"118. We therefore agree with Mexico that this fundamental principle is expressed in Article VI of the GATT 1994 and in various provisions of the Anti-Dumping Agreement. The United States does not question this principle per se. However, this does not mean that a causal link between dumping and injury is required to be established anew in a "review" conducted under Article 11.3 of the Anti-Dumping Agreement. This is because the "review" contemplated in Article 11.3 is a "distinct" process with a "different" purpose from the original investigation."

"119. The Appellate Body has underlined that "[t]he nature of the determination to be made in a sunset review differs in certain essential respects from the nature of the determination to be made in an original investigation", and that "[t]he disciplines applicable to original investigations cannot, therefore, be automatically imported into review processes."

"X. Findings and Conclusions"

219. for the reasons set forth in this Report, the Appellate Body:

(a) in relation to causation:

(i) finds that there is no requirement to establish the existence of a causal link between likely dumping and likely injury, as a matter of legal obligation, in a sunset review determination under Article 11.3 of the Anti-Dumping Agreement and that, therefore, the USITC was not required to demonstrate such a link in making its likelihood-of-injury determination in the sunset review at issue in this dispute;"

79. The Domestic Industry further submits that there are good technical and logical reasons for not applying the requirement of causal link in a sunset review case. Extension of anti-dumping duties is envisaged even if there are no imports during the review investigation period. Further, the test for extension of the period of duties under Section 9A (5) is only to examine whether the cessation of such duty is likely to lead to continuation or recurrence of dumping and injury.

Examination by the Authority

80. The Authority has examined the submissions of the Domestic Industry with regard to the significance of causal link in a sunset review investigation. It is important to note that the Authority is required to examine the need for continuation of duties; even if there have been no imports during the review investigation period. This requirement is very clear from Section 9A (5) itself. Thus, even though it is not mandatory for the Authority to apply the criterion of causal link in sunset reviews investigations; there is no bar either for the Authority to examine this aspect, particularly when (a) the AD duty has been in place for more than 10 years, (b) substantial quantities of PUC are finding their way into Indian market, (c) imports during the period have increased and at the same time the performance of the domestic industry has improved, (d) actual reliable Dumping Margins can be established, as is the case here. It is also noted that the WTO in its Appellate Body reports has not said that causal link should not be examined in a sunset review case. On the contrary, it has said that it might be highly pertinent to examine causal link in a sunset review case. The Authority considers it appropriate to examine how the imports have impacted the performance of the domestic industry. The Authority therefore proceeds to examine the causal link aspect, which is further discussed in the following paragraphs.

Volume and Prices from Other Countries:

81. The Authority holds that as per available data and as indicated in the paragraphs herein before, no imports of PUC is reported during POI from countries other than the subject country.

Contraction in Demand and / or Change in Pattern of Consumption:

82. The Authority holds that there is no contraction of demand over the injury investigation period. The demand of the subject goods has increased by 27% in the period of investigation as compared to the base year.

Trade Restrictive Practices of and Competition between the Foreign and Domestic producers:

83. The Authority notes that import of the subject goods is not restricted in any manner and the same are freely importable in the country. The Domestic Industry competes among one another and at the same time competes with the adjusted landed prices of the subject goods. There is, however,

nothing on record to substantiate that price of the Domestic Industry is determined by the landed price of subject goods which is substantiated by the fact that the actual landed price shows a downward trend from the base year 2004-05 thru POI (except during 2005-06) whereas the actual NSR of the domestic industry has, on the contrary, gone up consistently from the base year to POI.

Development of Technology and Export Performance:

84. None of the interested parties has raised any issue with regard to technology as being the cause of injury to the Domestic Industry. As regards exports by the Domestic Industry, the Designated Authority has already segregated the export sales related data for the purpose of this analysis and notes that the Domestic Industry has been exporting a substantial volume of their production and these export sales have gone up from ***% of their production during base year 2004-05 to ***% during POI. Moreover, the Authority notes that their export sales have increased by a whopping 90% during POI compared to the base year 2004-05, which inter-alia means that their effort is not so much intended at domestic sales as is on export sales.

Comments to The Disclosure Statement

85. Comments have been received to the disclosure statement on behalf of the domestic industry as well as the responding exporter.

86. So far as the domestic industry is concerned, their submissions can be summed up as under:

a. Authority has made adjustment of fresh investments. The production of product under consideration and non-PUC and the increase in production should be proportionate. The production of product under consideration increased by 38% over the period of investigation. The common cost of product under consideration and non-puc should be apportioned and revise the period of investigation.

b. While determining non-injurious price the credit adjustment for by products sales has not taken on the same basis. Computational error in by product sales, which is now corrected, and authority should take the verified figure for determining non-injurious price.

c. Revised disclosure statement proposes to make adjustment of 20% on normal value on all exports from China for computation of dumping margin. No exporter has claimed individual normal value. Also the methodology for quantification is not disclosed for calculation. Para 7 of Annex.1 of ads rules referred.

d. Non-Confidential Version of three users of the Chinese goods has not provided.

- e. The exporter is to be declared as non-cooperative as they have not provided information relating to exports to third countries. Supreme Court ruling in the Haldor Topso case cited.
- f. Product size defined in USA findings is upto 16”(400mm). Majority (about 71%) of the sales in domestic market is 8-16”. Dumped import from China to USA will be diverted to India in case of Add is revoked.
- g. There is surplus capacity with Chinese producers and since USA blocked the import, the dumping in India will be increased in case of revocation of anti dumping duties.
- h. The determination of likelihood analysis is incorrect. The likelihood analysis is incomplete and misleading.
- i. 56% of the total sales of the domestic industry is in domestic market. It is incorrect that the focus is on export market.
- j. The conclusion is misconceived and imaginary – the capacity expansion only for non-puc products.
- k. Inventories of the domestic industry has increased by over 300%
- l. Underselling and price undercutting is made after adjustment of 20% to non-injurious price and Net Sales Realization.
- m. Price of the domestic industry suppressed
- n. No desirable returns due to pressure from Chinese dumped imports.
- o. Credit adjustment for by-product sales has not been taken into account.
- p. Return on investment, profitability, cash flow, market share etc come down during the period of investigation.
- q. The authorities letter dt. July 2, 08 has been replied vide letter 14th July 08. With regard to confidentiality only costing and pricing information only kept confidential. Exporter has not given volume related/summary of information.

Examination By the Authority

- a. In their own admission before the visiting verification team to one of the constituent DI, the non-PUC UHP are more efficient and are much more in demand. It was also admitted that all the new furnaces are set up in steel plants to accommodate UHP variant for better productivity and PUC i.e NPG and HPG are essentially used by old plants which cannot accommodate more efficient UHP, non-PUC variant. To that extent expansion has

essentially been for non-PUC UHP variant, and is not at all relevant to PUC. Further, this is also borne by the actual figures of capacity vis-a-vis production. When the capacity of the plants was *** MT the production of PUC stood at *** where as when the capacity was increased to *** MT the production of PUC (*** MT) continued to be much lower than the actual capacity originally available. To that extent, expansion for the purposes of PUC was not required at all. On the contrary non-PUC production stood at *** MT during POI compared to the original installed capacity of *** MT and therefore the Authority concludes that additional installed capacity has been necessitated for production of Non-PUC. Even going by the individual details provided by each individual constituent of DI, the perusal of project report of M/s HEG Ltd., capacity and production of the PUC and non-PUC, it has become clear that the capital asset expenditure incurred on account of capacity expansion related to Ultra High Power Grade (UHP) i.e. non-PUC. Moreover, the production of the PUC in case of M/s GIL- Durgapur (on the enhanced capacity) has been decreased from 34% in 2004-05 to 12% in the POI, however, during the same period; the production of non-PUC has been increased from 66% to 88%. Therefore, the capital expenditure as well as consequent depreciation has not been taken into consideration while finalizing the NIP.

b. During verification it came to the fore that scrap / wastage / bi-product is generated from manufacture of PUC and for computation of NIP, the scrap/wastage/bi-product sale has been considered on the basis of Formats C-I and C-II duly certified by V. Mattha & Co., Chartered Accountants on 16.1.2009.

c-d. The submissions are a repeat of what was stated earlier and have adequately been addressed in the disclosure statement at appropriate places. The DI in its comments to disclosure statement has conveniently tried to ignore the fact that has been specifically mentioned that in a review the Authority is required to examine the aspect of continuation or recurrence and there is no statutory mandatory provision of looking into technical aspects a fresh, when the same have already been addressed and accepted by the DI in the original as well as first SSR. It has also ignored the fact, elaborated in the disclosure statement about admission by one of the constituent DI in its expansion project report about low quality of the Chinese Electrodes. About their allegation of their submissions not having been dealt with the revised disclosure statement, it is just a statement without substance as they have not highlighted which of their specific submissions have not been addressed in the disclosure statement. The domestic industry has not disputed that product under consideration in the present investigation is the same as defined in the original investigation. In fact, the domestic industry itself argued that product under consideration in the present investigation continues to be the same as defined in the original investigation. Further, the domestic industry has not disputed the product characteristics or any other parameters relating to the product between the original investigation and the current investigation has undergone any change. The sole objection of the domestic industry is with regard to 20%

price adjustment proposed to be allowed. It would be relevant to mention that the price adjustment on account of quality difference was allowed in the original investigations and was not opposed by the domestic industry. The claim in the original investigations was based on the arguments of the Chinese producers that even though domestic product and imported product are like article, the consumption of imported electrodes is higher as per compared to domestic electrodes. Authority also notes that this particular vital fact of the original investigation was not challenged by the domestic industry at the time of original investigations. The Authority had followed the very same approach in the first sunset review as well. The domestic industry had challenged the decision of the Designated Authority on this account before the CESTAT. CESTAT was, however, pleased to dismiss the appeal upholding the decision of the Designated Authority. It is thus evident that in the present investigations as well previous sunset review, barring dispute to the adjustment made, the domestic industry on its own, has provided no evidence whatsoever to establish that the price adjustment granted is no longer necessary. On the contrary, the domestic industry itself considers that the quality of Chinese electrodes is inferior (thus leading to higher consumption). At the same time, the Chinese responding producer has provided documentary evidence to support their claim in the previous sunset as also current sunset review. Thus, in a situation where the domestic industry has failed to establish that the alleged difference between imported and domestic product no longer continues and the Chinese producers have provided third party evidence to establish that the price adjustments continues to be valid, the Authority considers it appropriate to continue with the price adjustment earlier granted. On the issue of confidentiality granted to the evidence before the Authority about the quality aspect and consequent 20% adjustment, the Authority holds this document as confidential for which a non-confidential version is not possible and is not required to be divulged to the interested parties.

e. The Authority holds that since adjusted landed price of imports made during the investigation period were at almost the same level as non injurious price of the domestic industry at the same level of quality and since the same establishes no likelihood of injury to the domestic industry in case of revocation of anti dumping duties, non availability of the information on third countries exports of the exporters is not relevant. Further, as regards third country exports to be considered for likelihood analysis, this has adequately been addressed in the disclosure statement and the Authority has confirmed the adequacy of the data in terms of volume as well to be reliable to analyse the future behaviour of the imports into India and therefore there is no need to revisit this issue.

f-h. The argument itself establishes that the product under consideration in the two investigations is not identical. The domestic industry reiterates its arguments on likelihood based on anti dumping duties imposed on USA. Even when the product scope in the present

findings and US findings is not identical, in any case, given that the adjusted landed price of import from China is almost at the same level as non injurious price of the domestic industry at the same level of quality, the selling price of the domestic industry is higher than non injurious price and price underselling is insignificant, no likelihood of injury because of imposition of duty by USA is established.

- i. The Authority holds that export sales of the domestic industry have grown far more than domestic sales, which clearly establishes that the domestic industry is focusing on export market. Presuming the product involved in the present case and US case is overlapping, imposition of anti dumping duties on exports from China might provide additional export market opportunities to the domestic industry.
- j. Same as at "a" above.
- k. While appreciating that the inventory has increased, given that selling price of the domestic industry is higher than non-injurious price, it is evident that the domestic industry has option of reducing its stock levels by resorting to price reduction up to the level of non-injurious price. It, however, appears that the increase in inventory is more on account of export volumes.
- l. The 20% price adjustment made for the purpose of price underselling and consequent injury margin is consistent with the rules and the previous two determinations, the domestic industry itself has considered that quality of Chinese product is poor, thus leading to higher consumption of Chinese product. This factor is therefore to be accounted for while determining the injury margin by adding this 20% to the landed price of imports for comparison with NIP, as has been followed in the previous SSR investigation. Further the impact of price undercutting cannot be determined because imports of subject goods from China PR are of inferior quality and this is in consistence with the procedure followed and recorded in the Final Findings of Previous SSR investigation.
- m. Price suppression exists in a situation where the increase in the selling price of domestic industry is lower than the increase in the cost of production. However, the fact is that the domestic industry realizing more than the non-injurious price clearly establishes that the domestic industry prices are not suppressed.
- n-q. The argument is factually incorrect. It is found that the domestic industry has already realized a price higher than the non-injurious price. Regarding credit adjustment on bi-product sale, UHP- a non-PUC product is produced from imported calcined coke which costs more than double the domestically procured coke used for manufacture of PUC and rejections of UHP are sold as HPG i.e. PUC. Therefore the generation of bi-products is essentially from PUC and not from non-PUC. Further the scrap/wastage/bi-product sale has been considered on the basis of Formats C-I and C-II duly certified by V. Mattha & Co., Chartered Accountants on 16.1.2009. Further while it is true that the return on investment,

cash flow, profits and market share have declined during the current period, compared to base injury period, the fact that the non-injurious price determined is higher than selling prices of the domestic industry at the same level of quality clearly establishes that such decline is not material. As regards market share, the domestic industry had an option of selling at a lower price and maintaining its market share given that landed price of imports was more or less the same as non-injurious price and selling price of the domestic industry was much higher than NIP.

FINAL FINDINGS:

87. Having regard to the contentions raised, information provided and submissions made by the interested parties including those furnished in the form of comments to the disclosure statement, and having considered all these submissions and facts available before the Authority through the submission of interested parties or otherwise as recorded in the above findings or those which may not have been recorded in the above findings but have been adequately addressed and on the basis of the above analysis of the state of current and likely dumping and injury and likelihood of continuation or recurrence of dumping and injury, the Authority concludes that:

- i) The subject goods are entering the Indian market at dumped prices and dumping margins of the subject goods imported from China PR are above de-minimis.
- ii) The subject goods entering the Indian market, though at dumped prices do not cause any injury to the domestic industry and domestic industry has been selling the PUC in the domestic market at prices higher than the NIP.
- iii) The subject goods, in the event of revocation of ADD, are likely to enter the Indian market at the prevailing dumped prices and are therefore unlikely to cause injury to the domestic industry.

88. In view of the Above the Designated Authority considers it appropriate to recommend discontinuation of Anti-Dumping Duty already in place in respect of 'Normal Power Grade (NPG) Graphite Electrodes, including its variant High Power Grade (HPG) Electrodes of diameters from 8" up to and including 24" and classified under Customs sub-heading no. 85.45 of Chapter 85 of the Customs Tariff Act, 1975 and ITC (HS) Codes 85451901 and 85451101. notified vide Notification No. 101/2003- Customs dated 7th July, 2003 and subsequently extended up to 6th July 2009 vide notification No.81/2008 dated 27th June 2008 in terms of Section 9 (A) (5) of the Act.

89. An appeal against the orders of the Central Government that may arise out of this recommendation shall lie before the Customs, Excise and Service tax Appellate Tribunal in accordance with the relevant provisions of the Act.

R. GOPALAN, Designated Authority